पद्मावतीखण्ड

अर्थात्

दिल्ली के राजा पृथ्वी राज ने अत्यन्त युद्धकर

रानी पद्मावती के साथ

विवाह किया

और

आल्हखण्ड

जिसमें

आल्हा ऊदल का सङ्ग्राम पृथ्वी राज से

अति उत्तम छन्द प्रबन्ध में रचित है

श्रीयुत मुन्शी नवलकिशोर अवध समाचार

सम्पादक ने अति प्रबन्ध से शुद्ध कराय

स्थान लखनऊ

स्वकीय यन्त्रालय में छपवाया

अप्रैल सन् १८७५ ई

श्रीगणेशायनमः

॥ अथ पद्मावती खंड लिख्यते ॥ दोहा ॥

पूरब दिसि गढ़ गढ़नि पति समदि सिखरि गढ़ दुंग।
बिजै पाल राजा रहत जद्दव कुलहि अभंग ॥१॥ हय
बिलुंड जांके बहुत पालशाहि जिमि चाल ॥ प्रबल
भूप सेवत रहत करत कवन सो हाल ॥ छप्पै ॥
घन निसान बहु साय नाद सुर बजत पंच दिन ॥
दस हजार हय चढ़त हेम नग जटित साज तिन।
गज अनेक सत पांच प्रबल सेना तहँ लखिवइ ॥
इक नायक जहँ दलन चलन सामंत सुर किवइ ॥
दस पुत्र एक दारा बिमल दया धरम चौकस सुघर ॥
भंडार लक्ष मालिक अधिक पद्म सेन कुंमर सुघर
दोहा ॥ पद्मसेन कुंमर सुघर ता घर नारि सुजान ॥
ता उर इक पुत्री प्रगट मनहु कला शशिभान ॥२॥
छप्पै ॥ मनहु कला शशिभानु कला की मनो कला
भय ॥ ताल बैस चित चतुर बिमल सुंदर सुचाल
गय ॥ बदन कमल कल कलित नैन खंजन मृग
लुट्टिव ॥ अलक उरग दुति मिलित मुनिन लव मुख
पर छुट्टिव ॥ कवि चंद देह हाटक हटक बिधि बि-
चारि सांचें सचिय ॥ पद्मि निय रूप पद्मा वती मनो काम
कामिनि रचिय ॥ दोहा ॥ मनहु काम कामिनि रचि
य सची रूप की रासि ॥ पशु पक्षी सब मोहनी सुर नर
मुनि हिय पासि ॥ सामुद्रिक लक्षण सकल चौं स-
ठि कला सुजान ॥ षो डस रति में अति निपुन ऋतु
बसंत परि मान ॥ सखिनु संग खेलति फिर ति डो-

लति बाग निवास ॥ बरस बैस पट ऋतु पलटि ज
नम बसंत प्रकास ॥ छप्पै ॥ दिवस एक चहुं आन
कीर आयो तिहि देसह ॥ सरस बुद्धि गुण बलित
बहुत विद्या इति वेसह ॥ नगर मध्य इक बाग सघ
न सुंदर अवास जहं ॥ कोकिल कें कीकल कपोत
कोइल बोलति तहं ॥ तिहि बाग जाय बैठ्यो चतुर
जिहि कुमारि खेलति अछन ॥ सह चरित्र सहित
हिय हेरि लिय देखत भयो हुलास मन ॥ १ ॥ मन
अति भयो हुलास विगसि जनु कोटि कमल वन ॥
अरुण चोंच अति अमल पांख सुंदर सुढार तन ॥
इह चाहत चित चकित कहति अब पकरि कोरि कर
चुगन लोभ दै पकरि कुमरि जब गहिव अपु कर ॥
हरषित अति हि सुबाल वह हुलसि ले जु भीतर ग
इय ॥ पिंजर अनूप पन्नग जटित तिहीं महल र-
क्खत भइय ॥ दोहा ॥ तिहीं महल रक्खत भइय ग
इय खेल सब भूल ॥ चित चहुं औंया कीर तें राम प-
ढावत इल ॥ कीर कुंवरि तन निरखि कै नख सिख
भेष अनूप ॥ करता करी बनाय कें इह पद्मिनी सरू
प ॥ हरषि कीर मन हुलसि कै पायो सुख जिहि ठाम ॥
दिय असीस पृथी राज वर मिलो पद्मिनी वाम ॥ ४ ॥
छप्पै ॥ मुख सरोज पग पान अंग हाटक समान इद
॥ कमल गंधवय संध हंस गति चलति मंद मंदाखे
त बस्त्र सों हेत अंग नख सिख सोभित अस ॥
अभै भ्रमर भूले सु वास मकरंद वास रस ॥ नैंन
नि बिलोकि इह रूप अस दिय असीस अज्ञान कर

उमया प्रसाद हरि हेरि हिय सु तेहि मिलिय पृ-
थी राज बर ॥ अरिल्ल ॥ पुच्छन्ति बैंन सुवालं ॥ उच्च-
रि कीर संचि संचालं ॥ कौन देश पृथी राज नरेसं ।
कौन गोत को कुल उपदेसं ॥ कौन राज राजा रज
पूतं ॥ को कल पूर कौन को पूतं ॥ कैसो बल कैसी-
संग सेना ॥ को जीत्यौ राजा सु कहेना ॥ तब उच्चरि
कीर सु बैनं ॥ हिंद मान दिल्ली गढ़ ऐनं ॥ मनहुं इंद्र
अवतार ॥ पृथी राज चहुं आन सुभार ॥ छंद पद्धरी ॥
पघा बली कवरि सुनिय सुगात ॥ द्विज कथा कहत
सुनि सुनि सुवात ॥ हिंद मान थान उत्तम सुदेस ॥
जहां उठति दंग दिल्ली असेस ॥ संभरि नरिंद चहुं
आन थान ॥ पृथी राज राज राजे सुभान ॥ बैसं वरी
स षोडस नरिंद ॥ अज्जान बाहु जिमि लोक इंद ॥
सामंत सूर सबही अपार ॥ भुज्जान भीम जिम सा
रधार ॥ जिन पकरि साह साह्य बदीन ॥ तिहि बेर
पकरि तिहि बेर कीन ॥ सिंघिनि सुनाय गुन चढ़ि
जै जीर ॥ चूकैन शब्द भेदंत तीर ॥ बलि बेन करन
जिमि दान पान ॥ सत्तहि सलीन हरि चंद समान ॥ स-
हस्र सुधा विक्रम सुवीर ॥ दानव समन अवतार
धीर ॥ इह सुनौं राज की कथा रूप ॥ कंदर्प जिमि
अवतार भूप ॥ दोहा ॥ काम देव अवतार हुव सुनि
सोमे सुर नंद ॥ सहस किरन सुख कल मलहिं ऋ
तु बसंत बर चंद ॥ सुक समीप मन कुंवरि को लग्यो ।
बचन सों हेत ॥ अति विचित्र पंडित सुआ कथ्यत
कथा अनेक ॥ बैसं वरि सत त्रास करि आगिम कि

यो बसंत ॥ मात पिता चिंता भई सोधि जुगति को कं
त ॥ छपै ॥ सोधि जुगति को कंत चित्तु जब कियो-
चहूं दिस ॥ लियो विप्र गुरु बोलि कही समझाइ बात
अस ॥ नर नरिंद गढ़पति बड़े गढ़ दंग असेसह ॥
सील वंत कुल सुद्ध देहु कन्या सुनरेसह ॥ तवच-
लिय देव द्विज लगुन धरि सगुन अनेक विचारि मन।
आनंद उछाह सु मंद मंद रवै बजत आनंद घन ॥ दो
हा ॥ फिरयो देस देसनि भिसुर गयो कमाऊं कूल ॥
तहां एक राजा रहत धरम जीत रन हूल ॥ सवाला
ख सेना सवल गढ़ उतंग बकुदंग ॥ राजत राज कमा
ऊं मनि हय गय भंग अभंग ॥ जहां जाय दीनी लग-
न सुंदर बर सुकुमार ॥ रीझि मिश्र मन हुलसि कै-
आनंद मानि अपार ॥ छंद भुजंगी ॥ बिहंसि बार-
लगुन लीनी नरिंदा ॥ जहां बाजिये द्वार आनंद दुंदा ॥
हयं पांच पीलं उभै सोमतंगं ॥ सुहर पांच से माल
मोती उतंगं ॥ बड़े थान खासेन के बाफता के ॥ दुदा
मी सरस डोरिया नाम जाके ॥ ऐसे साज आये लगुन
साथ भारी ॥ लये धर्म जीते सबै सो संभारी ॥ दिये दा
न बहुते बड़ो हर्ष कीयो ॥ भई व्याह त्यारी बड़ो काम
लीयो ॥ बिदा बिप्र कीसो सबेरे कराई ॥ दई द्रब्य एके
हजारं सुहाई ॥ दई एक घोरी चरचि चंचलासी ॥ स
खि सुंदरी चंद्र मानो कलासी ॥ दिये दान कपड़ानके
पांच थांके ॥ किये सो बिदा बिप्र संमर्पि माके ॥ च
ले सुकव पाई बिदा बिप्र हैके ॥ सबै साज को साहीसा
नु लैके ॥ गये धाम अपने पदम सेन पैकूं ॥ कही जा

सेना तहां अंठह ॥ चामुंड राय दिल्ली धरह गढ़ पति-
कार गढ भार दिय ॥ अलगार रैनि पृथी राज जब पू-
रब दिसि पर गवन किय ॥ दोहा ॥ आठ सहस अस
वार सजि परस्थान नृप कीन ॥ पूरब दिसि पर गवन
किय सुआ बचन सुनि लीन ॥ जद्दिन सिखरि
बरात गई तद्दिन गये पृथी राज ॥ ताही दिन पति
साह पर भई सु आनि अवाज ॥ छपै ॥ भई सु आ
न अवाज चढ़िब साहा वदी नगजि ॥ खुरासान सु
लतान कास काबि लिय मीर सज्जि ॥ जंग जुरिब ज़ा
लिम हु जुझार भुन सार भार हुअ ॥ धर धकवर सेस
घन गगन रबिलो पर ने भुअ ॥ ललटि व मवाह जर
सिंधु सर रोक राह आगें रहिब ॥ तिहि घरिय राउ पृ-
थी राज वर चंद बचन इहि बिधि कहिब ॥ निकट न
गर जब गये बजाय वर बंधु उभय भय ॥ समद सिख
र गढ़ दुंग देखि बहु सोर घोर गय ॥ अगमानी अ
गमान कुमर बरनी वर साजत ॥ देखन कों गग धव
ल चढ़त छाजत छबि राजत ॥ बिलखति खवास
सुंदरि बदन मनहु सूर छाया जुरथ ॥ देखंत पंथ दि-
ल्ली दिसा लखिय फौज पृथी राज पथ ॥ छंद पद्धरी ॥
देखंति पंथ दिल्ली दिसान ॥ सुखभयो कीर आयो सु-
थान ॥ संदेश सुनत आनंद मन ॥ ऊमंगि मंग मग म-
त्थ नैन ॥ तन चिकटि चीर डार्यो उतार ॥ मंजनि
मयंक करि सन सिंगार ॥ भूषन मंगाय नख सिख
अनूप ॥ सज्जिय सैनि सब काल्न भूप ॥ सोवरण था-
र मुतियन भराय ॥ कल मल करत दीपक जराय ॥

संग सखिय लई सुंदर अपार ॥ चलि गवरि पूजि
वे कों करार ॥ दासी अनेक संग सहस बाल ॥ प
द्मिनिय चाल साज ति मराल ॥ गई शिव के थान
मन मन खुस्याल ॥ पृथी राज फौज लखि नैंन बाल
॥ पूजियो गवरि शंकर मनाइ ॥ दक्षिण मयंक
करि लगी पाइ ॥ कर जोरि कहति पद्मिनि सुभा-
इ । पृथी राज मोहि बर देहु माइ ॥ शिव पूजि निकसि
बाहिर सु बाल ॥ चितई सु नैंन चंचल बिशाल ॥
पृथी राज देखि पद्मिनी ओर ॥ भये चारि नैंन आनंद
बोर ॥ हय गय भगाय जहां बीच नारि ॥ डर नेंक ना-
हि मन में बिचारि ॥ चहुं ओर देखि पृथी राज राय ।
हय पकरि पीठि लीनी चढ़ाय ॥ ले चल्यो नारि दिल्ली
सुराय ॥ भई खबरि नगर बाहिर सुनाय ॥ पद्मा व-
ती सुद्दह लिये जाय ॥ सगरी बरात पाछे पराय ॥ बा
जी सु बंब हय गय पलानि ॥ दौरे जु सूर चढ़ि दसदि
सानि ॥ तुम लेहु लेहु मुख चंपि ओध ॥ सन्नाह सुन
त सब पहरि क्रोध ॥ आगें जुराज पृथी राज राज ॥ पा
छैं सुभाय सब सेनि साज ॥ पृथी राज संग रज पूत
सूर ॥ सब जात चाल सूधे सहूर ॥ पहुंचे जु जायला
ते तुरंग ॥ भुव मिलन भूप जुरि नेध जंग ॥ लही जुरा
ज पृथी राज बाग ॥ पलटे जु सूर धर धसक बाग ॥
कम्मान बान छूटत अपार ॥ लागंत तीर जि मिसा र
र धार ॥ सामंत सूर सब काल रूप ॥ गहि लोह छोह
बाहत अनूप ॥ लेकरि कृपान गहि देत कंध ॥ कटि
जात मुंड डोलत कबंध ॥ कहुं मारु मारु बुहु शब्द हो

सेना तहाँ अंठह ॥ चामुंड राय दिल्ली धरह गढ़ पतिकार गढ भार दिय ॥ अल गार रैनि पृथी राज जब पूरब दिसि पर गवन किय ॥ दोहा ॥ आठ सहस असवार सजि परस्थान नृप कीन ॥ पूरब दिसि पर गवन किय सुआ वचन सुनि लीन ॥ जहिन सिखरि बरात गई तहिन गये पृथी राज ॥ ताही दिन पति साह पर भई सु आनि अवाज ॥ छपै ॥ भई सु आन अवाज चढ़िब साहा वदी नगजि ॥ खुरा सान सुलतान कास काबि लिय मीर सजि ॥ जंग जुरि ब जालिम ह जुझार भुन सार भार हुअ ॥ घर धक वर सेंस घन गगन रबिलो परने भुअ ॥ उलटि व मवाह जर सिंधु सर रोक राह आगें रहिव ॥ तिहि घरिय राज पृथी राज वर चंद बचन इहि बिधि कहिव ॥ निकट नगर जब गये वजाय वर बंधु उभय भय ॥ समद सिखर गढ़ दुंग देवि बहु सोर घोर गय ॥ अगमानी आगमान कुमर बरनी वर साजत ॥ देखन को गग धवल चढ़त छाजत छवि राजत ॥ बिलखति अवास सुंदरि बदन मनहु सूर छाया जुरथ ॥ देखंत पंथ दिल्ली दिसा लखिय फौज पृथी राज पथ ॥ छंद पद्धरी ॥ देखंति पंथ दिल्ली दिसान ॥ सुख भयो कीर आयो सुथान ॥ संदेश सुनत आनंद मन ॥ ऊमंगि मंग मग मत्थ नैन ॥ तन चिकटि चीर डारो उतार ॥ मंजनि मयंक करि सन सिंगार ॥ भूषन मंगाय नख सिख अनूप ॥ सज्जिय सैंनि सब काल भूप ॥ सोवरण थार मुतियन भराय ॥ रूल मल करत दीपक जराय ॥

संग सखिय लई सुंदर अपार ॥ चलि गवरि पूजि वे कों करार ॥दासी अनेक संग सहस बाल॥ पद्मिनिय चाल साज ति मराल ॥ गई शिव के थान मन मन खुस्याल ॥ पृथी राज फोज लखि नैंन बाल ॥ पूजियो गवरि शंकर मनाइ ॥ दक्षिण मयंक करि लगी पाइ ॥ कर जोरि कहति पद्मिनि सुभाइ॥पृथी राज मोहि बर देहु माइ॥ शिव पूजि निकसि वाहिर सु बाल ॥ चितई सु नैंन चंचल बिशाल॥ पृथी राज देखि पद्मिनी ओर ॥भये चारि नैंन आनंद बोर ॥ हय गय भगाय जहां बीच नारि॥डर नेंक नाहि मन में बिचारि ॥ चहूं ओर देखि पृथी राज राय। हय पकरि पीठि लीनी चढ़ाय ॥ लै चल्यौ नारि दिल्ली सुराय ॥ भई खबरि नगर बाहिर सुनाय॥ पद्मा वती सुइह लिये जाय ॥ सगरी बसत पाछै पराय॥वाजी सु बंध हय गय पलानि ॥ दौरेजु सूर चढ़ि दसदिसानि ॥ तुम लेहु लेहु मुख चंपि जोध ॥सन्नाह सुनत सब पहरि क्रोध ॥ आगें जुराज पृथी राज राज॥पाछैं सुभाय सब सेनि साज ॥ पृथी राज संग रज पूत सूर॥ सब जात चाल सूधे सहूर॥ पहूंचे जुजायता ते तुरंग ॥ सब मिलन भूप जुरि नेध जंग॥ जहं जुराज पृथी राज वाग ॥ पलटे जु सूर धर धसक वाग॥ कम्मान वान छूटत अपार ॥ लागंत तीर जि मिमार धार ॥ सामंत सूर सब काल रूप ॥ गहि लोह कोह वाहत अनूप ॥लेकरि हापान गहि देत कंध॥ कटि जात मुंड डोलत कबंध॥ कहूं मारु मारु हुव शब्द है

त॥ कहुं पकरि पकरि मारत उदोत॥ कहुं बान चलत कहुं सांगि सेल॥ कहुं तीर वीर कहुं रेल पेल॥ कहुं रुंड मुंड धरनी परात॥ कहुं सूर बीर धीरं लरात॥ भई मारु मार करि दुहूं ओर॥ वाजंत लाग दम दम रुकोर॥ घम सान घान भयो वीर खेत॥ घन श्रोण बहत जहां रक्त रेत॥ मारे बरात के जोध जोदु॥ भये रुंड मुंड अति क्रोध होदु॥ दोहा॥ परे रहसि रण खेत अरि करि दिल्ली रुख सुक्ख॥ जीति भई पृथी राज की सकल सूर भयो सुक्ख॥ पद्मावति अंचले चल्यो हरषि राज पृथी राज॥ एते पर पति साह पर भई सुआनि अवाज॥ छप्पै॥ भई सुआनि अवाज चढ़ि वसाहाव दीन सुर॥ आजु गहं पृथी राज वोलियो वोल गजु धुर॥ क्रोध सूर पृथी राज उलट साहाव अनी सजि॥ वान तोप तरवारि तुपक अरु तीर वीर गजि॥ छैसगार चहुं आन के भरत भूप गज सेन छल॥ आयो हं कारि किल कारि कें खुरा सान सुल तान दल॥ छंद भुजंगी॥ खुरा सान सुल तान खंधार भीरं॥ वदकसी वली तैंग औ अचुर चीरं॥ रुहंगी फिरंगी तिलंगी मसानी॥ ठटी ठट्ठ वाली चढ़ी लेनि सानी॥ सुजारं चखी वीच गुज वक कलारी॥ हजारं हजारं हके जोध भारी॥ तिनें पाखरं पीठि हय जीन सालं॥ फिरंगी कती फास कत्ता सलालं॥ रुहेले बड़े ज्वान पट्ठा नवीरं॥ मुगल शेख सैयद भये क्रोध धीरं॥ जहां वाघवा खंवरी अरर मौरें॥ घमं सान संधान मं चौर ढौरें॥ हयं रंग रंगं अनेकं वखाने॥ अनेकं

कुली खूब खासा ममाने ॥ ऐराकी अरब्बी पंठ तेज ताजी ॥ तुरक्की कुही और कुम्मेत वाजी ॥ खुरासान के और मग सीखरेई ॥ सुमहती सुनहरी बदासीहरेई ॥ हरे हांसुला हंस सुरखा समाजें ॥ बने बोर अवरख सुकच्छी बिराजें ॥ ऐसे अश्व असवार अग्गोल गोलं ॥ भये भूप जेते ति ताता तमोलं ॥ दिसा वाम साही ममेरेज पायं ॥ दलं दूरि क्षारी हर्फ कोहकायं ॥ दस सहस असवार अगोल गोलं ॥ दिसा दाहिन्नी बीर तातार मोलं ॥ किये गोल ख्वानं सबै जो धधाये ॥ महा कोध ह्वै कें सु आयुध चलाये ॥ चहूं घेरि पृथी राज राजा सुराजं ॥ चहूं ओर घन घोर नीसान वाजं ॥ छपै ॥ बंजे घोर नीसान रण पर आनि चहूं दिशि ॥ सकल सूर सामंत रहे वल वंत मंत्र शिशि ॥ उठि राज पृथी राज वाग मनु वीर छदा नटि। कढ़ति तेग अति वेग वहति जहां श्रोण नदिय कटि। थकि रहिव सूर कौतुक गगन रगन मगन भयो सूरभर ॥ पचरंग रंग भयो खेत तस हूर वरंग निवरति वर ॥ दोहा ॥ हूर वर वर तिनि वरति वर भये जोध अति चित्त ॥ निसा सूर सम रुक पेरन को हारौं कोजित्त ॥ छपै ॥ नको हारो कोजित्त रहे रण वीर सूर नर ॥ घायल बहुत अचेत विहति जनु श्रोण मनहु सर ॥ कहुं कबंध कहुं कंध कहूं कर चरन अंत पुर। कहुं कग्रीव लगितेग कहुं सिर टुट्टि फुट्टि उर ॥ कहुं दंत सुंडि कहुं धर पर्यो कहूं अनेक ह्वै बर बहर ॥ खेत भयो पंचरंग जहां लाल लाल भई श्रोण धर ॥ दो-

हा॥ लाल लाल भई श्रोण धर जुरे मीर खाँ बेग॥ पृथी
राज संभरि धनी गह्यौ फेरि कर तेग॥ जुरी रारि फि
रि जुग दलनि छूटति तोप कमान॥ चालु आन फि
रि पलटि कें गह्यौ हाथ किर वान॥ छंद भुजंगी॥ ग-
ही तेग चहू आन हिंद मान राना॥ गजू जोध परि
कोपि के हरि समाना॥ करै मारु मारु लड़ै सूर सूरं।
करं लै कटारी लड़ैं चूर चूरं॥ किते लै बरच्छी हनें
हीक आई॥ किते खाय छाती गिरें भूर छाई॥ किते सू
र मुगदर फिरावैं लगावैं॥ किते फूटि मुंडं परे सो स-
भा मैं॥ किते वीर कम्मान लै खैंचि मारैं॥ किते सूर
वीरं सिरं तेग मारैं॥ लगे खंजरं खैंचि ही कंपि धा
वैं॥ मनों माठ जावक तलूसी चलावैं॥ लगे सीस
गुरजं सिरं चूर होई॥ परे टूट धरनी लगे जामें सोई
॥ किते खैंचि तेगां लगावें सँभारी॥ गिरैं मुंड धरनी स
चैं रुंड भारी॥ किते बान रानं चला मंत ज्ञानं॥ कि
ते तोप ओपैं चलामें असानं॥ किते एवा कों एक
पकरंत वीरं॥ फिरामैं पकरि खैंचि मारैं सुधीरं॥
किते कायरं खाय भै आइ भाजैं॥ लड़ैं सूर केते रनां
लाज लाजैं॥ उतै मीर खाँ बेग छरि बल पठानं॥ इतै
कन्ह चहूं आन सेना सुजानं॥ दुहूं ओर तें सूर पठान
धाये॥ गर्द तें गगन भान लोपं लुकाये॥ उतै आइ प-
ठान नें तीर मार्यो॥ इवै कन्ह खरगं सिरं जाय झा
र्यो॥ गिरौ मुंड पठान को रुंड मुंडं॥ पर्यो जाय ध-
रनी भयो वीर डुंडं॥ तवै साहि की फौज नें घात खा
यो॥ पृथी राज राजा रणं रोप आयो॥ लयो दौरि कें

न्हं भज्यौ ग्राह जातो ॥ चढ़्यौ सो गयंद गह्यो कंन्ह
हातो ॥ दई भागि पील गयो बैठि ह्वाहीं ॥ लियो सा
हि कंन्हं पकरि कै जहांहीं ॥ धर्यो पीठि हय की पक
रि साह लीयो ॥ पृथी राज के पासही आय दीयो ॥
पकरि साह कों कूंच कीयो जैवई ॥ परे खेत रजपूत
ए पान सेई ॥ पठानं परे सात हज्जार जंगं ॥ गये भाजि
के नेक अल्ला बदंगं ॥ दोहा ॥ भई जीति पृथीराज की
पकरि साह लियो संग ॥ दिल्ली पति मारग चले उ-
तरे घाट सुजंग ॥ वरि गोरी पद्मावती गहि गोरी सु
ल तान ॥ पृथी राज आयो दिली छत्र भुजा चहुं आ
न ॥ छपै ॥ बोलि बिप्र दिन सोधि लगन सुभ घरी
विचारिव ॥ हरे बास मंडप बनाय करि भामरि पा-
रिव ॥ ब्रह्म बेद उच्चरिय समद चौरी रचि पानह।
दुलहनि पदमिनि परम धरम दूलह चहुं आनह॥
बहु दान दीन जाचक जननि हय गय मनि मानि-
क सुरहि ॥ कबि चंद राज पृथी राज नें या प्रकार पद
मिनि बरहि ॥ दोहा॥ घायल परे अचेत रण अरु-
गुण संजवि जानि ॥ भये चेत जेते रहे दिल्लि हि च-
ले बिहान ॥ सो मग भूले परि गये बाट गहोवे माहि ॥ बि
कल बहुत मोहे सु नर कछू भई सुधि नाहि ॥ बाग
मध्य डेरा कियो राज बेर परि माल ॥ बरजे माली नें ज
हां पत्थर दियो कराल ॥ लग्यो आय रजपूत कें रिस
करि दीनी तेग ॥ गिर्यो सीस कटि रुकि धरा मर्यो सु-
माली वेग ॥ इति श्री सुकबि चंद बिर चिते श्री आल खंड
की सूचिका की भूमिका श्री पद्मावती खंड संपूर्णम ॥

श्रीगणेशायनमः

अथ आल खंड लिख्यते॥दोहा॥

कहत चंद गुण छंद पढ़ि क्रोध जुदंगलसोइ॥चहूं आ
न चंदेल कुल कंदल उप जन होइ॥ चहूं आन पूछ-
त वगदि कौंन बरस किनि मास॥कौन वार को तिथि
सुकवि करो बिचार निवास॥ग्यारह से चालीस इक-
जुद्ध अतुल भर होइ॥ कातिक सुदि बुध ओदसी सभ
र सामिला लोइ॥ आठ सहस अस वार सजि पर स्थान
नृप कीन॥ पूरब दिसि पर गवन किय सुआ बचन
सुनि लीन॥ छप्पै॥समद सिखरि गढ़ पर नि राज
दिल्ले य दिस चल्लिव॥ पात साहि सुनि खबरि धाय
बिच ढीरण मिल्लिव॥सकल सिमिटि सामंत चंदक
य मास बुद्धिवर॥ लहि वजुद्ध चहुं आन गहिव पृथीरा
ज अपुकर॥ रजपूत टूट पंचासरण लुट्टियवर सेना घ
निय॥पट्ठान साठि हज्जार पर जीति चल्यौ संभरि धनि
य॥१॥ चौपाई॥ राजा दिल्ली दिस चढ़ि आइव॥
चूकी राह वहीर सु भाइव॥ घाइल आयमहौंवे पान-
हा॥ओपरि माल सुनी इह कानह॥ छंदपद्धरी॥ बरनी बि
वाह चहुं आन रान॥जब सुने बचन निज कवि प्रमान॥
जहव गंभीर भनि यो वीर॥ कंमोद मनी जीती गहीर॥
रण कटिव पंच हय है हजार॥ जादौं कमोद मनि कटि दु
तार॥ सुलतान पकरि लिये नृपति आइ॥ रूस मत्त ताप
मिटि गये ताइ॥ जुग्गिनि पुरे सहि सरतिय पाइ॥ भू
ली वहीर महुवें सु आइ॥ घायल पचास रजपूत संग॥
दासी सु मंजरी अति अनंग॥ पंहुंचे सु महौंवे निकट-

आइ॥ बरसै सु मेघ बूंदन अघाइ॥ भये बिकल लो
ग घायल्ल उताप॥ नृप बाग मान चलि गये आप॥
जहां महल बने अनेक नेक॥ कलमलत जोध च
ढि चढ़ि वनेक॥ बरजियो आय मालीन सोइ॥ बो-
लियो बोल अति क्रोध होइ॥ गारी सुदीन उभ हारि
हत्थ॥ फेंको सु एकु पत्थर समत्थ॥ लाग्यो सु आ-
इ रजपूत सीस॥ धायो सुतेग कटि कटि बरीस॥ दी
नी सुधाय दुहुं हत्थ सोइ॥ उड़ि परयौ मत्थ धरनी सु
होइ॥ भई कुंक सुनी परिमाल राज॥ पठाइ जोध करि
हुकम साज॥ चंदेल बैस जाधरा सूर॥ चैरे सहस्सक
ल मले नूर॥ सो लखी जादव चढ़ि नरेस॥ सज्जि ग-
हर वार गोइल असेस॥ बरजियौ बना फल जुद्ध ताइ
कों करत बैर चंदेल राइ॥ पृथी राज लोग घायल ग
हीर॥ आई जुथान भाजी बहीर॥ बैरीजु आइ निज
स रनि लेहि॥ चलिये नाहि जौ दुक्ख देहि॥ चहुं आन
नाहि आपु कौ सत्र॥ तिन पैन राज बांधिये अत्र॥ प-
रिमाल उच्चरि वसुनों आल्ह॥ बिन चूक मारि माली
कराल॥ काल्हि कों आय पृथी राज सूर॥ मारि हैं औ
र काहू हजूर॥ बरजियो बना फल जुद्ध ताइं॥ हरिदा
स बघेलो बिरचि भाइ॥ आये सुसाजि दरबार सूर॥
रानी मल्हन बोली हजूर॥ तुम हनैं जाइ इन की समा
ज॥ कुलीन धर्म इन नाहि राज॥ ऊंचे अवास कज्जे
स सुद्ध॥ परिमाल तहां बैठे बिरुद्ध॥ मालिनि पुका-
रि कीनी नबीन॥ परिमाल फौज पर हुकम कीन॥
दोहा॥ पकरि बाग रजपूत सब क्रोध जानि परिमाल।

सिर लाग्यो आकास सों पाइ लगे पाताल ॥ छंद मोती दाम ॥ कियो परिमाल हुकम सु गाजि ॥ चले सब रावत जंग पै साजि ॥ चंदेल बनाफल मुख्य सु सूर ॥ वघल वगोइ रहैं रुक सूर ॥ चले भर जांघर मल्हन सोइ चले भर जद्दव मद्दव होइ ॥ चल्यौ हरि दास बघेल मिलिट्ठ ॥ सुचारिय सेनि उचारिय द्रुष्ट ॥ निवाजिय वैस चंदेल हुकम्म ॥ सनम्मुख सन्न सु अन्न भिरम्म ॥ सुनी रजपूत निवात कुढंग ॥ वधे बपु धाइ उताय उतंग ॥ कसैं रजपूत सुन्यो जब घेरु ॥ कही परिमाल करो जिनिबेरु ॥ सुनै चहुं आनन छाडि है दाउ ॥ करो मति जुद्ध चंदेलन राउ ॥ करो पृथी राज सुकाज विरुद्ध ॥ भजो तजि खेत जुरें जब जुद्ध ॥ दूती सुनि बैन कियेरत नैन ॥ कही नृप मारिहु मारिहु ऐन ॥ चली सब साजि चंदेलनि फौज ॥ मिले रजपूत सु सनमुख चौज ॥ भई जब दृष्टि सुदृष्टि करूरि ॥ मिले रजपूत सनम्मुख पूरि ॥ मिले मुख आइ सुछल्ल जुवान ॥ उल्हंन आस खिय क्रोध अमान ॥ लगे सर साइक छत्रिय आइ ॥ किधौं बिष आसिय पासिय पाइ ॥ लगें उर सांगि सकत्तिय सेल ॥ करैं इहुं बीर दुही मुख खेल ॥ कट छत घाइल खग्गनि खाइ ॥ खट छत सेल नि खेल नराइ ॥ कट छत गोटनि गिद्धिनि दौरि ॥ घट छत घाइल दाहि मरोरि ॥ नट छत नाचत घाइ मुछाल ॥ चट छत चौंप गही कर माल ॥ छट छत सूर धरा पर धाय ॥ जट छत जूथ नि जुग्गिनि चाय ॥ रुट छत एक नि कोग हि एक ॥ नट छत लुट्टके कुक्कुट मेक ॥ ठठ छत काइ ॥

रही सत जुद्ध॥ दुड क्कत डौरुव बाद्य विरुद्ध॥दुढ क्क
त ढु क्कतरु क्कल साद्द॥रुणं कत रुखं रवणं कत काद्द॥तता
थेई नाचत विक्रम मंकी थरत्थर कंपत काद्दर ऋंकि॥दर
बर दौरत बीर दुरत्त॥घरः घर चाल परंन करत्त॥नरन्नर रूर
सरूर र खाय॥परं पर फुट्टत जुट्टत काय॥फर फ्फर फौज त
रफ्फर मार॥बर ब्बर लाजत घाइल लार॥भर भ्भर भाजि
य फौज चंदेल॥मरम्मर सुढ्ढिय निढ्ढिय खेल॥ब
र ब्बर छेद्दिय घाइल धाइ॥लरै पृथी राज कि सैंमिसु
भाइ॥तबै उमरा वनि पाइल चाल॥भजी जब फौज
लखी पर माल॥हजार सुती निपरे धर मध्य॥भजी
परि माल की फौज असध्य॥कटेरण तीस क घाय
ल सोइ॥रुपे रण बीस कपंड वहोइ॥गह्यौ गुनमंज
रि पानि य धाइ॥उठावति प्यावति कीन कुचाय॥ल
गे सर सेल सुस ग्रह गात॥करे गुण मंजरि जुगिन्निबा
त॥भिवाज़िय बैस चंदेल निवान॥वली हरि दास नि
पाइ बितान॥तबै नृप ऊदलि लीये बुलाइ॥सुनी ज
ब कान पया दोइ धाइ॥पठाइर मल्हन देतर बारि॥
अहो इन घाइल लेहु जुमारि॥कहै जब ऊदलि बैन
प्रसिद्धि॥सुनो नृप ए रजपूत अवद्धि॥नहीं इह राजनि
को ध्रम ताप॥करौ इनि की अब चूक सुमाफ॥कही
परि माल दिवान नवांन॥हना इन फौज हजार सुतीन॥
हनौं इनि कौरन उद्दिलि लेइ॥तबै हग चैंन लहै सब
कोइ॥छप्पै॥जब ऊदलि सुख उ चरि सुनहु परि माल
अरज इक॥घाइल महा अवद्ध कही परमान व्यास ब
क॥होइ चौप चहुं आन रोस मित्तनि नहिं मारिय॥अ

तुल तेज पृथी राज सुनो विनती हित कारिय॥ चंदेल
चाहि मानहु अरज अरथ सँगि सोइ कि ज्जियै॥ नन
करहु बैर पृथी राज तें जग ऊपर जसु लिज्जियै॥ चौ
पाई॥ सुनि ऊदलि की बानी सोइ॥ महला मों पति-
बोले दोइ॥ हम दर वार आइ दुहुं मंडहि॥ रजपूत निप
रमा व्रत खंडहि॥ दोहा॥ महला मो पति की सुनी रि-
स पाई परि माल॥ दौरो ऊदा मारिये घायल घाइन-
हाल॥ छंद भुजंगी॥ सुनी बात चंदेल भोपत्ति भाषी।
भयो त्यार ऊदह के बेग साषी॥ गहें ते गह त्यंसमत्थं
सु धायो॥ लह्यो बाग खर्गं तमासो दिखायो॥ किये।
राज फुर मान डेरा. सिधारे॥ किये कूंच अगंगनिहंगं
निहारे॥ दिये पंच हजार सथ्थं चंदेलं॥ चले बाग का
जैसमा जै सुमेलं॥ निकदृंच चागं वचनं पुकारे। क
ढ़ै बेग रजपूत चहुं आन वारे॥ सुनी कनक बानी गु
मानी चलाये॥ अभंगं बली बाहु जंगं मिलाये॥ क-
हैं कुंदलं फेरि मन में बिचारी॥ इने क्यौं भजे जौ भ
यं रैबह मारी॥ करैं खंड खंडं भुसंडं भकारैं॥ हथ्थारं
धरो जोध ऊदलि हकारैं॥ भजो जाउ होतें बचैजीतिहा
री॥ कह्यो मानियें आपु सुंदर हमारो॥ तबै कनक बो
ल्यो मह्य रोस है कै॥ गिरैं सीस तौ ऊलटैं रुंड ह्वै कै॥
सुनो नंद जस राज के वार वारं॥ पृथी राज कौ लोंनख
र्गं उजारं॥ कही बोल बानी दलं बीच रूरे॥ दियें आय
सेलं किये बोल पूरे॥ चला वंत वीरं दुहुं ओर बांकें॥ प
रैं फूटि धरनी दुहूं सेनि घांके॥ चला वंत वीरं सदन्ती
कटारी॥ उरं फोरि ही कंपरे फूटि न्यारी॥ चलावंत गु-

रजैं सिरं चूर होई॥ लगैं जासु अंगे गिरैं भूमि सोई॥ चला वंत मुदगर हुकारं त सूरं॥ मकारं तभय खात कायर सु कूरं॥ चला वंत बीरं वरछी संभारी॥ परै फूटि न्यारी उरं लागि भारी॥ लगैं सांगि छाती भयं रंद भारे॥ मनो जाव कं माट कीने पनारे॥ लगैं ही कचमड़ा ढह्वै जाति पारं॥ अटारी मनों कामिनी खोलि द्वारं॥ वहैं तेग कंधं परैं सीस न्यारे॥ गिरैं टूटि तर बूज से मुंड भारे॥ पेट वाज के ते लडैं धोप दै कें॥ लगा में सुमत्थं फिरैं मुंड लैके॥ किते ज्वान मुदगर लिये हाथ सीलं॥ फिरा वै चला गै करैं खील खीलं॥ परे रुंड मुंड कहूं हाथ डुंडं॥ कहूं पाद पादे कहूं पील सुंडं॥ कहूं कंध बधं कहू रंद हीकं॥ कहूं हैवरं टूट धरनी धरीकं॥ भयो जुद्ध भारी वही श्रोण धारा॥ गये टूट घायल लडे सो अपारा॥ रह्यो एक सूरं कनक है अमानो॥ लियो सेल हत्थं हिये सोरि सानौ॥ कहै ऊदल सों बैन किलकार रोसं॥ बलं आपु मैं तो लडौ आय मोसं॥ सुनै बैन रन में पिल्यो उद्द भारो॥ गहैं तेग हत्थं समत्थं पचारो॥ इतै कनिक चहुं आन रजपूत धायो॥ वरं वीर ऊदल्लि पै कोपि आयो॥ गयो कोपि वीरं जहां उद्द घाती॥ दियो जाइ सेलं कियो साल छाती॥ दई तेग उद्दं भई पार मुंडं॥ गिर्यो सीस ओरं भयो वीर डुंडं॥ दियो सो नरं उद्द के एक नेजा॥ भयो पार पेटं अलेटं करेजा॥ इतै घर(ग्?)आयो धरनि चाहु आनं॥ उतै सूरछा उद्द खाई सुज्वानं॥ पचासौ परे घायलं खेत जानें॥ बरछी लगी तेगजम धर कमानें॥ छपै॥ कटे खेत चंदेल सूर इक सहस मा

मानइ ॥ गिरे बना फल साठि देखि ऊदलि पर मान(ह ॥ परि परि हार पचास परे चेरा सत दोइक ॥ गहर बार सत दोइ लोह अंतर सिर होइक ॥ रजपूत घेर घायल कनक परे बीस संज्ञा गइय ॥ कबि चंद कहैं परिमाल सों पृथी राज सों लगइय ॥ चौपाई ॥ परे बीस घायल रजपूतह ॥ सहस एक चंदेल सुदूतह ॥ गहर बार सत दोइ समानैं ॥ परे बना फल साठि अमानैं ॥ दोहा ॥ परे बीस घायल समर और कनक चहुं आन ॥ परि ऊदलि रन सूरछा कटि दासी बपु रान ॥ छप्पै ॥ कटि दासी बपु राम लखें परिमाल अवासह ॥ सहस एक चंदेल खेत रखा ही करि बासह ॥ लगिनई परिमाल चाइ पृथी राज तनवरि ॥ कहतु चंद बरदाय बीस घायल परि संभरि ॥ सन सध्य देस जीतह परिन घाइल सो महुवें गवन ॥ हुव बनि विरुद्ध चहुआन सैं भविष बात मैटे कवन ॥ चौपाई ॥ ऊदलि जगी मूरछा सूरह ॥ उठे चले चंदेल हजूरह ॥ जाइ कही हम घायल मारे ॥ वे सामी परि सवे संघारे ॥ दोहा ॥ कही जहजो तुम हुकुम कीनो हम कों राय ॥ सोई हमपूरो कियो मारे घाइल धाय ॥ बहुत भये चंदेल खुश सुनि ऊदलि के बैन ॥ वदला पास बुलाइ कें लगे हु नाम सुदेन ॥ हाथी दोइ तुरंग सत मोतिय माल सुदेस ॥ ऊदलि कों सिर पाव दे उठि करि आपु नरेस ॥ कियो हुकम चंदेल नृप मनो मेनि वहु सोइ ॥ देखन गढ़ सुकलिंजरा चलो आजु सब कोइ ॥ करो त्यार रणमास कों नवल नगर कों आजि ॥ आल्हा पास बुलाय कें हुकम(

कियौ नृप गाजि ॥ छंद पद्धरी ॥ बुल्लाइ राज आल्हन
लीन ॥ सब सूर बीर सज्जत प्रवीन ॥ हाथी निरत्थ सज्ज
हु सुवेग ॥ बल वान सूर वा धंत तेग ॥ डोला सुडोल च
ढुं डोल सज्जि ॥ रण मास काज डंबर सुगज्जि ॥ एद
ल प्रवीन अनेक भार ॥ रहु कला तोप बंदूक सार ॥ नौ
बत्ति नादनी सान बज्जि ॥ घन गरजि मेघ सुर पत्ति लज्जि ॥
कालिंज काज चढ़ि चलि नरेस ॥ आनंद होइ तहँ
करि प्रवेस ॥ बुल्लाय पुत्र नृप संग लीन ॥ ऊदलि बुलाइ
करि हुकम कीन ॥ तुम चलो नगर कालिंज पत्थ ॥ लै
सूर बीर सामंत सत्थ ॥ चढ़ि चलिय राज एकंत होय ॥
वहि परस मूह कर बल सजोय ॥ सब चले साजि पर
माल संग ॥ पहुँचे सुजाय जहँ वन उतंग ॥ परि माल
हुकम कीनौं सुतब्ब ॥ खेलो शिकार सब सूर अब्ब ॥
खेलत शिकार सब सूर बीर ॥ एकै हुलास सज्जत ग-
हीर ॥ देख्यौ कुरंग वन एक राज ॥ है बर सु आल्ह कीनौं
दराज ॥ लल कारि सूर हय दपटि धाय ॥ लिय पकरि
मिरग जीवत सुभाय ॥ खेले शिकार सब सूर ज्वान ॥
फिरि चले नगर कों करि उठान ॥ पहुँचे सु नगर कालिं
ज जाय ॥ सब देश मौरू पटि गये पाय ॥ लीने सजोय
सुभ तिलक नारि ॥ गावंति गीत ठाढी दुवारि ॥ सबही
को राज सन्मान कीन ॥ दै दै सुदेस सबही कों दीन ॥
जब गये महल भीतर हिराज ॥ सब सूर बीर डेरनि स
माज ॥ रण मास साथ महला समेत ॥ भोपत्ति संग दा
खिल निकेत ॥ दोहा ॥ करि केली परि माल नृप सह
रन मास समेत ॥ महला भोपति भूप को मतौ कुमति

को देत ॥ आल्हा हय दौराय के पकरि लियो मृग जा
य॥ उन के ऐसे पांच हैं नृप के एक न भाय॥ घोड़े पां
च मंगाइये देउ आल्ह कों ओर ॥ नाहि करें तो घर त
जैं जाहि और ही ठौर ॥ होंन हार ह्वै के रहै मिटे न क्यौं हूं
जानि ॥ आय गई मन राज के वात कुमति की खानि ॥
चौपाई॥ भोपति आल्हा उद्द बुलाइव ॥ नृप कहि ऐसे
वचन सुनाइव ॥ पांच बछेरा घर के दीजे ॥ उनके पलटे ह
य वर लीजे॥दो॰॥ घोड़े देहु तो घर रहो देहु न तजो सुठाम॥
है सेनी के जो लगै कीजे ताहि सकाम॥ छप्पै ॥ आल्हा
सुनि इमि बचन बोलि उत्तर नहि दीनो ॥ उठि आये घर
सुभट मंत्र मातासों कीनो॥ कहिय आजु उनि चु
गल वातें मोसों इक भारी॥ घोड़े घर के देहु राजमाग
हमनु हारी॥ छंडिय देश नातर अवै आन देश कीजे ग
मन तुम कहौ मतो सो कीजिये मात मंत्र सुनियै श्रवन १॥
माता सुनि यह वात कही आल्हा सों वानी॥ पूत बछेरे
न देहु लेहु यह वात सुमानी ॥ देहु छांडि या देश लेहु
कनवज की गैलह॥ मिलो चलि व जय चंद ओर छां
डहु सबै रैलइ॥ सुनि मात बात सोई करिये उही वार की
नों गवन ॥ सब साजि आपने कटक कों चले आल्ह दु
र्जन दवन ॥ दोहा ॥ आल्ह महो वो छांडि के कनवज कि
यो पयान ॥ मिले जाय जय चंद सों वाजे नगर निसान
॥ भोपति की मारतु गयौ जागी रीदल पत्ति ॥ आगि देत
लूटत भये गाम सबै सब जत्ति॥ इपी राज कानननि
सुनी घायल हतत सुजान॥ महुवे ते परिमाल नृप का
लिज कियो बयान ॥ छप्पै॥ सुनी खबरि चहुं आन वो

लि सामंत सूर लिय ॥ सोच जाल महि पस्यो भयो ब-
हु प्रबल दुःख हिय ॥ कौन चूक चंदेल हने घाइल
रण पानह ॥ कौन चूक चंदेल हनी गुण मंजरि जा
नह ॥ कीनी न खूब चंदेल नृप नाइक मारि विरुद्ध-
किय ॥ कवि चंद वाक्य साँची भई मिटै नहीं बिनुयुद्ध
किय ॥ दोहा ॥ यह विचारि राजा कहत सब सिरदार
बुलाइ ॥ सुनो सरब सामंत हो करो मंत्र अब आइ ॥
छप्पै ॥ सुनो सर्ब सामंत करिव चंदेल विरुद्धह ॥ हनि
घायल वे चूक और दासी बपु सुद्धह ॥ सुनो मंत्र क
य मास सुनो गुज्जर राय रामह ॥ सुनो चंद पुंडीर सुनो
जादों गुन धामह ॥ चामंड राय सुनिये श्रवण सेनि
पजून विचारिय ॥ संभि माराय लक्खन सुनो तन्त्र
सु मंत्र उच्चारिय ॥ छंद पद्धरी ॥ उच्चरि बघेल लक्खन
समत्थ ॥ भंजिय देस महुवो सुमत्थ ॥ उच्चरै बात चहुं
आन कान्ह ॥ भंजिये देश महु वो सुथान ॥ बोलयो चं
द पुंडीर बीर ॥ पक्करि नरेस परि माल धीर ॥ संभि मा
राय बोल्यो विरंत ॥ चढ़िये सुभूप कढ़िये तुरंत ॥ सारं
ग बोलि बानी निराट ॥ कढ़िये माल परि माल जात ॥ बो
लियो जैन मत सुनो सुद्ध ॥ कीजिये बेगि चहुं आनयु
द्ध ॥ अचलेस बोलि भाटी सुधीर ॥ मारो सुजाय मह-
वे गहीर ॥ चामंड बोलि विरदै तवंक ॥ धारहु सुतेग
मारहु निसंक ॥ सुनि मंत्र मुख्य निंडुर नरेस ॥ मारिये
देश महुवो सुबेस ॥ भोंहां चंदेल बोल्यो सुलोय ॥
प्रथी राज कीजिये हुकम मोहि ॥ गोइंद बोलि यवन
रोज ॥ मारौं चंदेल की मैं समाज ॥ बिंकराराज करि

दाव पाज ॥ कासें सु जाय परि माल राज ॥ चलिये सुर राज अति क्रोध होय ॥ सामंत सूर उच्चरत सोय ॥ कय मास बोलि आगे नरेस ॥ चित्यो सुमंत्र कहु जुद्ध नेस। जय चंद करै ऊपर चँदेल ॥ कीजिये मंत्र बिद्या अमेल। कन वज्ज और महु बोसु वेस ॥ भंजिये सूर दिन बिनउ देस ॥ थापियो मंत्र चहुं आन सुद्ध ॥ धारियो धर्म चंदेल जुद्ध ॥ बुलाय चंद बरदाय सोय ॥ इह भविष बात तोहि आस होय ॥ तव कहे चंद बरदाय बात ॥ होगी सुजंग भारी सुजात ॥ फिरि थंभे एक द्वै मास जुद्ध ॥ पुनि मंचे खेत भारी बिरुद्ध ॥ भारत्थ होइ महुवे सुखेत ॥ कोई न बचे इह जानि लेत ॥ पाछें सुजीत होगी निदान ॥ का रै सु खेत तूही सुजान ॥ इह सुनी चंद की चाहुं आन ॥ पृथी राज आप कीनी ममान ॥ बुलाय राम गुरु रास राज ॥ काढ़िये महूरत बोलि साज ॥ रविकुंड सुद्ध सचि होम ॥ सार ॥ संकल्प कीन मारन बिचार ॥ बन जानि सिष्य सित दास बढ़ि ॥ रविका बिलास कई होम कढ़ि ॥ करि रुद्र माल जपि रुद्र मंत्र ॥ त्रिय लोक बिजै भुगवै सुतंत्र ॥ केत किय पहुप हर पर चढ़ाय ॥ के सूके फूल हित करि बनाय ॥ चकोर आइ नृप दरस दीन ॥ खंजन सि खंडि बिबि परस कीन ॥ बहु दान दान चहुं आन रान ॥ किय जुद्ध चाव मन उमगि दान ॥ अष्टमी बार सुक्र अनूप ॥ भादों सु शुक्ल पक्ष सरूप ॥ सामंत सत्र ग्यारह बरीस ॥ चालीस जानि पृथी राज ईस ॥ सुभ दीन महूरत बिप्र सोइ ॥ चहुं आन राज उच्चरि बलोइ ॥ ग्रह देख कौन कौनं लगाय ॥ द्विज कहत खोलि पत्रा सुभाय ॥

रवि जोग पुष्य त्रिय थान चंद॥ पंचमौ सूर आनंद कं-
द॥ सप्तमो शुक्र गुरु दसम जानि॥ नव मौ सुबुद्ध बर
अधिक पानि॥ तीसरो शनीचर छठौ केत॥ पंचमौ-
भूमिया अरि देवत॥ ग्यार हौं राहु चढ़ि चालि नरिंद॥
पादत्य जे मिवल बढ़े दंद॥ शुभ सगुन देखि ग्रह सु-
भ लखाय॥ कीमों सु कूंच पृथी राज राय॥ कीनो मुकाम
नृप बाग आइ॥ बत्तीस हंस है बर मंगाय॥ चौपाई॥
बाग आय नृप किये बिंनो दह॥ अंकनि रजनि बैठी
मोदह॥ चंद बुलाय कहो नृप ही को॥ कवि यह बाग
बरनिये नीको॥ छंद भुजंगी॥ कहै चंद ऐसो सुनौ स-
र्बभूपं॥ कहौं बाग की राज सोभा अनूपं॥ चहूं ओर
इंडा सरस रंग रागे॥ बुरज चारि सुंदर बहुत दाम
लागे॥ बन्यो कोस फेरं उभै बाग सोई॥ अनेकं तिवारे ज-
हां हेम लोई॥ बने गोख छज्जे अनूपं अवासं॥ लिखे
चित्र तिन में चतुर ने बिलासे॥ जहां फूल नाना प्रकारं
खिले हैं॥ चंमेली सरस मोतिया सों मिले हैं॥ जहां से-
वती और गुलाब लसें हैं॥ निवाड़ा बबूना जुहीं सों ग-
से हैं॥ जहां केतु की औमदन बान जानौ॥ जहांनूत
फूलं कदं में बखानौ॥ गुल दाउदी औ हजारा बिराजैं॥
जहां माधवी सच्छ सुंदर समाजैं॥ गुला बास तुर्रा ज-
हां दूपकपेंचा॥ जहां मोगरा औ कली कुंद सेचा॥ ब-
संती कुजा केवरा गुल सुरो ग्रान॥ जहां रायबेली जुही
सोम सोग्रान॥ सदा सो गुलाब असर्फी सुहाई॥ तहां
गोल गेंदा अरग जा अवाई॥ अनेकं सु फूलं कहां
लों बखानौं॥ अनेकं तरह दार मेवा सुमानौं॥ कंजीर

खरे सेब आड़ू जहां हीं ॥ अंगूरे नरंगी खुरट आम
पाहीं जहां कोकिला मोर वानी उचारें ॥ तहां कूक कोइ-
ल अनेक हैं कोरें ॥ जहां भौंर चहुं ओर भन्नात डोलें ॥ त-
हां चिक्कौरें चक्कवा औ चकोरें ॥ जहां आय पृथीराज की
नो मुकामं ॥ सबै सूर सामंत संगं सकामं ॥ छपै ॥ गेर
महल पृथीराज सीख सब कारन दीनी ॥ कुसुम पा-
ट सिर पाग सूर लोहा कर लीनी ॥ पहर निसा रहे जा
गि कीन करि विक्रम अंगह ॥ सीख दीन सुंदरिय बीर
कीने वपु जंगह ॥ कयमास बोलि आगे किय वके दिल
नाद वजाइयव ॥ सामंत सूर गुरु राम सोहें सब सा
मत आइयव ॥ दोहा ॥ कियो नगारो कूच को सामत
लिये बुलाइ ॥ हुकम कियो कयमास सों घोड़े देहु ब-
ढ़ाय ॥ छंद हनूफाल ॥ नृप जागि बंब कराय ॥ कयमास
अग्र बुलाय ॥ चहुं आन कान्हर चंद ॥ गुरु राम आन
द कंद ॥ सोहने कंठ हरु वाज ॥ विलहना वहुन काज ॥
हय मोर कन्ह हर दीन ॥ ऐराख वंश नबीन ॥ सिरता-
ज आरव सुद्ध ॥ कयमास दीन बिबुद्ध ॥ हयराज चाम
ड काज ॥ खंधारि उपजि समाज ॥ हय रतन चंड पुंडीर ।
भुज लक्क हैं वर हीर ॥ हय सुकट गोइंद काज ॥ मानिक्क
वाज समाज ॥ हय सुरंग संग सुदीन ॥ ठठ्ठी सु बेसन ।
वीन ॥ मन प्यार निंडर राय ॥ इस बरख्खरं उपजाय ॥ ह
य तेज रूप सुराज ॥ दिय राम देव निकाज ॥ मग सी मले
सी काज ॥ संमणि के हरि बाज ॥ असु कुसुम अरु
दल ढेलि ॥ बिलहना भौंह चंदेलि ॥ सर सी इहै वर
लीन ॥ अचले सकारन दीन ॥ सुर खा सुदल मुख सूर ॥

दिय आल्ह कारन तूर ॥ नव लेस कौं हय दीन ॥ नृप हेम सरभर लीन ॥ हाहुली कारन हीर ॥ ताजी सुते जग हीर ॥ हंबीर काज सहंस ॥ उपजियो तुरकी बंसागंभीर काज तुरंग ॥ रेशमी रंग सुरंग ॥ सामंत और कुलीन ॥ अनेक हे वर दीन ॥ घोड़े हजार कलारि ॥ दीने सुवांटि बिचारि ॥ मंगाय पील नरिंद ॥ बकसीस कीनो चंद ॥ गुरु राम कारन कीन ॥ द्वै सहस हेम सु दीन ॥ मंगाय करि वसिंगार ॥ मद गलित जनु मदमार ॥ उत्तंग गिर वर रंग ॥ जनु सिंखिरी कजरंग ॥ सिर चर चिलाल सिंदूर ॥ जनु तड़ित घन में पूर ॥ असवार भय पृथी राज ॥ कय मास संग समाज ॥ तासमै घुः घूपंछि ॥ चौ कीर देखन अंछि ॥ मनु कव स्यार सवद ॥ आइ जाफनी फन मद ॥ जा सीस बैठी देबि ॥ जल जात खंजन सेबि ॥ वग देखि ऊंचे पाय ॥ सुख में मिल्यो भरव आय ॥ जल मांझ चकयिन केलि ॥ सजि करति पिय सो केलि ॥ भय सगुन आनंद कंद ॥ हंसि गाठि बांधी चंद ॥ दोहा ॥ चल्यो साजि संभरि धनी सामत सूर समाज ॥ बोरन दल चंदेल को जोरन जुद्ध हिराज ॥ छंपै ॥ चलि बराज चहुं आन लीन सामंत सूर भर ॥ अतुल तेज भर अतुल सुभट भ्रम सीस महाधर ॥ बीस सहस सब संग जंग कंदलि कसि भारी ॥ चहु आन राह्यौ खेस कूर मबड भारी ॥ गहलौ तब घेलव गोड़ बिय मोड़िय बड़ गुज्जर मिलिय ॥ तोवर पमार खिची पुंडीर दाहिमा हाड़ा चलिय ॥ दोहा ॥ चल्यो साजि संभरि धनी सामत सूर अभंग ॥ लिय व अंग पुन हा

सवार करन सरिस मा जंग ॥ छंद मोती दाम ॥ चल्यौ
पृथी राज सुसाजि हैं सैनि ॥ सजे सब सामंत सू
र सतैनि ॥ सजे चहुं आन सु कन्हर सत्थ ॥ सजे क-
छ वाह पजून समत्थ ॥ सजे संग चालुक सांरगदेव
सजे परि हार सु लक्खन एव ॥ सजे संग दाहि माचा
मड्ड सूर ॥ सजे कय मास लिये सुख नूर ॥ सजें कम
धुज्ज सुनिं डुर राय ॥ सजे पर संग सुखी दिय भाय ।
सजें संग भौंह चंदेल सु बीर ॥ सजे अचलेस सुभ
ही भीर ॥ सजें परि हार सु कूरम पाल ॥ संजे संग सा
मत साखुल लार ॥ सजे सुब घेल बलक्खन आय ॥
सजें चहु आन सु संभि मराय ॥ सजे अत ताइय वी
र वनाय ॥ सजे संग सामत हाहु ली राय ॥ सजें संगभा
र सुरा डाह ठील ॥ सजे संग जद्दव मद्द स चील ॥ स-
जैं संग चंद पुडीर मरद्द ॥ सजें संग गौर सुगाहनरद्द ॥
सजें हरियंत मले सिय दंद ॥ सजें संग मारु अठाय अरं
द ॥ सजें संग माल बिसाल सुएव ॥ सजे संग जद्दव जाम-
देव ॥ सजें संग टोक चटा सु रिसाय ॥ सजेगहलौत
सु गोइंद राय ॥ सजे विकराज सुखेन खगार ॥ सजे संग
उद्दय राय पगार ॥ सजे संग बाग री साखुल सोय ॥ स-
जे संगमल्ह चंदेल सु सोय ॥ सजे संग भट्टिय भीम गही
र ॥ सजें संग सूर पमार सु वीर ॥ सजे निर वान सु वीर
वहान ॥ सज्जे संग वीर प्रसंग प्रथान ॥ सजे परि हार
सु पीप मरद्द ॥ सजें संग गौर सगाहन रद्द ॥ सजे संग
मोरि य सेंगर सूर ॥ सज्जे संग तेज लड़ो गर सूर ॥ संजे
संग तारन मल्ल समाज ॥ सजेसुबली संग सोम समाज ॥

सजैं संग धामर धीर परम्म ॥ सजैं संग रावत राम गर
म्म ॥ सजी संग फौज सबै पृथी राज ॥ सजी सँग सा-
मत सूर समाज ॥ किये दर कूंच चल्यौ चहु आ-
न ॥ चँदेलन ऊपर कूंच निदान ॥ भजे भुमि यां सोड़
छाड़ि है देश ॥ बसें बन मंदिर कीन नरेश ॥ चलेम-
ग सुद्ध सु ऊबट बाट ॥ पिले दल सामत दारुण ठाट
मिले मग मांहि मरद्द बुलाय ॥ सुनों परि माल को-
थान बताय ॥ कही यह एक रहै मलि खान ॥ लड़े तु
म तें सुनि कै बद्ध ज्वान ॥ इती सुनि बाग लई चहुआ
न ॥ करी चलि जुद्ध जहां मलि खान ॥ चली सब फौ-
ज निसान बजाय ॥ जहां मलि खान रहै अकुलाय ॥
दोहा ॥ कासिद सुनि मलि खान को लै सब खबरि
सुजान ॥ जलद पंथ पाइन चल्यो सुद्ध सरि समाधा-
न ॥ गयो उहुत मलि खान परनै करि करिय सलाम ॥
आइव दल चहुं आन के ज्यों रावन पर राम ॥ छप्पै ॥
मल्लि खान सुनि बात मतो बज रंग उपायव ॥ पृथी
राज पद्धरै सज्जि चौरै चढ़ि आइव ॥ नह्लिय आल्ह
उद्दलि सुकौं ऊपर भर संगइ ॥ मह्ला भोपति चुग-
ल चारु परि हारस अंगह ॥ अर सिंह बोलि बिर सिंह
कोंनर सिंह मंत्र यह लिज्जिये ॥ जे सिंह सूर सब्द नि-
सुनों मिली अनी कहा कीजिये ॥ सुनिव कहत जय सिं-
ह सुनौ भाई मलि खानह ॥ आपु हु कुम मुख करौ बहीं
रौंकैं चौहानह ॥ लड़ैं धरैं यह टेक करैं खगन कों-
ख्यालह ॥ भरै जुगिनी आइ धाइ खप्पर रन हालह-
जय राज नंद इमि उच्चरत तुरत कहो सोई करन ॥ चं

देल नोन सांचो करै रजपूत नि मंगल मरन ॥ दोहा ॥
हिम्मति है क्षत्रीन को आस कौन की भाय ॥ कहा आ
ल्ह ऊदलि करै महला मो पति आय ॥ आय वनी अव
तो इहां तुम सों जंग जरूर ॥ ताते अव ढीलन करो
लरो मंत्र करि पूर ॥ सुनी बात जय सिंह की मल्लि खा
न महा राज ॥ सवै सेन को हुकम किय करो लरन को
साज ॥ छप्पै ॥ कियो लरन को साज सैनि बुलाय संग
लिय ॥ किय केसरि या ज्वान झाल केसरि घुराय दिय
॥ करि वत्यार सव फौज जुरि यह ज्जार आठ वर ॥
बान तोप तर वारि तुपक वांधे कमान सर ॥ हाथी प-
चास सज्जे प्रवल कोतल हय आगर अगर ॥ थंभि
यो जाय पृथी राज दल कोस एक वाहिर नगर ॥ चौपा
ई ॥ मल्लिखान कासिद बुलाइव ॥ कहो पिथौरा सों तुम
जाइव ॥ इही ठौर डेरा कर वाओ ॥ जुद्ध होय सो त्यारी पा
ओ ॥ इही ठौर जुद्ध करि वे कों ॥ आगे नाहिं ठौर लरिवे
कों ॥ मल्लि खान हूं आवै हांई ॥ जुरै जंग होइ वडी ल-
डाई ॥ छप्पै ॥ कासिद सुनि यह बात चल्यो पृथी राज पा-
स तब ॥ सो बातें सुनि गयो जलदव्हां कहीं जाय सव
महा राज पृथी राज करो डेर इ या ठौर इ ॥ जंग खेत है
इही ठौर आगे नहीं ओरइ ॥ कर जोरि सरल बातें क
हत लगें अप्छरा वर वरन ॥ तुम सजो जुद्ध त्यारी करो
मल्लि खान आवै लरन ॥ दोहा ॥ सुनि वानी कासिद
की किये न गोरे नैन ॥ उहीं उतरि डेरा किये सजी स-
जाई सेन ॥ छंद भुजंगी ॥ वजें वंव हाथी नपे भूमि ल-
रजें ॥ मनों मेघ भादों प्रवल हूमि गरजें ॥ सुनी मल्लि

खानं नगारो करायो॥ सजी फौज चौंजें रणं रोस पा-
यो॥ चले बीर केते लिये हाथ तेगं॥ किते लै गुर-
ज्जैं पिले वेगि वेगं॥ किते मुगदरं लै धरैं कंधभारी
किते सेल सांगें वरच्छी कटारी॥ किते हाथ कुत्ती क-
बज पेस लीये॥ किते खंजरं पंजरं वार कीये॥ किते (
तीर बीरं लिये सोक मानं॥ किते हाथ फरसा लिये बी-
र वानं॥ किते हाथ ने जेतबल तोप सज्जैं॥ किते बी-
र जोधा करैं सोरगज्जैं॥ किते लाल वाने नते सूर
न्यारे॥ किते मूंगिया रंग पहिरे पचारे॥ किते सर्वती
सेत तूसी हरेई॥ किते सो सिंदूरी अमौआ खरेई॥
किते वीर आवी सजैं वस्त्र अंगं॥ किते सूर सुंदर स-
जै स्याम रंगं॥ बसंती सजैं बस्त्र जे चाय चौजं॥ कि
ते अगरई चंपई वीर फौजं॥ किते सोसनी सूर पहेरे
अमानैं॥ किते कासनी रंग सज्जैं सुवानें॥ किते आस
मानी सुनहरी समाजैं॥ किते बीर केसरि यहरिबल
बिराजैं॥ किते सो गुलाबी सजैं फाकताई॥ नरंगी (
किते रंग पहिरे सुहाई॥ किते सूर सूहे सजैं बख्तनी
के॥ किते बीर प्याजू सजैं संदली के॥ किते सूर सन्ना
लु साजैं बसन हैं॥ किते बीर लीले बने सोर सन हैं॥
किते बीर चीरा चर चिचारु पहैरें॥ किते कोचकीरों
च की रंग गहैरें॥ सजैं पिस्तई किस्मिसी सूर केते॥ जं
गाली रंग धूमरे वास जेते॥ बने रंग रंगं लरन चाउ-
कीनो॥ सबै हाथ हाथं हथ्यारं सुलीनो॥ सजैं अंगजै
सिंह भाई सुपाचौ॥ करौ नोनु परिमाल को आजुसा
चौ॥ हजारं सजे संग भाई भतीजें॥ सहंसं सजे सूर (

सामंत लीजे ॥ वंधे गोल हट्टंगर दृं चलाये ॥ संजेकं
गलं अंग ने जादि खाये ॥ मिली दृष्टि सो दृष्टि चहुं आ
न केरी ॥ कियो नंद नीसान फौजं सुफेरी ॥ सुखं अ-
ग्र कन्हं कयं मास भारी ॥ नरं नाह चामंड काल केस
धारी ॥ बरं बीर धीरं चल्यौ इंद राजं ॥ इते अग्र साम-
त सूरं समाजं ॥ बरं बीर सारंग मोरी नहानं ॥ पारीहा
र लकवन सु अल्हन सुजानं ॥ वरं बीर सामंत संजिम
रायं ॥ पूजूनं वरं कच्छ बायं सु पायं ॥ जुरे जाम जा-
दौ दिशा दक्षिणी यं इते साजि सूरं दलन रक्षिनीयं ॥
धरैं धीर पम्मार पुंडीर चंदं ॥ अचल सिंह भाठी पहारं
सुदं दृं ॥ सजे डोडरयां चीं वघेला विलष्टं ॥ सजे बीर
हाडा सिरं धारि दृष्टं ॥ भरं हाहुली और हंमीर पानं ॥
इते कीन सामंत वाई भुजानं ॥ बिंजे राज पृथी राज सज्जे
सयंदं ॥ वजै नंदनी सान गज्जे गयंदं ॥ लखौ मालि खा
नं दिखौ चाहु आनं ॥ उठी वाग वीरं मसंगं प्रयानं ॥
लखी फौज परि माल के वीर पिल्ले ॥ धरा धीर धरती
बरा बीर मिल्ले ॥ करे खंड खंडं भुसंडं समारी ॥ छकैं
छाक लगैं वहैं खग्ग तारी ॥ अनो मान खग्गी करैं फांक
दोई ॥ गिरे सूर धरनी रकत भूमि होई ॥ चले खल फर
सा उडैं मुंड ले कैं ॥ दलं हाक मारैं लरैं रुंड है कैं ॥ सं
टं सांगि लगैं उरं बीर छाती ॥ धरं फूटि सूरं निकसि पा-
र जाती ॥ धरं कंत धामैं नटं वीर नाचैं ॥ बरं बीन्ह के औ
सरं बार सांचैं ॥ जटं ज्वाल के सी सजहाल लोई ॥ उ
रं धार मारैं धमारैं सलोई ॥ लगैं तीर वीरं हियं लागि
झूमैं ॥ परैं पार ह्वै के गडे जाय भूमैं ॥ लगैं सेलही कं

गिरैं सूर आई ॥ कौरैं नाहि संख्या परैं मूर छाई ॥ लगैं बीर छाती परं सो कटारी ॥ मनो दूलही हार खालें अटारी ॥ लिये हाथ खप्पर जोगिन्नि डोलैं ॥ बड़े गिद्ध आये गगन माहिं बोलैं ॥ वरैं अप्छरा सूर सो-काम आवैं ॥ सुरं लोक बिम्मान धरि के सुधावैं ॥ भयो बीर खेतं बड़ो जुद्ध भारी ॥ बही सो नदी श्रोण भै लाल सारी ॥ तबै मल्लि खानं सु धायो रिसानं ॥ लिये हाथ तेगं अवेगं अमानं ॥ पिले जाय दल में भयौ वार पारं ॥ गयो फेरि के कन्ह पै तेग मारं ॥ परी तेग खाली लगी पील मानं ॥ तबै कन्ह ने खैंचि दीनी कमानं ॥ लगी सीस सारं सुटो पंक टायो ॥ तबै फेरि मलि खान तेगा चलायो ॥ दयो कन्ह कंधं भ्रम्यो सात वारं ॥ दई तेग वेगं भई वार पारं ॥ दई चंद पुंडीर कि र वान औरं ॥ गिरो सीस धरनी लियो जाय गोरे ॥ भयो रुंड मुंडं चल्यौ कन्ह पैकं ॥ दयौ कन्ह ने फेरि मुदगर उठै कं ॥ गिरौ टूटि मलि खान धरनी गहाई ॥ बरौ तास में अप्छरा फेरि आई ॥ गई अप्छरा लै तहां सूर लोकं ॥ भयो शब्द जै जै दुहूं फौज सोकं ॥ मरौ देखि मलि खान जै सिंह धायो ॥ लियो हाथ बरछी सनं मुक्ख आयो ॥ दई जोर तें चंद पुंडीर छाती ॥ गई फूटि हीकं भई भूमि राती ॥ भयो मूरछा चंद पुंडीर वीरं ॥ भज्यौ देखि चामंड सूधं गहीरं ॥ दई जाय जै सिंह केते गरीसं ॥ गिरौ रुंड धरनें परौ टूटि सीसं ॥ पलटि एक नर सिंह के जाय दीनी ॥ सम्हरि सूर ने ढाल पैं रोपि लीनी ॥ कमर तें लई हाथ जमधर नृसिंहं ॥ दई रायचा

मुंड केरोस आयो ॥ लियो दोरि कगदर दियो जाइ गी-
सं ॥ गिरे बीर नर सिंह है टक बीसं ॥ गिरे देखि जै-
सिंह नर सिंह दोऊ ॥ भजी फौज अर सिंह बिर सिंह
सोऊ ॥ गये भागि परि माल पै चालु खाई ॥ लयो स-
रि ससा गढ़ चहुं आन धाई ॥ दोहा ॥ तोरि सरिस
मानगार नृप हने सेनि रण भाइ ॥ अर सिंह बिर सिं-
ह जुद्ध तजि भजे महोबे आइ ॥ छपै ॥ मल्लि खान
रन परे पानि क्षत्रिय भ्रमरक्खिव ॥ करि बलोन को
सोचु ख्याल सब ही रण लक्खिव ॥ परे बीर नर सिंह
परे जै सिंह अमाने ॥ भजि अर सिंह बिर सिंह गयेचं
देल सुथाने ॥ परि डेढ सहस ठाकुर अवनि चारि
सहस संगी कहिव ॥ हज्जार गिरे पृथी राज के लरि
वसूर अंतर रहिव ॥ चौपाई ॥ बे शुमार घायल भ-
ये चंदह ॥ और कन्ह चामुंड सुदंदह ॥ सो परि माल
सुनी इन कानह ॥ उपज्यो डर अंतर चहुआनह ॥ छ-
पै ॥ सुनिव बात परि माल काल आयो पृथी राजह
॥ मल्लि खान लिय मारि मारि जय सिंह सुसाजह ॥
मारि सरि समान गर भागि अर सिंह विर सिंह डर ॥
हनि जय सिंह नर सिंह जुद्ध कीनों विसेस बर। चहुआ-
न सूर सामंत पति साहि पकरि जिन छंडि दिय ॥ सब
सूर और महिलासु बन भोपति बास बुलाइ लिय ॥
चौपाई ॥ सुत चंदेल बुलाये सोई ॥ महला भोपति प-
रि गह दोई ॥ कायथ सो श्री बास कल्यानह ॥ उच्चरि
बचन राजा परि मानह ॥ छपै ॥ बोलि सुनन प-
रि माल बोलि कायथ कल्यानह ॥ बोलि वै सुसुन

गहर वार गोहित्त भार
रेस गौड सेंगर सब ज्वानह ॥ गोहित्त के सब दास राजबा-
जगनि क ढिग बुल्लिव ॥ आइ यो सेन चह्न आन पति सजो
नी ढिग खुल्लिव ॥ तुम कहो भतो सो कीजिये ला
जुद्ध नालिम सबै ॥ तब रानी मल्हन देइ
ज रहे हम तुम सबे ॥ चौपाई ॥ जग निक पठयो-
हू भाखी ॥ राजा जुद्ध मास द्वै राखी ॥ अरदासि लिखाओ ॥
आल्ह बुलाओ ॥ पंग काज
रानी मत सब के मन आयो ॥ राजा नें जगनिक सुबु-
लायो ॥ दोहा ॥ रानी की परिमाल सुनि जगनिक नि-
कट बुलाय ॥ आल्हा ऊदलि कों अंबे तुम लाओ सु-
मनाय ॥ ह्यांजो तुम आंखिन लख्यो सो सब कहियो-
जाइ ॥ सरिस मागढ़ मारयो सबै दीनो देश दहाइ ॥ इ-
तनी सुनिजगनिक चल्यो आल्ह मनावन काज ॥ गयो
बेगि कनवज नगर जहां बनाफल राज ॥ चौपाई ॥
रानी बात कही सब मानी ॥ पृथीराज सों अधगति ठानी
॥ जाल्हन पठयो नजरि सु दीजे ॥ मास दोइ ह्यां छामनि
कीजे ॥ यों कहिके कागज लिखवायो ॥ येही लिखि कै
आल्ह बुलायो ॥ पान पचास हजार पठाये ॥ जेम गहीं
छंद निमें गाये ॥ अतर गुलाब बंदूक बरच्छिय ॥ हैव-
र दोइ चढन कों कच्छिय ॥ ले सह गाति जाल्ह जवच-
ल्लिव ॥ पृथी राज सों नद पर मिल्लिव ॥ दे कागद सबन-
जरि सुदीनी ॥ सब पर मोधि मिलन कों चीनी ॥ कागद
बांचत लै चहु आनह ॥ सिद्धि श्री पृथी राज सुजा
नह ॥ जगनि कहम निकनौज पठाइव ॥ जहां बनाफ-
ल रूठि बठाइव ॥ आवै आल्ह जुद्ध तब होइव ॥ इहष्ट

थी राज बांचि खत सोइव ॥ पृथी राज सबन जरि सुरा
खी ॥ विदा किये जाल्हन सुभ भाखी ॥ दोहा ॥ का-
गद दै जाल्हन तब चल्यो महोवे धाम ॥ डेरा करि
सरिता निकट पिथ्थल कियो मुकाम ॥ फिरि राजा (
बर दाय सों वाचन उचरी एमि ॥ आल्हउ द परि मा-
ल तें रूठि गये सो केमि ॥ छपै ॥ कानन सुनि चहुआ
न कहै बरदाय मंत्र गति ॥ प्रथम देस परिमाल रहौ
जस राज सेन पति ॥ गढ़ा जादू नृप लागि परी गोंड-
न सौं जंगह ॥ परौ चाल चंदेल उली धरनी धर अं-
गह ॥ रौं कियो सेनि अरि सेनि सब काम मरन धीर-
न धरिय ॥ खेलियो ख्याल बिनसीस धर काम जा-
य फते करिय ॥ चौपाई ॥ गढ़ा नगर चंदेल सुलि-
यो ॥ गोड़ सुमिले जुद्ध तजि दियो ॥ भगी सेन देखी जस
राजह ॥ दीनों सीस स्वामि के काजह ॥ दोहा ॥ चालप-
री रोक्यो जने काम आइ जस राज ॥ मारि गौड़ लीनो
गढ़ा सिर दै स्वामी काज ॥ तांके सुत दोऊ सुभट आ-
ल्हा ऊदलि सूर ॥ फौजन मारन अरि हनन बल बिसे
स भुज भूर ॥ चौपाई ॥ राजा जीति महोवे आइव ॥ आ-
ल्हा ऊदलि पाइ लगाइव ॥ दै जस राज भारत मसा
रो सेना पति धरनी रखवारो ॥ कौरें प्यार मल्हन देरानी ॥
ब्रह्मा नंद समय सुत मानी ॥ ऐरा किनि घर घोरा जाये ॥
पांच बछेरा लगे सुहाए ॥ महला भोपति चुगली की-
नी ॥ सो परिमाल मानि सव लीनी ॥ नृपति कली (
जर देखन कीनों ॥ राजा आल्ह बुलाय सु लीनों ॥
पांच बछेरा मांगे दीजे ॥ उनके पलटे हय बर लीजे ॥

नातरु वास छांडि या ठौरह ॥ जाउ जहां चाहो तहां औरह ॥ आल्हा सुनि माता ढिग आयो ॥ कही राज सो आय सुनायो ॥ घर बैठी देवल दे खाजी ॥ पूत बढेरा देन न कीजी ॥ बास छांड़ि कन बज कों चलिये ॥ जाय बदल पंगुल ते मिलिये ॥ साहन वाहन सबही लीनें ॥ कनवज देस पिया ने कीनें ॥ जागीरी भोपति की मारी ॥ बस्ती सबै उजारि पजारी ॥ परि पाटी परिहार सु चुक्किय ॥ ऊदलि सुख काहू रहि रुक्किय ॥ छप्पै ॥ आल्ह कियो कनवज्ज चाव पृथी राज देसदल ॥ भोपति की जागीर धीर उज्जारि जारि बल ॥ करि आदर जय चन्द दीन वड देस सुभारी ॥ घोरे पांच मगाय दोइ हाथीं हित कारी ॥ मोतीर माल उतंग अति हीरा पहुंची सुन्दरिय ॥ परिमाल सुतन सौंप्यो अधिक मिलिय मान मंगल भरिय ॥ दोहा ॥ चंद कहै पृथी राज १ सों बिसरो आल्ह गवाय ॥ मनहुं बनाफल आइ हैं रुंडनि मुंडन चाय ॥ छप्पै ॥ गय बजगन कन बज्जद इय आल्हन कों पत्री ॥ ऊदलि ढूंदलि जोगि दई देवल दे मंत्री ॥ पृथी राज पद्दे रसज्जि मढुवे चढि आइव ॥ मल्लि खान जे सिंह वती नर सिंह जुझाइव ॥ भरि भंजि सरिस मानगर नृप देश चंदेल दहाइव ॥ पृथी राज थंभि द्दे मास लों में तुम पास पठाइव ॥ चौपाई ॥ जव तुम आल्हनिकासि करि चल्लिव ॥ मल्हन दे अति दुक्ख उगिल्लिव ॥ मल्हन बैठी महल निवाट सजोवे ॥ कनवज दिसा देखिके रोवै ॥ अति दल जोरि पिथौरा आयो ॥ सगरौ देश उजारि दहायो ॥ जे चंद को आर दास लिखाइय ॥ सो

गुरु आल्ह क हो तुम जाइय॥ कुमक मागि वेगहि सं
ग लीजे॥ स्वर्ग नि खेल वना फल कीजे॥ इतनी बात
जगन सी कही॥ सुनि आल्हा की देही दही॥ छप्पै॥
सुनि जग निक की बात आल्ह बोल्यो इमि बानी॥ लु-
टो महोवो नगर कुटो परिमाल गुमानी॥ बिना चूक
परिमाल किय परदेश निन्यारे॥ काम आय जस राज
सबै नृप काज सुधारे॥ परि हार सेन आगें धरो लरें चा
रि करि बान सों॥ सामंत सूर सन मुक्ख ह्वै जुद्ध कर इ
चक्कु आन सों॥ चौपाई॥ जग निक भाट बचन इमि बु
ल्लिव॥ अब तुम आल्ह महोबे चल्लिव॥ भगि है भरम
चंदेल नु को सब॥ आल्हा सुनि पछिता आगे तब॥
सुनि जग निक यह बात सुमानी॥ हम यह राज कछू
नहिं जानी॥ हम सिर बांधि महोवो रक्खिव॥ नृप चंदेल
चुगल मुख दिक्खिव॥ छप्पै॥ हम मारे वड गोंडदेव
गार चंदा बोर॥ हम जोंदो करि जुद्ध धारि चंदेल उधारे॥
॥ हम कट हरिया काटि दट्टि परिमाल देश दल॥ हम को-
तुक किर बान लूटि लींने सु सबै तुल॥ लीनि सु पील ज-
य चंद के असिय लाख गिनि यो सु तुक्ख॥ सुनि भाट बात
रजपूत की राज नि जानी नाहि कुक्ख॥१॥ हम आगे प-
ति साह फौज भागी दस वारह॥ हमन सतरिया काटि
कियो दल कूटि पुवारह॥ हम जीती धर गया और दल
प्रबल पठानह॥ हम बांध्यो सिर नेत खेत दल बिरचि
अमानह॥ मेवाति मारि पद्धर करिय अंतर बेदद-
हाढ्यो॥ बंघेल मारि बसुधा हरी गढ़ चंदेल लगाढ्यो॥
॥ चौपाई॥ राजा दस जीत जस राजह॥ लीनी धर कंचन

की साजह ॥ ताको फल राजा यह कीनो ॥ हम कों देश
निकासे दीनो ॥ ता पाछे हमख्याल सु कीनों ॥ राजा जी-
ति इक ति कर लीनो ॥ सात बार ऊदल जुध कीनो ॥ जे-
त पत्र चंदेल हि दीनो ॥ छपै ॥ सात वार पर धवल ल-
गे चौरासी गातह ॥ जीति राव इक तीसरी स करि से-
नि सु सातह ॥ स्वामि धर्म उज्जल करिव दुर्जन द-
ल जोरह ॥ गौंड मारि उज्जारि वरिनसतर कर तोरह ॥
॥ वज्जाइ लोह तेरह वरस पंचास नि लगि छांह किय ॥
चंदेल चुगल मानी कही तीजे पन पर देश दिय ॥ १ ॥
छंद पद्धरी ॥ सुनि भाट वोलि उच्चरि व तान ॥ आल्हन
नरेस सो सुनि य कान ॥ परिमाल छांडि वालक वप्प-
जय माल धराजस राज अप्प ॥ चंदा सपर्व लिय उभै
दंड ॥ वारीस देश दल कियो खंड ॥ रे वास पार कीलु
टि सर्ब ॥ मानियो वीर जी तासु गर्व ॥ जइ वाराय खर्ग-
निखिलाइ ॥ मेवाति मारि धर लई धाइ ॥ पंजाब देश
पंजाब ध्यान ॥ बैराट देश को गर्व मान ॥ मालवा देश
लिय पेस मारि ॥ उद्दिय पमार की धर उजारि ॥ चंदे-
ल राज बट्ठाइ दीन ॥ फिरि गढ़ा मारि गढ़ पेस कीन ॥
यह सुनिव वात परिमाल राज ॥ आये सु कास जस रा-
ज काज ॥ सिर धुनिव आल्ह लीने बुलाय ॥ आप नो
देसु दल सब बताय ॥ तरवारि बांधि सिर दार कीन ॥
है बर मगाय तेहि बेर दीन ॥ कय सेव अग्र ठाकुर सु-
सुद्ध ॥ वाजियोव ठाकुर नाम सुद्ध ॥ बैठंत राज अल्हनन-
रेस ॥ मारियो जाइ पूरब्ब देश ॥ पठान गया के जेर की-
न ॥ तहं गर्ब कोट इक लूटि लीन ॥ जीतियो जुद्ध नि-

सरत्थ जाय ॥ सम सहा वा दखर्गा नि रिखाय ॥ केहरि कढे रिके मन्न मारि ॥ लीन सु पील जय चंद वारि ॥ हिं डौन देश जादो दहाय ॥ लूटियो सिद्धि नव निद्धि पाय ॥ पति साह फौज कई बेर मारि ॥ चालु कसिकख को गर्ब गारि ॥ सत वार खेत परियो सु दंद ॥ धरि स्वामि धर्म ज-स राज नंद ॥ सांकरे स्वामि छंडे सु जाय ॥ अघोर नर-क गहरे पराय ॥ तुम सहो आज बानवज्ज चाव ॥ सां करे परेवि चंदेल राव ॥ तुहि होत बधाई नृपति की न ॥ धरि चामर मल्हन दे प्रबीन ॥ करि रुदन मल्हन दे कह्यौ मोहि ॥ सो मात दिवल दे कह्यौ तोहि ॥ दोहा ॥ दे-वल दे कानन सुनो कहि मल्हन दे मोहि ॥ भीर परी चं-देल पैहै मिलिवे की तोहि ॥ चौपाई ॥ देवल दे तुम बां ची बंदिय ॥ अरि परि माल धारना संधिय ॥ गढ़ सों आ नि लग्यो पृथि राजे ॥ आल्हा सीख देहु तुम काजे ॥ बां चि व्यास बादह सुख गाई ॥ वाचा जग मै सुकति कहाई ॥ जो कुछ बांचि दिवल दे बुल्लिव ॥ आल्ह सुनत महो-वे चल्लिव ॥ पृथी राज सों जुद्ध सु कीजे ॥ स्वामि धर्म को फ ल अब लीजे ॥ तब ऊदलि यह बोलिब बानी ॥ हो महो वे की चूरा घानी ॥ बुरे हाल काढ़े परि मालह ॥ सो सब भूलिगई अब ख्यालह ॥ जगनि क ऊद्दलि को समझावहि ॥ कीजे सो जग में जसु पावहि ॥ माता दीन बचन करि रो-ई ॥ तैं सब बनाफल नि की खोई ॥ स्वामि कान इनि देह न कढ़िय ॥ इय कर तार कूखि किन फट्टिय ॥ छप्पै ॥ आल्ह उद्दलिय सुनत उट्ठि सुरडाय बीर उद्ध ॥ मात सु क्ख मानि यो जाय हम मरें कुटुम सुद्ध ॥ लरें धरें सिर-

धर्म कटैं किर बान पान धरि॥ करैं जुद्ध भरि पूर जाहि शोणित समुद्र तरि॥ जोगिनिय गिद्ध भायो करिहिं हूर वरैं सूरनि घनिय॥ तो कोखि मात उज्जल करहिं चलि भेटैं संभरि धनिय॥ दोहा॥ चलन महोवे की सुनी देवल दे सुख पाइ॥ अरज करन जय चंद सों चले बनाफल राइ॥१॥ देखि नयन जय चंद वोलि आल्हन सों बानी॥ क्यों आए दरवार उद्दि इहि बेर गुमानी॥ कसे कवच इक अंग जंग कंदल कसि भारिय॥ बिद्दा किये कहुं नाहिं नाहिं इंकारि पुकारिय॥ इमि कहत बनाफल जोरि कर लेन सुजगनिक आइयो॥ पृथी राज महोबे जुद्ध कों सुहम परिमाल बुलाइयो॥ चौपाई॥ नैंन रतन करि बोले बानी॥ भरि वे काज महोबे ठानी॥ अबलों नेंन हमारो खायो॥ चंदेल न ढिग मरन बुलायो॥ सगरी नाव जाय बंद कीजे॥ आल्हा ऊदल जान न दीजे॥ छामनि करहु हमारे पासहि॥ छांडहु अबै महोबे आसहि॥ तब आल्हनि रतन किये नैंन॥ सुनि जय चंद नृपति के बैन॥ कनवज लूटि रिद्धि सब हरि हैं॥ पाछें जुद्ध महोबे करि हैं॥ आल्हा पंग क्रोध जब भंये॥ ऊदल शस्त्र हाथ मो लये॥ तब जगनि कहि बिरद बिसालह॥ दीनी अरज लिखी परिमालह॥ छपै॥ गढ़ दुर्गम खल भलत अरकुय परत गिर गिरि॥ तृण वण घन टूटंत धरनि धस समति हयन भरि॥ सर संभन खल भलत डिडिडि डुयक रक्खय॥ कमट पीढ़ि कलमलति पहुमि परभय रुब रक्खय॥ जय चंद पयान प्रसंभरति पुनि ब्रह्म मंड

बिलु द्दिहै ॥ नन चलद्दु न चलिनन चलिन चलि सु-
ममा चल हतो प्रलय पल द्दिहै ॥ चौपाई ॥ अरजी
बांचि विरव सुनि भारी ॥ कछु आल्हा को क्रोध निहा
री ॥ करैं चाकरी सेवा ठाई ॥ पृथी राज पर कुम क पठा
ई ॥ छप्पै ॥ बांचि अरज जय चंद कहे सुख बचन भा
ट वर ॥ करै चाकरी प्रगट करद्दु उप्पर आतुर कर ॥
पृथी राज पद्दुरें सेनि वड़ आय सो किन्निय ॥ कुद्दिस
रि समा नगर लुद्दि धरनी धर लि ड्डिय ॥ वुल्लाइ कु
मर संग आल्ह के जुद्ध सभर भर लि ज्जिये ॥ संभारि
गेन बिजय पाल सुब तुम जुरि पिंगुरि कि ज्जिये ॥ दो-
हा ॥ बांचि अरज जय चंद नृप वोलि दिमान हजूर ॥
बिदा करो सेना सजो आल्हा संग जरूर ॥ छंद मोती
दाम ॥ विदा किये आल्ह सुपंगुल राय ॥ द्दिये दस-
हय वर साज बनाय ॥ द्दिये दुय पील सुउज्वल दंत ॥
छद्दु ऋतु छाय रहे मय मंत ॥ दई दस चीनि के मोति ॥
य माल ॥ दई कर पहं चिय रूद्र बिसाल ॥ द्दिये सिरो
पाय क सब्बिय सात ॥ निरक्खत चंद सुसिक्कत जात ॥
॥ कटारी जगा वकी दीनी हैं दोइ ॥ रखो तुम आल्ह
छत्री धर्म सोइ ॥ वोल्यो इमि लक्खन सी कम धुज्ज ॥
धरे ध्रम सीस सछन्निय लज्ज ॥ दई संग फोज पचास
हजार ॥ दये दस डील बताइ जुझार ॥ द्दिये संग मोरि
य रूप सु सुद्ध ॥ द्दिये संग चालुक केसव जुद्ध ॥ द्दिये
सिक्क वार सु कूरम पाल ॥ द्दिये संग बैस सुबे तत काल ॥
॥ द्दिये चद्दु आन सुमंगल राय ॥ द्दिये संग वाबुल
सें गर पाय ॥ द्दिये संग सेंगर राय अमान ॥ द्दिये सं-

ग ताल्हन बेग पठान ॥ हजार पचास दिये असवार।
धरैं सिर सा मत धर्म दतार ॥ दिये नृप आल्ह को पा-
न मगाइ ॥ लई नृप सीख चंदेल सहाइ ॥ जग त्रिक-
कारन पील मगाय ॥ समर्प्पिय पिंगुल साज बनाय ॥
दिये सिरो पाय तुरी दुइ सुद्द ॥ दई द्रवि वीस हजार (
विबुद्ध ॥ दये दुइ ग्राम सु पत्र लिखाय ॥ समप्पिय भाट
सु पिंगुल राय ॥ उठे जय चंद बिदा किये आल्ह ॥ सम (
प्पिय फौज तबै तत काल ॥ पधारिय आल्ह हवेलिय सु-
द्ध ॥ धरैं हिय मांरू पिथो रा जुद्ध ॥ हवेली सु आल्ह चलाव
सु कीन्ह ॥ मगाय कें पाल की पांच नवीन ॥ चढ़ायकै दे-
स चले सुख सूर ॥ दुहूं ठाकुराय नि देस जरूर ॥ चले
चलि ऊदलि जोध सुवाह ॥ गही सु महोबे की फेरि (
के राह ॥ करब के पारथि पूजन आल्ह ॥ अगम्नित
आय तिते तत काल ॥ बधे कर वान चढे हय सोइ ॥ च-
ले चढि उद्दलि सुक्कत होइ ॥ चले जगनि क्क किये जुध
चाव ॥ अवै सुख मानि चंदेल निराव ॥ निक सिक न-
ब्ब जवाहिर सोद ॥ तहां भयो सोन कन्नी ध्रम होद ॥
सन म्मुख काक करालिय कूक ॥ भयो दिसि जैमनी
ओर उलूक ॥ ठठ क्किय भाट निरक्खि सु गुन्न ॥ ल
खी लरू आल्ह मुसक्कि बदन्न ॥ चौपाई ॥ मुस (
कि आल्ह फिरि बोलिब बानी ॥ तैं कलु होन हार की
जानी ॥ सामत सूर अटल भर रक्खिय ॥ औ कबि (
चंद भवानी भक्खिय ॥ उनसों जुद्ध न जीते कोइय ॥
हिंदू तुरक मिलैं दल दोइय ॥ पात साह लरि उन सों-
हारो ॥ कनवज पति को गर्ब प्रहारो ॥ दोहा ॥ होन हार

ऐसी लिखी कही आल्ह अकुलाय॥ हम सामंत नि-
जूकि हैं राज चँदेल सुजाय॥ छप्पै ॥ दुरजोधन प-
रि माल जबै बरजौ नहि मान्यो॥ तब घायल मर वाइ
बात हम तब ही जान्यो॥ फिरि फिरि ऊदल बरजियो
करी विनती हित कारी॥ चुगल नि चुगली करी बात
बिगरी अति भारी॥ हम देखत तौ परिमाल को नान दु
ख देख्यो नही॥ सुनि भाट बात रजपूत कौबि हंसि
आल्ह ऐसे कही ॥ चौपाई॥ जगनि कहा सुम सबजा-
नी॥ होन हार अबि गति नहि मानी॥ गंगा तट डेरा कर-
वाए॥ कुमक दई सो आनि मिलाए॥ लक्खन सी जा-
ल्हन सी दोई॥ इन मिलि अल्ह मित्र ता होई॥ दोहा॥
मिज मानी देवल करी संग एक ही साज॥ अन्न घृतप-
कवान सत बहुते स्वाद समाज॥ राति रहे उतरे नदी च-
ले मठोवे वार॥ कुमक लिये जय चंद की बिक्रम वीर
जुझार॥ छंद पद्धरी॥ चढ़ि चलिव आल्ह ऊदल्लि सोइ॥
उर स्वामि धर्म रतें बिलोइ॥ गंज्जिय गंभि बज्जिय नि-
सान॥ सज्जिय जुवान अति जोर वान॥ धरि पील अ-
ग्गि पंचास पंच॥ चलिये सु ढील करिये न रंच॥ जे
मने शब्द स्यार स्स कीन॥ भखनील कंठ मुख मकिव-
लीन॥ चम चमिय मेघ पच्छिम दिसान॥ यह चिन्न
जानि लखि बिघ वान॥ फिक्करिय दौरि आड़ी सु आय॥
जंबूक शब्द बोले कुभाय॥ सूरज्ज मांझ इक क-
बंधि दिक्खि॥ यह चित्र जोर लख्यो सलक्खि॥ हंसि
कहिय बेर अब काल लखाइ॥ रजपूत मरन मंगल
बताइ॥ इहि बात सोच कीजे न कोइ॥ रजपूत बान

इक बिकट होइ॥ दर कूँच कूँच कीने पयान॥ किय जुद्ध चाव मन उमग मान॥ कहु एक हीव समर है न चाय॥ परिमाल हेत करि बंधि भाय॥ ताडंत तुरी मारंत सिंह॥ शुव भव्व वात भुग वैसु हिंह॥ चहुँआन प्रतिज्ञा किये जोध॥ परिमाल पांन लखि बीबिबोध॥ पठ्ठाइ दीन कासिद एक॥ आये सु जोध इह वात मेक॥ केसरि मगाय केसरिय कीन॥ सेवा मगाय सुख सों अधीन॥ उत साह हर्ष किय सभा लोय॥ सांकरे स्वामि जाने सु लोय॥ कासिद पठै परिमाल पास॥ बैठियो भूप ऊंचे अवास॥ शुद्दरिय खवरि दरबार जाय॥ आये सु बनाफल दोय भाय॥ दरबार जाय बोल्यो जरूर॥ आये सु आल्ह सेवा हजूर॥ सुनि राज हर्ष मन बहुत कीन॥ उच्चरिय बचन चंदेल दीन॥ केती कसेन आल्हन्न लाय॥ बोल्यो सु दीन कासिद चाय॥ हैसत सु पील सेना सुभाय॥ पंचास सहस दइ पंगु राय॥ लक्खन भतीज नृप संग दीन॥ सरदार आठ हैं दश प्रवीन॥ ताल्हन पठान लाखन कुलीन॥ आल्हन्न काज ऊपर सु कीन॥ दोहा॥ सुनि वानी कासिद की किये नगारे बेन॥ साज बाज सब साजि के सजि आये सब सेन॥ देवल दे जगनिक संग चली महोवे धाय॥ मल्हन दे सुनि खवरि को आगे भई सुगाय॥ मिली वाग में आय के अंग सों अंग मिलाइ॥ एक पाल की बैठि के भूप सुवन घर जाइ॥

देवल दे रानी निकट कहि कनवज की बात॥ बच्चन कहे जे चंद ने ते सब करे बिख्यात॥ जगनिक की हाथी

ह्यो होय गाम अजं घट्ट॥ भाटनि वाजि चंदेल ने करी वडाई भट्ट॥ असवारी राजा सजी संग ब्रह्मा जीत ली न्‍ातुरी बैठि परिमाल जू आल्ह मिलायो कीन॥ आय आल्ह सस्तु हैं चले लाखन ताल्हन संग॥ मिले आय सब बीच में भेटे राजनि अंग॥ छंद हनूफाल॥ चढ़ि चले आल्ह अमान॥ परिमाल आदय-जान॥ सिर पाय कीन सु अंग॥ चढ़ि चले आल्हनि संग॥ मिलि सबै निकट सु आय॥ परिमाल संग लगाय॥ मिलि टाक रूप जवीन॥ चंदेल आदर कीन॥ चालुक्क केशव दास॥ परिमाल मिलि बहुलास॥ तोमर सु बोहित आय॥ मिलि नृपति के लगि पाय॥ चलि जद्दवंद सु बाल॥ मिलि हेत करि परिमाल॥ चहुआन मंगल आय॥ मिलि योन रेस सु धाय॥ वड़गुज्जरं सौ निंग॥ मिलियो सु राजनि अंग॥ मिलि सिक्क कूरम पाल॥ उठि अग्र राज निहाल॥ सेंगर बराय अमान॥ मिलि भूप नूपुर वान॥ मिलि बैस अग्र सु काल॥ मिलियो सु उठि परिमाल॥ ढिग आय ताल्हन वेग॥ पट्टान मिलिय सतेग॥ जय चंद कुशल पुछाइ॥ फुरमान सीस चढ़ाइ॥ दिय आल्ह कारन राय॥ परगने चारि बताइ॥ मंगाइ हाथी दोइ॥ संमप्पि आल्हन सोइ॥ मंगाइ मोती माल॥ पहुंची जवाहर लाल॥ सिर पेंच पन्ना पान॥ मिलि जोति छाई भान॥ नृप जाल कंधे दीन॥ सन मान बहु विधि कीन॥ उद्दलि सु लागिव पाय॥ नृप बोलि कंठ लगाय॥ दिय तुरी तेरह साजि॥ सुबरंन साज समाजि॥ रानी सुनिकर बु-

लाय ॥ न्योछावरें करवाय ॥ करि अरज मल्हनरा-
ह ॥ ये बात मोकों देह ॥ फिरि आल्ह बोले ताम ॥ मौ-
सी तिहारे काम ॥ मोतीन आरति कीन ॥ या भांति (
आदर लीन ॥ सुख मानि सब मिलि भूप ॥ गये सभा
सुभग स्वरूप ॥ दोहा ॥ आल्हा की जुबिदा करी नृप-
ति हबेली काज ॥ फोज उतारी पंगु की बागन मोंमस-
माज ॥ आल्हा आये सात दिन भई खबरि पृथि राज ॥
॥ बोलि कान्ह कै मासभर कियो लरन को साज ॥
छंपै ॥ बोलि कान्ह कय मास बोलि सामंत महाभर ॥
बोलि चंद पुंडीर बोलि चामंड मंडवर ॥ बोलि ल-
खन परिहार बोलि पज्जून महा मति ॥ बोलि जंगराय-
य बोलि कन केप्र बिरद पति ॥ कम धुज्जराय निंडुर
बुलिव बरदायक अरु बुल्लियव ॥ सब मिलि स सूर
सामंत हो तंत्र मंत्र सब खुल्लियव ॥ दोहा ॥ कहे चंद पृ-
थी राज सुनि ढील न कीजे नेत ॥ आयो आल्ह कनौज
ते सहस पचास समेत ॥ चौपाई ॥ आल्हा सहस पचा-
स कलायो ॥ पंगभती जो संग पठायो ॥ आय आल्ह
सात दिन बीते ॥ कीजे जुद्ध चंदेल न हीते ॥ दोहा ॥ सु
नि बानी कबि चंद की पृथीराज महाराज ॥ हुकमकि-
यो कागद लिखो बेगि चंदेले काज ॥ चौपाई ॥ दोद मा-
स हम क्षमनि कीनी ॥ क्षत्री धर्म कारने चीनी ॥ अब
चंदेल जुद्ध वर मंडहु ॥ नातर नगर महोबो छंडहु ॥
गुणमंजरि मोहि मालति दासी ॥ घायल हने अना
हक नासी ॥ पहिले जोम लरन को कीनो ॥ अब चंदेल
कहा वल हीनो ॥ दोहा ॥ पहिले तुम ने यों लिखी जग

निकनैान पठाय ॥ आल्हा ऊदलि रूठिगये लावैं ता-
हि मनाय ॥ मास दोइ हम थंभिगये मानि तिहारी वा-
त ॥ अब आये आल्हा भये और रीति दिन सात ॥ कै-
जु जुद्ध वेगी करौ कै भाजो तजि ठाम ॥ कैजु हमारे ह्वै
रहौ वसौ आपने गाम ॥ या प्रकार कागद लिख्यो का-
यथ चतुर सुजान ॥ जुद्ध करौ छोंडो नगर दोऊ
वात सयान ॥ छप्पै ॥ लिखि पत्री पृथी राज जोगि चं-
देल सु कीनी ॥ क्षत्री धर्म धरि सीस सूर लोहा तन
लीनी ॥ करौ जुद्ध पद्धरो धार चंदेल खेल कुल ॥ नात-
र धरनी ठाम रहौ आधीन सबै तुल ॥ धरियो सुधीर
जस कार ने कारत ता सब छंडिये ॥ बुल्लाय कुमकज-
य चंद की सिंहन आदर मंडिये ॥ चौपाई ॥ क्षत्री धर्म
धरौ परि मालह ॥ करौ नरेश खर्ग न कौ ख्यालह ॥
कै तुम नगर महोबो छंडहु ॥ कै अब साज लरन को
मंडहु ॥ दोहा ॥ पत्री लिखि कासिद जबै वोल्यो राम
स्वरूप ॥ जाव चंदेले पै जहां पत्री देहु अनूप ॥ या प-
त्री को आसुही आवै जलद जवाब ॥ जुद्ध करौ छोड़-
हु नगर रहौ हमारे ताब ॥ पत्री ले कासिद चल्यो गही
महोवे बाट ॥ गयो वेगि परि माल पै जहां चंदेले ठाट ॥
॥ दिय कागज नृप माथ कर देहु जवाब लिखाय ॥
ढील करौ मति तनक अब बांचि लेहु सुख पाय ॥ चौ-
पाई ॥ सुनी दूत की बानी राजा ॥ बांच्यो खत्त लिख्यो पृ-
थी राजा ॥ जे ब्यौरे लिखि भेजे रातें ॥ ते परि माल बांचि
सब बातें ॥ तब सिर दारी सबै बुलाई ॥ राजा उर
चिंता बहु छाई ॥ दोहा ॥ बांचत ही राजा महा परयो सो

च के कूप॥ महला भोपति आदि है सबै बुलाये भूप॥
कंद रघुन राज॥ बुलाय राज आल्हयं॥ करंत मंत्र
ख्यालयं॥ बुलाय उदली नयं॥ कुमार है मवीन यं॥
बुलाय प्रोहितं लियं॥ करंत मंत्र जे कियं॥ बुला-
य कायथं कला॥ सु चार बुद्धि में भला॥ बुलाय रा-
ज हित्रयं॥ अनेक जुद्ध जित्रयं॥ बुलाय भाट लीन
यं॥ नरेस थापकी नयं॥ बुलाय साह सुंदरं॥ करं
ति बात दुंदिरं॥ चंदेल बीर धीरयं॥ गहर वार हीर-
यं॥ बुलाय राज दुंदिरं॥ मल्हन राति मंदिरं॥ तहां
सु मंत्र कीनयं॥ अनेक भर्म चीनयं॥ पिथौरा दूत
आइयो॥ तुरंत जुद्ध ठाइयो॥ सिताव जुद्ध मंडिये॥
नहीं तो ठाम छंडिये॥ कहै चंदेल आल्हतें॥ करौ सु
जुद्ध काल्हतें॥ बुल्यो सु आल्ह नू पुरं॥ सुनौ चंदेल
नूपुरं॥ करौ सु जुद्ध दीन में॥ दिवस्स दोय तीन में॥
बिचारि लोग आपनौ॥ लरि दलं हना पनौ॥ पमार
मोरि गोकुलं॥ पमार जोर तोकिलं॥ कमद्ध कूर मंमिल
लें॥ उमंडि सिंह लों चलें॥ जहां सु चंद खीचियं॥
भदौरा खेस बीचियं॥ सुधीरव सोह जारयं॥ बनाफ-
लं अुकारयं॥ गरूर गेह लौतयं॥ बड़ी सुभीर होत-
यं॥ सुयेन वाल नोलयं॥ भिरंत डौल होतयं॥ क-
पाल मंद वानियों॥ कठेरि लोह जानियों॥ पुंडीर दा-
हिमा मिले॥ राठौर वीर हैं भले॥ पिलंत परि हार-
यं॥ चंदेल सेल मारयं॥ चले बघेल साइयं॥ अ-
नेक जाति वाइयं॥ संभारि हाजिरी लई॥ कितेक से
नि हैं भई॥ कही चंदेल आल्हयं॥ कितेक से निभा-

लयं ॥ इंद बनाफलं कही ॥ हजारि साठि है सही ॥ पचास पंग की भली ॥ करी सु दोइसै चली ॥ गयंद तीनि सै इहां ॥ दलं दलं परैं जहां ॥ कियो हुकम्म जुद्धयं ॥ करौ हथ्यार सुद्धयं ॥ चंदेल चेत कीनयं ॥ निकसि डेरा दीनयं ॥ करैं सु जोध मंत्रयं ॥ गुरू बिसेष जंत्रयं ॥ दोहा ॥ एक लाख हज्जार दश सेना सबै चंदेल ॥ करी पांच सै सो सजी कियो बनाफल पेल ॥ चौपाई ॥ सहर वाहिरे डेरा कीये ॥ मनमें करि करि करै हीये ॥ पाछैं मसलति करौ कराओ ॥ पृथी राज कौं खत लिख वाओ ॥ दोहा ॥ लिखी पिथौरा कारनैं सुनि संभरि के राय ॥ ऐत वार दिन द्वादसी करैं जुद्ध हम आय ॥ चौपाई ॥ लिखि पत्री का सिद्ध पठायो ॥ जुद्ध चाव चंदेल करायो ॥ सब दल डेरा वाहिर कीनो ॥ यह परिमाल लिख्यो कर दीनो ॥ दोहा ॥ लिख्यो वांचि संभरि धनी कियो लरन को साज ॥ मानो रावण परि बहुरि कोप्यो रघु कुल राज ॥ सुक्र वार नौमी निकट संभरि बीर नरिंद ॥ वीरन दल चंदेल को कियो नगारो नंद ॥ छंद चामर ॥ कीने निसान नंद पान बहुसि सामंत सूरयं ॥ मरदन कराये अंग न्हाये पान खायं पूरयं ॥ उत सुनी अच्छरि खरी उच्छरि अंग मंजन कीनयं ॥ बहु फिरैं हरषी बाल सुरषी नैन अंजन दीनयं ॥ हर्षे कपाली खुली ताली रुंड माली पूरयं ॥ चौसट्ठि अगन वधि उछंगनि हरैं अंगनि तूरयं ॥ पर चारि धामें चित्र आवें गीत गामें मंगलं ॥ चहु आन चंदेलं खुले खेल मेलं उच्छलं ॥ चौपाई ॥ सामंत सूर चंढे

जुद्ध चावद्ध ॥ सारस भारि संभरी रावद्ध ॥ इतै सुभट्ट
कवच कसलीने ॥ उत अच्छरा सिंगार सु कीनें ॥ दोहा ॥
सूर कवच वाने वने मंगल भरन सु भाउ ॥ उतै अच्छ-
रा तन सजें वरन बरन को चाव ॥ छंद भुजंगी ॥ इतै सू-
र न्हाये करैं ग्यान ध्यानं ॥ उतै अच्छरा अंगमंडे सुभा-
नं ॥ इतै टोप टंकारि ससि सूर मंडं ॥ उतै अच्छरा कंचु-
की धारि अंगं ॥ इतै सूर मोजा वना वंतभायं ॥ उतै अ-
च्छरा नूपुरं पहरि पायं ॥ इतै सूर सांगें बधें ताइ तंपं ॥
उतै अच्छरा जाँघिया पहरि जंघं ॥ इतै पाग पेचं सभा
रंत सूरं ॥ उतै सीस फूलं गुहा वंति नूरं ॥ इतै सूरिमा पा-
ग पेंकिलम डोरें ॥ उतै रुद्र रंभा सु माँगें सभारें ॥ इतै सू-
र सर्वे खरे स्वर्ग तेजें ॥ उतै अच्छरा अंजनं नैन अंजैं ॥
इतै सूर जम डाढ़ कै बाढ़ दीनें ॥ उतै अच्छरा कंकनं पा-
न कीनें ॥ इतै सूर सांगं लिये हाथ न्यारी ॥ उतै अच्छरा
हाथ परमाल धारी ॥ इतै सूर तुलसी न की माल नाई ॥
उतै अच्छरा माल मोती वनाई ॥ इतै सूर किर वान
कम्मान नाई ॥ उतै अच्छरा चौंकि आंछं न चाई ॥ इ-
तै सूर वीरं लिये हाथ नेजा ॥ उतै अच्छरा आननं चंद
तेजा ॥ इतै नंग सामंत घोरे न लीने ॥ उतै अच्छरा सा-
जि बिम्मान कीने ॥ कहै चंद ऐसो निरक्खोनसोई ॥ क-
रन्यो समानं परी वीर दोई ॥ चौपाई ॥ परी सूर वरने
कबि दोऊ ॥ उत परि माल सजे दल मोऊ ॥ दोइ कोस
को वीच सु कीनो ॥ दुहुं दल आय पयानो लीनो ॥ दोहा ॥
नौमी तिथि शुक्र हि दिवस चंढ़े सकल सजि सूर ॥
दोय कोस अंतर रहिव गहिव मुकाम ज़रूर ॥ छप्पै ॥

करि मसलति परिमाल आल्ह ऊदलि ढिग बुल्लिव।
अरु कायथ कल्यान धर्म धरि मोहित तुल्लिव॥
बोलिव जगनिक भाट बोलि लक्खन कभधुज्जह॥
बोलिव ताल्हन तुरक बोलि भोपति जस जुद्दह॥ रानी सु बोलि परदा रखिय देवल्ल ढिग बैठारियव॥ परिमाल कहैं सामंत सों मन्त्र सु मंत्र उच्चारियव॥ चौपाई॥ बोलिव मामा सहज सुजानहु॥ राजा आल्हा को मन मानहु॥ देवलि रानी ढिग बैठारो॥ पाछे लरन को मंत्र बिचारो॥ राजा उठि भीतर को आयो॥ वाही ढिग आल्हा बैठायो॥ रानी मल्हन दे अति बुल्लिव॥ पाछे बात मतें की खुल्लिव॥ तेज पिथौरा को अति कहिये॥ तासों जुद्ध कौन बिधि लहिये॥ छाँरैं नगर महोबो छूटै॥ डंड दंहिनौ अप जस फूटै॥ फिर देवल देवो लिव बानी॥ सुनौ श्रवण राजा अरु रानी॥ नीकोहोय करौ सु बिचारो॥ परिगह बोलि मतौ सु उच्चारो॥ देवल कही सबै यह भाखें॥ रामायण भारत की राखैं॥ स्वामि सांकरैं छांडन कहैं॥ चंद सूर लों नर्क हि रहैं॥ अपनों स्वामि सांकरे छांडे॥ आपुन आय फेरि घरु माड़े॥ पान नीर जौलौं नर्क हि परई॥ ताकी साखि व्यास उन भरई॥ घाय खाय पर लोक निवारैं॥ अपनो अंग जोम सों टारै॥ तासों जार जाति को कहिये॥ असल बीज रजपूत सु लहिये॥ स्वाबिद राखै आपु सु मरै॥ छत्री धर्म सीस पर धरै॥ माया धर को दूरि जु रखैं॥ बेनर सूरज मंडल बेधैं॥ मोहि आसरा जा की भावै॥ बेटा की कछु याद न आवै॥ बे

जीवत सत कहिये नारी ॥ पारवती के अंश निहा-
री ॥ बोले आल्ह सुनो हो माता ॥ कलिजुग में राखो
इहि बाता ॥ संभरेआ की फौज हिनौरीं ॥ सामत खंड
खंड करि डारौं ॥ तो कुल काज चढ़ाऊं पानी ॥ भुव
मंडल में चलै कहानी ॥ इंदलि की रखवारी कीजो ॥
देवल दे की लाज निवाजो ॥ मल्हन दे बोली तब बानी ॥
आल्हा सीख हमारी मानी ॥ सामत सूर बिषम अति
सुनियै ॥ राखौ ईश्वा डंड दै दुनियै ॥ ऊदलि बैन नम्र
कि करि बुझिब ॥ अब इन बातनि काहे सुझिब ॥ शा-
इल भारत में बर जानें ॥ अब कौं भात भये सयाने ॥ दो-
हा ॥ चारि बार बिनती करी मानी नही लगार ॥ अब कौं
राजा समझि यो लखि सामंत निभार ॥ हम होते बिर-
खें नहीं बुरी तिहारी नरेस ॥ काम आय जब दिगवि-
हे महुवो नगर सुवेस ॥ तुम आगें परिमाल जूम-
रि हैं दोऊ भाय ॥ बैरे अपछरा हम जबहि राज चंदे-
ल सु जाय ॥ होन हार को मेटि है कही दिवल दे सुद्ध ॥
नीन सोचि चंदेल की पूत सुधारहु जुद्ध ॥ मसल सिका-
रि बाहिर कढ़े आल्हा ऊदन रेस ॥ उते मारि पथुआरि-
कें चामड़ धायो देस ॥ जारि गांव उजारि कैं लूटी रि-
द्धि अचेत ॥ डोरिलरी चंदेल जूथोरो जोरो हेत ॥ इत-
नी सुनि आल्हा सुभट उठ्यो लाल करि नैन ॥ चलौ भ-
ड़ो ढील न करौ कहै तेज हो बैन ॥ तब बरजे परिमाल
नृप आजु शनीचर बार ॥ काल्हि करौ पृथी राज सों
चौरें जुद्ध बिचार ॥ जा धरती को खाय कैं धूआं देखै
कोइ ॥ कहैं आल्ह परिमाल सौं कबी धर्म न खोइ ॥

रखा इंद की देखे बुरी अंग रखावत सूर॥ कहै आल्ह
रजपूत को दीजे नर्क जरूर॥ रखाइंद को घर ताकि कै
इंद्री रस हि कराय॥ कहै आल्ह रजपूत सों गहेंरनर्क
पराय॥ चेरी सों हांसी करे प्यार नृपति सों युद्ध॥ क-
है आल्ह रजपूत सों कीजे थान विरुद्ध॥ आल्हा क-
ही सबै सुनी तन की मन की बात॥ सूरज मंडल बेधि
हैं ते छत्री छित छात॥ राजनि आगें पैज करि कही व-
नाफल सोइ॥ प्रात करौं पृथी राज सों जंग विरुद्ध ह-
होइ॥ सबही को नृप सीख दै गेर महल फिर आय॥
रानी सों मसलत करै मन धरि चिंता लाय॥ चौपाई॥
बोलि चंदेल सुनौ हो रानी॥ अब तो दोष पाछिलो
मानी॥ आइ चढ़्यो चहु आन हकारो॥ करता बि-
न को है रखवारो॥ रानी कहै सुनौ हो राजा॥ करौ
सवेरें सेनि समाजा॥ प्रात जुद्ध कीजे आभूतं॥ मिलि
है राज दुहूं दल दूतं॥ आल्हा गयो हवेली आपुन॥ ब-
हलि इंदलि मिलिन समातुन॥ भोजन कीनो एक-
हि होइ॥ इंदलि सहित मिले सब कोइ॥ गेर महल
वहां कंदप खुल्ले॥ अधरामृत अमृत सम तुल्ले॥ छ-
प्पै॥ पहर निशा पिछिलिय जागि उठि नीर मगाइव॥
करि व न्हान दै दान ध्यान गोरख को लाइव॥ कि-
यो बनाफल होम नव ग्रह पूजा कीनी॥ हनू पताका
जंत्र धारि सोभित भुज दीनी॥ आइयो तुरी पाछिले
पहर तापर अस वारी कियव॥ सज्जि चले लरन च-
हुं आन सों हत्थ वीर लोहा लियव॥ तवहि उदलि लि-
य बोलि कही बातैं समझाइव॥ पृथी राज चहु आन

पैज करि करि चढ़ि आइव ॥ लेइ वार कर तेग देइ
दुर्जन के धाइव ॥ लरौ करौरन आजु अवनि पै सुजस
चलाइव ॥ धरि योन पावं पाछें अहुटि सूरन सों संग्र
मस चौ ॥ राखियो नाम जस राज को सीस छांड़ि रुंड-
हिन चौ ॥ चौपाई ॥ इह सुनि उदलि वचन उचारि व ॥
भाई तुम नीकी सु विचारिव ॥ सामंत नि सों खर्ग नि-
खेलह ॥ पृथी राज सों ठट्ठ न ठेलह ॥ देवल कहै सुनो
सुत दोई ॥ नैंन हला हल करो तुम सोई ॥ खांडद के
आगें सिर दीजे ॥ निर्भय राज स्वर्ग को लीजे ॥ नव
ढकु रानि ऊदलि की बुझिव ॥ सुनि हो सासु बचन
हमि सुझिव ॥ निहचै वेद नरक हित भाख्यौ ॥ पीवम-
रत तिरियातन राख्यौ ॥ दोहा ॥ पी अमृत तिरिया ८
रहै करैं पूत की आस ॥ सो रानी निहचै लहै महा ८
नर्क को बास ॥ पीय सुरनमाही मरैं रानी सती न होइ ॥
अगति जाय भटकति फिरै कहै गौरिजा सोइ ॥ पिय ८
मागे तन आदरै सौपें सकल शरीर ॥ उह रानी रज
पूत नहि परै नरक की भीर ॥ भयौ प्रात परि माल उ-
ठि न्हान दान दे भूर ॥ कियो नगारौ फौज में भयो त्या-
र सब सूर ॥ चौपाई ॥ राजा जागि नगारो कीनो ॥ आ-
ल्हा काजे आय सु दीनो ॥ सही नाद बाजी सह नाई ॥
बजी पाखरैं है वर ठाईं ॥ छंद पद्धरी ॥ बुलाय आल्हा
ऊदलि हु राज ॥ कीनौ सु नगारो वंव साज ॥ बुलाय
पुत्र नृप संग लीन ॥ बिलहना सूर बाठ न कीन ॥
चंदेल कही सुनि आल्ह सूर ॥ घोड़े सु बांटि दीजे ज-
रूर ॥ तब सुनी आल्ह बिद्या नि धान ॥ घोड़े मगाय

बोले जुवान ॥ दल ठेल तुरी कद्दलि हि दीन ॥ कुम्मे-
दरंग सुंदर नवीन ॥ बोदलादियो नव लेस काज ॥ तु-
रकी तेरह सा हर समाज ॥ हरि पाल के हरी बाजिहा-
ल ॥ चंचल सुचित्त सुंदर सुचाल ॥ ओपत्ति काज (
दिय जंग जीत ॥ सुरखा सुरंग सुहे अदीत ॥ नारे
न काज दिय तेज रूप ॥ ऐ राकि जाति लिय नृप (
अनूप ॥ जग निक्कु भाट बोल्यो हजूर ॥ दीनो अनू-
प हय राज मूर ॥ ताल्हन्न बोलि आगे नरेस ॥ दी-
नो कुरंग बाजी सु बेस ॥ सामंत और अनेक नाम ॥
अनेक बाजि दीने सकाम ॥ पाडुगा तुरी बुक सतह-
जार ॥ दीनी सु बांटि करि करि विचार ॥ परि माल से-
नि, हज्जार साठि ॥ साजियो सूर चंदेल घाटि ॥ पंचा-
स सहस जय चंद रैल ॥ ते किये सूर आगें हरौल ॥
हाथी सु दोय शत पंच फौज ॥ तीन से पील जय चंद
फौज ॥ हय पीठि आल्ह अस वार होय ॥ परि माल राज
उच्चरिय सोय ॥ सब फौज आपु सिर दार ईस ॥ सब जुद्ध
लाज तेरे जुसीस ॥ उच्चरौ बना फल सुनि चंदेल ॥ है-
वर भगाय दल करि व पेल ॥ परि हार उच्चरि व सुन-
हु राज ॥ आसेरे आल चढ़िये समाज ॥ पांच से पील
जासंग पूर ॥ परि है सु भारना सीस चूर ॥ इत सुनी बा-
त प्रथी राज पेल ॥ कीनी सु जुद्ध त्यारी चंदेल ॥ सुनि सूर
वीर चढ़ आन रान ॥ बाजंत बंब सगुहे जयान ॥ सुख (
अग्र कन्ह पुंडीर चंद ॥ विहसे सु सूर सुनि कन्ह दंद ॥
दिक्खियो फौज चंदेल राव ॥ कापंत देह डग मगत पा-
वाहुग मूंदि बैन किल कार कीन ॥ आल्हन्न पास बुलवाइ

लीन ॥ मोपरन जुद्ध ह्वै है सुजान ॥ पृथी राज फौज भारी प्रमान ॥ कीजिये आल्ह कछु अब उपाय ॥ संकट नियास मेरो मिटाय ॥ दीजिये दंड पृथी राज काज । छांड़िये आल्ह संभरि समाज ॥ दीजिये सुता अध । राज छांडि ॥ चहुं आन संग नहिं जुद्ध मांडि ॥ चौपाई ॥ कंपि कही परि माल नरेसह ॥ आल्हा आधो दीजे देसह ॥ लाख पचास दर्बि औ कन्या ॥ लै चहुं आन मिलाय सुधन्या ॥ छप्पै ॥ सुनिव आल्ह इमि बचन नयन रत्ते करि बुल्लिव ॥ दीन बचन रन चंढे राज ऐसे मति खुल्लिव ॥ एक लाख दश सहस सेनि मंडित चहुं ओरह ॥ आसु राज देखिये मारि मासंत न तोरह ॥ लडैं एक ते एक ह्वै देहि दंड पृथी राज तब ॥ रण चंढे पाउ पच्छे धरत छत्री धर्म घटि जाय सब ॥ कौं जगनिक सु पठाय मोहि कनवज ते बुल्लाव ॥ कौं राख्यौ पृथी राज मास द्वै तब कौं भुल्लिव ॥ काहे कों सजि सेन किये डेरा सनमुक्खह ॥ काहे खत भिजवाय लरन की सारी रुक्खह ॥ पहलेन दंड दीनो समुझि अब बानी कातरता करत ॥ तुम सिद्धि करौ गढ़ कों अबै पृथी राज सों हम लरत ॥ दोहा ॥ महला भोपति संग लै दल ते कढ़े चंदेला पिली फौज पृथी राज की मिली बनाफल मेल ॥ ब्रह्मा जीत संग बाप के गयो करन गढ़ मांहि ॥ जै त बनाफल ने करी चारि फौज रन मांहि ॥ छंद मोती दाम ॥ लखि राज नि फौज चंदेल चले ॥ तिहि ऊपर कान्ह अमान मिले ॥ तब आल्हनि रोकि लिये सबही ॥ करिबे हम जुद्ध खड़े अबही ॥ नृप की खुसी देखन कों गढ़ सं

हम जुद्ध करैं तुम सों अड़सैं ॥ तबकान्ह कही नृपभा
गि गयो ॥ तुम चाकर नैं कहा जुद्ध रह्यो ॥ जिय मैं म
गु हारि गयो जिन को ॥ दल जीति सकै कहु क्यों तिन
को ॥ तब आल्ह कही चहुं आन सुनों ॥ तुम और
न में हम कों न गिनों ॥ जिनि चाबि चना भ्रम सों नि-
रचें ॥ करि है सब की किर चैं किरचैं न करो अब
ढील घरी पल को ॥ लखि यो तुम जुद्ध नना फल को ॥
इत लक्खि बिलोकिय सेन घनी ॥ चहुं आन बनाइय
चारि अनी ॥ मुख अग्र सु कन्ह अमान कियो ॥ भर
चंद पुंडीर सु संग दियो ॥ तिन में परि हार सु लक्खन
यं ॥ संग संढि मराइ सुअक्खनयं ॥ अचले सहुरी (
सिंघ सो गुर यं ॥ जहं जद्द्व राय अभ्भी स्वरयं ॥ इतने
सिर दार अगे धरियं ॥ फिरि दाहिनी बाजु करो करि
यं ॥ कछ वाह पजून सु पाल्ह नयं ॥ लिक्क वार जुझार
सु जाल्हनयं ॥ नर सिंह पवार सु तोरनयं ॥ संग (
धामर धीर अभोरनयं ॥ बिझराज समाज सयं धर-
यं ॥ संग दाहिमा सामत दावरियं ॥ जहां खिचिय
देव सुजैत मिल्यौ ॥ संग दाहुली राय अमार चल्यौ ॥
दिखि दाहिनी सामत एक रियं ॥ हनु मंत समानबली
बरियं ॥ हिसि बाइय भीह चंदेल किये ॥ अचलेसम
ले सिय संग दिये ॥ देइ दीन सुमीर गंभीर नरं ॥ सत
ताइय संभर ईस बरं ॥ जहां मल्ल चंदेल सु पूरनयं ॥
दिय बाईं दिसा मुख नूर नयं ॥ जहां गोनगा मल्ल कमच्छ
मिले ॥ परि हार सुनाहर संग चले ॥ सब सामत सामंत (
संग दिये ॥ जहां गंत खगार निसंक लिये ॥ बाय सा (

सक मध्वज बिक्रमयं ॥ जहाँ गौर सु छत्रिय सो भमि-
यं ॥ हल कारिय सेन नरेस लियं ॥ दिस पच्छिम सा-
मत ये करियं ॥ चतुरंगिस सेन बनाय लियं ॥ अन-
सी मन सें आयसुद्ध कियं ॥ उत लक्खन पौन सुवीर
कियं ॥ हल कारिक मध्वज लोह लियं ॥ कम धुज्ज सु
लक्खन गाल्ह कियं ॥ चहुआन सु मंगल संग दियं ॥
सिक बार सु तोमर पाल्हनयं ॥ जहां मोरिय रूप सुजा-
ल्हनयं ॥ जहां जद्दव राय सु रूप धरं ॥ तहां चालुक सा-
रंग बीर वरं ॥ तहं गाल्हन वेग हरोल कियं ॥ दल बी-
स हजार सु संग दियं ॥ बिच तीस हजार सु गोल र-
ची ॥ सिर दार सु लक्खन संग मची ॥ हय पीठि सु
आल्हबना फल यं ॥ तिहि अग्र सु ऊदलि है सु गयं ॥
दिसि बाइय मोहन दास कियं ॥ सुर कासिय जुद्ध
को वर्न लियं ॥ नर सिंह सु सिंह समाज वरं ॥ गज
राज सु साजि चल्यो अभरं ॥ तहाँ सैंगर राय समा-
न भयं ॥ जिन बाईं दिसा भरने भरये ॥ दिसि दाहि-
नी ओर सबै सुरयं ॥ दुनियं दल रोकि अनेक हयं ॥
बरनें अति तोमर मोहन यं ॥ परिमाल सबै दल सो-
हनयं ॥ महि कर्म सिवागर आगरयं ॥ इतने भट दा-
हिनी ओर भयं ॥ दल बानिया के सब संग चलं ॥ म-
करंद सु कायथ भूरि बलं ॥ लखि देव करन्न सु रज्ज-
नयं ॥ काम चंद सु हाप गुरज्जनयं ॥ बड़ गुज्जर बाग-
री पच्छिमयं ॥ सब फौज बनी सुभ रच्छनयं ॥ चौ-
पाई ॥ पंग पचास हजार चले पिलि ॥ और पचास चं-
देलन को मिलि ॥ चारि फौज आल्हा लखि सारद ॥ थ

थी राज सों वीस हजार हू ॥ दोहा ॥ देखि फौज परि मा-
ल नृप कांपि चल्यो तन पान ॥ दश हजार भट संग
ले गये महोवे थान ॥ मल्हन दे आवत लखे ब्रह्मजीत
परिमाल ॥ महा दुक्ख दारुन भयो बाढ़ो कोप करा-
ल ॥ छंद भुजंगी ॥ कही बात रानी महा राज ऐसे ॥ अनी
छोड़ि आये इहां आप कैसे ॥ सुनी बात राजा कही रा
ज रानी ॥ पृथी राज कों देखि कें भीति मानी ॥ सुता रा-
ज आधो विचारो सु मैंने ॥ मिलैं लाख पंचास लै द्रव्य
बैंन ॥ नहीं आल मानी कही आनु मेरी ॥ कही जाउ मो
सों कलिंजर कनेरी ॥ करैंगे पृथी राज सों जंग भारी ॥
कहो जो वाकू सो करों आजु प्यारी ॥ कही नागईंरा सु
चंदेल कानी ॥ ब्रह्माजीत की ओर रानी रिसानी ॥ अरे पूत धिक्कार
मोकों महा है ॥ कितू कर्म छत्री न जाने कहा है ॥ नहीं जानतो बीजचंदे
ल काको ॥ कहायो सुमू वीरिया पूत जाको ॥ भयो कु-
खि मेरी बडो दुःख मोकों ॥ परे कूप कों नानहीं ठौर तो-
कों ॥ सुनी मात कीयों ब्रह्मा जीत बानी ॥ भयो दुक्ख
मन में सु धिक्कार मानी ॥ कही मात मो सों कहै बैन ऐ-
से ॥ हनों चाहु आंन करी सिंह जैसे ॥ कहौ कैसे नमा-
निये सासन पिता को ॥ लगै दोष भारी कहौं मैं हिता-
की ॥ भयो वृद्ध राजा गई बुद्धि जाकी ॥ भयो कालजो भ-
ई दसा दीन ताकी ॥ लये जीति के देश अनेक जानै ॥
परवास्यो सही सिंधु में खग्ग तानै ॥ दिना फेर की बात
माता न जानी ॥ बली स्यार तें होत कातर गुमानी ॥
इन्हैं देखि व्याकुल सु आयो करन में ॥ चलैं जाउ गोमा- म॰
तहां ई लरन में ॥ करों गोधरा में कछू नाम ऐसो ॥ लरों

गा सुनोंगी श्रवण मांहि ते सो ॥ करों ऊजरी कोखि ते-
री मह्रा ही ॥ सुजस को लहों आजु रन में लहाही॥पि-
ता की करो सेव चिंता न कीजे ॥ पति ब्रता ही को मह्रा
धर्म लीजे ॥ छपै ॥ सुभट सूर ब्रह्मा जीत वच्चन जिमि
हूनि उच्चारिव ॥ संभरेस की मारि फौज सब सूर विता
रिव ॥ हरहुं गर्व चहुं आन लरहुं विन सीस धरापर ॥
करहुं सुजस जग माहिं भरहुं खप्पर जुग्गि निदर॥गि
द्धनि अघाइ पूरन करहुं शिव माला हरण वरहुं॥शो-
णित समुद्र तीर जाहुमा मल्हन दे उज्जल करहुं ॥ दो-
हा॥ ब्रह्मा जीत आयो वगदि छत्री धर्म विचारि ॥ लर-
न पग्ग मन में करन पृथी राज सों रारि ॥ जुरी अनी
सूरनि दपटि लरन हुं कारि हुंकारि ॥ दुहूं दलन के वी-
च में होत मार ही मारि ॥ छंद भुजंगी ॥ दुहू सेन मिल्ली
दुहूं वाग लीनी ॥ दुहू धारि धर्म वरन अष्ट कीनी॥ दु-
हूं सांग कड्डी दुहूं कोर वड्डी ॥ दुहूं वाक वानी सब दुहु-
वड्डी॥ वजे भेरि नीसान जंगं तवल्लं॥ वजे शंख तुरही ह
थ्थलं मुसल्लं ॥ दुहूं नाद कीन्हे सुरं शंख भारी॥ दुहूं नामहं
कै सु हेरे हुं कारी॥ कहै चंद ऐसे सुनो चारु आनं॥ च-
लाओ सुने जासु वाई भुजानं॥ सुखं मंत्र जंपे सु दुष्टं भवा
नी ॥ मिलाओ वलं बांधि धावै जमानी॥ आगे कै नसे-
ना सु चंडोल हाथी॥ रहैं पुट्ठि असवार विलहंत साथी॥
नचायं तुरी कान्ह पट्टी उठाई॥ किधों राम पै राम भौंहें च
ढाई ॥ आगे आप हाथी नपै हाथ वाहैं ॥ वरं दंत रवैं।
चैं उपारैं उमाहैं ॥ उपारैं दंतं वली वाहु जोरैं॥ गहैं पु-
च्छ सुंडाव गामें झमोरैं ॥ कहूं डील सुंडान पै तेग तोनैं

गहैं कोपि दंसं धरन्नी मिलावैं ॥ कहूं अंग घायं कहूं कीन रोरैं ॥ कहूं मारु मोरैं कहूं सूर दौरैं ॥ कहूं पील सुंडं पकरि खैंचि मारैं ॥ कहूं सूर सीसं सिरं तेग झोरैं ॥ कहूं कायरं खाय भै जाय भाजैं ॥ लरैं सूर केते रनं लाज लाजैं ॥ कहूं बीर बाने तराने तराजैं ॥ कहूं युद्ध के आयुधे हाथ साजैं ॥ कहूं कीकि हीकं कटारी चलावैं ॥ कहूं भल्ल नारा चहुंधी बहावैं ॥ कहूं कंध बंधं कहूं रुंद हीकं ॥ कहूं घाव कुन्ती कहूं पीक ली- के कहूं हक्क धक्कं उहूं सैनि सोई ॥ बजा मेघरं लोहनि मोह होई ॥ करैं खंड खंडं अखंडं अखारे ॥ किते एक जोधा- न के सीस फारे ॥ बरं सांगि लागें उरं फार होई ॥ गिरैं न हु तासे कला चूकि सोई ॥ लगैं तीर हीकं हियं होस भा- जैं। गहैं पार ह्वै कै धरन्नी समाजैं ॥ किते मारु मारं किते हाय हायं ॥ किते पाय प्यादे लरैं चाय चायं ॥ गिरैं सीस तेगं गुहैं गौर मालं ॥ मनो भौंर फांसी उतारं कुलालं ॥ चलैं बीर बेताल हालं मचंडं ॥ लरैं पंड वांसे करैं खंड खंडं ॥ भुसंडैं बहैं सो भुजा जंघ चंगं ॥ अखंडं वली धीर बारं अभंगं ॥ बहैं कंधरी बान बेधं खुलामें ॥ परैं मुंड- धरनी सु रुंडं नचामें ॥ गुरंजं बहैं सीस मानी भवानी ॥ बरच्छी तिरच्छी लगामें अमानी ॥ बहैं खंजरं मारु मा- रंत तारं ॥ परैं पील धरनी समानं वितारं ॥ करैं वार हं- का कटारी करूरं ॥ परी मारु मिन्नं परे चक्र चूरं ॥ ऐसी- भांति कन्हं कियो जुद्ध भारी ॥ मिटौ ध्यान संवा खुली रुद्र तारी ॥ दोहा ॥ कन्ह कटक कीन्हो कहर हटक परी म- न माहिं ॥ भटकि भीर भाजे वली को ऊ बगदत नाहिं ॥ छंद रसा वली ॥ कन्ह कोप्यो जवै ॥ कीन जुद्धं तवै ॥ धाय सू-

म

घै घली ॥ सर्ब फौजैं दली ॥ धाय सूरं गहैं ॥ डारि धर
नी रहैं ॥ मार वाणं कियं ॥ खाय सेलं लियं ॥ राय राजं
दुखं ॥ खाय रारैं मुखं ॥ वीर नादं रचैं ॥ चाय केते मचैं ॥
वीर वानं धेरे ॥ खाय सूरं भरे ॥ फौज कंपी जवे ॥ कन्ह
हेरयो तवै ॥ छप्पै ॥ देखि कान्ह को जुद्ध आल्ह लक्ख-
न सो बुल्लिव ॥ ताल्हन वेग पठान रूप मोरी रव खुल्लिव ॥
सो लखी वीर केसरी वीर कल्याण वीर वर ॥ तोमर वी
हित वीर धीर बोले सु पीर पर ॥ चहू आन कन्ह भारी
प्रवल जुद्ध करौ सब एक ह्वै ॥ दल थंभ आपु हय छं-
ड्डि कै संभारो सेना सवै ॥ ताल्हा हय दौरा ढुकै संभारी
सव सेन ॥ लेहु लोह सव हाथ में लरौ करौ हिय मेन ॥
छंद पद्धरी ॥ धामंत ताल्हु संभारि सेनि ॥ सिरदार आठ
वर गहे तेनि ॥ गोइंद राय हरि चंद सोइ ॥ इक लवला
इ दल सलख लोइ ॥ मोरी सरू सेंगर अमानि ॥ जादों
सु चंद वर गह्यो पानि ॥ मंगल चौहान तोमर जुवान ॥
चालुक के सरी सुवल मान ॥ वड गुज्जर राना महावा
हु सुज्जान वैस संभरि सुचाहु ॥ नर हरि य वैस कायथ
कल्यान ॥ सेंगर वराय जाल्हन जुवान ॥ बंघेल सूर पू-
रन अमोर ॥ लोधी सुसीस रायं सुजोर ॥ गोआल सु व-
घेलो रूप राज ॥ गोतम जुझार इंद्रलि समाज ॥ पाल्ह-
न पमार भग वान सूर ॥ निंडुर हराय डोंगर जरूर ॥ अ-
गनि कू भार जाल्हन जुवान ॥ विनियां सु भैरुवा सुच-
ल वान ॥ कादुम्य कामे चंद वलिष्ट ॥ मकरंद जादु धी
वास दृष्ट ॥ हरि चंद वेव भान दुरित जोर ॥ किरपा सु
गौर जुद्ध अमोर ॥ मंदोर भूपति जरा जसूर ॥ कन्ह वा-

हराम सींनि सुनूर ॥ गंभीर तेग अज्जान बाक ॥ अनु
रुद्ध सिंह सेंगर सुनाह ॥ चिर सिंह वीर मुरलो समूर
जद्दुगा राय कम नैन पूर ॥ परि माल सेंनि कतेन हजू
र ॥ नवरंग राय रघु वंस सूर ॥ प्रथी राज सैंनि सामंत
दंद ॥ कय मास कन्ह पुंडीर चंद ॥ निंडुर हराय पज्जू
न भाहु ॥ वीरं वलिष्ठ नर सिंघ लोहु ॥ हाहुली राय हं
मीर धीर ॥ लक्खन पमार संजोग हीर ॥ रावत्त राम तोंव-
र पहार ॥ मंकिमा राय चिर सिंह सार ॥ वर अत्त ताय
चहुं आन बंक ॥ नर नाह कन्ह आगें निसंक ॥ चामंड
राय धामर सुधीर ॥ खेता पमार पाल्हन सुवीर ॥ प-
रि मान्न मैंन लक्खन सुधाय ॥ प्रथी राज सैंनि निंडु-
र हराय ॥ धाये सु दोउ मुक मेल कीन ॥ धरि धर्म हा
थ किरवान लीन ॥ दोहा ॥ लक्खन सी परि माल दल
निंडुर दल चहुं आन ॥ आहुरि यों सामंत रन रन मे
धीर अमान ॥ चौपाई ॥ लक्खन गंग भती जौ दल में ।
प्रथी राज निंडुर दल जित में ॥ लरें वीर आहुरे जंग-
ह ॥ लाल चंदेल संभा लौ अंगह ॥ छंद त्रोटक ॥ लखि
लक्खन निंडुर सी धरन्नं ॥ चहुं आन चंदेल निरक्खि
भवन्नं ॥ कस भुज्ज सु दाम अचोर अरे ॥ चहु तान
जजीर निसों जकरे ॥ हल कारि दुहूं जन लोह लियं ॥
निरखे चहुं आन चंदेल हियं ॥ लगि तीर सना हनि
पार कियं ॥ मछरी मनो जाल में मच्छ लियं ॥ लगि सेल
बखत्तर पार भये ॥ सुख पन्नग बारि में काढि ल-
ये ॥ किर बान वहैं भुज दंड मथं ॥ तरबूज मनौ हर
कंत भथं ॥ तरवारि चलैं दुहुं ओर लरं ॥ बिन सीस लरैं

सिर टूटि परं ॥ गहि लेत गयंद नरिंद करं ॥ पकरैं क-
र मुंड फिराय तरं ॥ उच्च काय कै पुच्छव नील हिंवं ॥
हनु वंत द्रोना गिरि लौं गहियं ॥ हय के गहि पाय पर-
कि धरं ॥ तर वारि दई असवार मरं ॥ इक सस्त्र लै-
भर वत्थ वली ॥ तहं श्रोणित की सरिता जु चली ॥ इ-
हि भांति दुहूं जन जुद्ध कियं ॥ तजि संक निसंक समा
नि हियं ॥ जुरि लक्खन निंडुर वीर महा ॥ इनि दोउन
नैं वड़ जुद्ध गहा ॥ दोहा ॥ लक्खन सौं परि माल दल निंडुर द-
ल चहुं आन ॥ आहुरि यौं सामंत ए सरसे वीर अमा-
न ॥ छंद पद्धरी ॥ विरचियो लोह लक्खन सु धाय ॥
ता समैं कोपि निंडुर हिराय ॥ बाजंति जंब पील न सुपी-
ठि ॥ सेना सुजान की तेज डीठि ॥ दल कारि सेनि
किल कारि आय ॥ अप अप्प जीति चाहंत सु भाय ॥
लक्खन जुटंत बजरंग वीर ॥ निंडुर हराय सज्जंत
गहीर ॥ हं कारि शब्द वल करत हंक ॥ दल दप दिस्स-
र दौरैं निसंक ॥ विफुरंत वीर बरनेत सूर ॥ मुद गल
उतंग मारत जरूर ॥ लगि खील खील हुइं जात सीस ॥
दश पांच आठ है वारि वीस ॥ गहि सुंड सुंड फेरंत पा-
य ॥ हय फेंकि देत पूछैं फिराय ॥ मारंत पील तोरंत
सुंड ॥ वाहंत तेग डोलंत रुंड ॥ गहि लेत एक कों एक
धाय ॥ गहि कमरि आन मारत फिराय ॥ कायर कि-
तेक कों पत डरात ॥ केतेक सूर वीरं लरात ॥ केते-
क तेग लगि होत रुंड ॥ केते क हाव बिन सीस मुंड ।
घायल कितेक धर पर अचेत ॥ दुहुं ओर जोर भयो
वीर खेत ॥ लक्खन हि संग ताल्हन पठान ॥ निंडुर-

हसंग सेंना सुजान ॥ हज्जार संग पंचास मीर ॥ लक्ख-
न हिसंग सज्जनि गहीर ॥ सिर दार आठ कमधुज्ज-
संग ॥ दौरे सुगोल करिकें अभंग ॥ निंडुरह राय पर
हल्ल कीन ॥ ताल्हन पठान आगें नवीन ॥ इक लौजु दे-
खि निंडुर हराय ॥ आयेजु सूर परिमाल धाय ॥ खोलि
यो आंखि पट्टी सु कान्ह ॥ लै करि गुरज धायो अमा-
न्ह ॥ सामु हैं आय ताल्हन्न वेग ॥ दीनी सु कन्ह के आ-
य तेग ॥ दीनी गुरज्ज ताल्न्ह सीस ॥ ह्वै गये मूंड़ के-
टूक वीस ॥ रुंड हकारि फिरि हल्ल कीन ॥ कय मास
सीस में गुरज दीन ॥ फिरि दयौ कान्ह मुदगर फिरा-
य ॥ टूख्यो पठान धरनी पराय ॥ तव दई तेग कय मास
दौरि ॥ ह्वै गये टूक धरके वितौरि ॥ सौ निंग देखिता-
ल्हन्न काम ॥ चलियो जु साजि सेंगर सुठाम ॥ इनमें
पज्जून कूरंभ धाय ॥ सौं निंग उतै सैंगर वराय ॥ लइ
हाथ सांगि सेंगर सुसूर ॥ दीनी पजून के हीज-
रूर ॥ हीकं अपार चोटं लगाय ॥ पुनि लई तेग पज्जू-
न धाय ॥ दीनी दुहत्थ सीसं उड़ाय ॥ गिरि परे धरनि
सैंगर वराय ॥ इत लगी सांगि हीकं अपार ॥ भये अति
अचेत पज्जून सार ॥ फिरि पिल्यो रूप मोरी मरद्द ॥
केतेक सूर वरधे जरद्द ॥ चंदेल फौज के सूर धाय ॥
मंगल चौहान गौरे नराय ॥ केसव सुदा समल्हन अमा-
न ॥ सिर दार आठ सुंदर सुजान ॥ मच कंति धर-
नि लच कंत सेस ॥ कस कंत कूर चंदेल देस ॥ वा-
जंत वज्र करि सभरि सार ॥ मानों करंत परवत्त पा-
राहूत पृथी राज के सूर धाय ॥ सिर दार आठ भांजे सुभा-

پدماوتی کھنڈ

य॥ कुप्पै॥ हनिं ताल्हंन पठान कन्ह नैं कारे भागद॥ सेंगर सो निग पेर घाउ कीन्हे बहु ज्वानह॥ लंडे एक तें एक रुंड खेलें विन सीसह॥ कन्ह गुरज्जह मारि कै ताल्ह सिर कीये वासह॥ और हजार रजपूत कटि हाथी पंच पचास गिरि॥ चहुं आन हांक सामंत करि चली पंग की फौज फिरि॥ दोहा॥ पृथी राज दल में परे हाथी मस्त पचास॥ अरु हजार रज पूत कटि घायल सूर प्रकास॥ कछू बांहे पज्जून के लगी सांगि बहु सोइ॥ परी मूर्छा धरनि पै है सामंतन खोइ॥ भजी फौज लाखन लखी ताल्हन आये काम॥ हांक मारि कम धुज्ज नें वल करि कें दल थाम॥ चौपाई॥ जुरी सेनि भाजी सब सोइय॥ फिर रज पूत एक तन होइय॥ जुरी सेनि छत्तीस हजारह॥ भये अगारी फिर सिर दारह॥ निंडुरह राय फते सिर बुल्लिव॥ वीर वीर तन में रस फुल्लिव॥ जुरी जंग फिर सामंत धाये॥ आयुध लये क्रोध उर छाये॥ छंद मोती दाम॥ हजार छत्तीर जुरे रन जुद्ध॥ सजे कमधुज्ज सु लक्खन सुद्ध॥ कूतै भर लक्खन नामिय जुद्ध॥ उतै रुप्यो निंडुर राय सों जुद्ध॥ भये भर लक्खन नामिय सुद्ध॥ वहैं किर वान सु ज्वान न हत्थ॥ करैं दल हंक सवै समरत्थ॥ भभक्कति सेंनि चट क्कति तोप॥ कर कवत बान दुहूं दल कोप॥ भनक्कय वान सु पंजर वेधि॥ कर कैं कमान दुहूं कर छेद॥ लगैं उर सांगि सु पील गिरंत॥ सनंमुख सूर उपारत दंत॥ धरैं कर खप्पर जुग्गिनि जोर॥ हंकार तिडोलति वोलति मोर॥ लगै सिर तेग नि सूर परं॥ तव-

ही सु बरं गला आय बरं ॥ लगैं उर खंजर पंजर पार॥ करैं किलकार सु जुग्गिनि लार ॥ झट कत एकन कों गहि एक॥ पट कत जाय धरापर टेक ॥ लट कत सीस हट कत सूर ॥ चट कत तोप भट कत भूर ॥ सट कत तेग नट कत निद्ध ॥ पट कत बीर गट कत गिद्ध ॥ ठट कत कायर घायन देखि॥ छट कत सूर धरा पर पेखि ॥ वहैं किर वान परैं सिर सूर॥ करैं बपु रोस-दुहूं दल पूर ॥ मिले दल लक्खन निंड्डुर राय ॥ भये हग चारि किए लिय चाय ॥ लई कर लक्खन तेग सहाय ॥ दई सिर निंड्डुर कें सुख पाय॥ कह्यो लगि टोप लगी सिर आय ॥ पर्यो धर मूरछि निंड्डुर राय ॥ लख्यो जब लक्खन कन्ह सु धाय ॥ लिये सु कमान दिये सर आय ॥ उठ्यो जब निंड्डुर लीयें गुरज्ज॥ दई वर लक्खन सीस सुरज्ज॥ हजार कटूक भये सिर सोह ॥ परे धर लक्खन लक्खन होह ॥ भयो फिरि मूर्छी निंड्डुर राय ॥ गह्यो धर लक्खन अंत सु पाय ॥ लई किर वान सु कन्हर कोपि ॥ चले कय गास लिये सुख ओपि ॥ इते सन मुक्ख सु बाबुल सज्जि ॥ भये भगवान हरोल सु गज्जि ॥ चले दल पत्ति लिये कर-वान ॥ चले नर बद्द नरायन ज्वान ॥ मुकंद सु नायथ छप्प सु होइ ॥ इते जुर पंग की फौज में सोइ ॥ जुते भय चंद पुंडीर जुमान ॥ उतै भय बाबुल औ भगवान ॥ लयो खग चंद पुंडीर सु कोपि ॥ दयो भगवान के सीस में रोपि ॥ लयो सिर पार धस्यो धर धीर॥ तबै हत खादय बाबुल वीर ॥ नरायन दास नर ब्बद को-

पि ॥ मिले दूत कन्हर आय सु रोपि ॥ मुगद्दर कान्ह पै-
तीनि सुडारि ॥ लगे नहि नेंक सनं मुख चारि ॥ गहे
जब कन्हर तीनों चरन्न ॥ पट क्कियले करि पीन धर
न्न ॥ भये धर चून गये जम लोक ॥ भगी जय चंद की
फ़ौज स सोक ॥ दोहा ॥ भजी सैंनि सिर हार है घां भी-
दल पति छोरि ॥ जात कहा भाजे करो पृथी राज सों रो
रि ॥ छंद भुजंगी ॥ पिल्यो वैस दल पत्ति सन मुक्ख
सूरो ॥ गहें तेग हत्थं समत्थं गरूरो ॥ पिल्यो जंपि यो-
जो धमक रंद वीरं ॥ अखारे पड़े तेप चारे अधीरं ॥
धरें नैंन सीसं मरें खेत हेतं ॥ फते खामि रंहैं भये
जो अचेतं ॥ वजे नाल गोला हयं सीस रक्कैं ॥ किते का-
वरं अंग जंगं करक्कैं ॥ मिले हत्थ हत्थं समत्थं सुवा-
नी ॥ मनो थान खेलंत हेरी रमानी ॥ फुलें फूल फूलें
मेंनी लेरुटक्कैं ॥ किते कायरं भाजि न्यारे फटक्कें ॥
हुते चंद पुंडीर मकरंद धायो ॥ दुहूं हत्थ तेगं हयं
सो न चायो ॥ तवे चंद वोल्यो सुनों कायथ द्रोहो ॥ करो
जाय लिखनी कहा जुद्ध कद्दो ॥ सुनी चंद मकरंद
मुक भल कीनो ॥ लयें हाथ तेग अवेग नवीनो ॥ दई
चंद पुंडीर कै सीस जानी ॥ मनो वीज आकाश तें किल
मिलानी ॥ लटक्के सु चंद धरा मूरछायो ॥ तिही ऊपरं
दौरि कय मास आयो ॥ दई आय कय मास मकरंद
हुँसं ॥ गई अंग संगी भई पार सीसं ॥ भई लागि न्या-
री सिर फार दोई ॥ मनों वाढिये फारि तर वूज सोई ॥
पर्यो कायथं सो धरंनी धरा मैं ॥ वर्यो अपसरा लै-
गई लै वरा मैं ॥ गिर्यो देखि मकरंद दल पत्ति धायो ॥

लये हाथ कुन्ती हयं सोदवायो ॥ दई आपही कंकयं
मास पीकं ॥ भ्रमो सात वारं गिरो सूर सीकं ॥ लख्यो
कान्ह कय मास सो सूर छायो ॥ दलं पत्ति पै आय मुग
दर चलायो ॥ भयो चूर चूरं दलं पत्ति खेतं ॥ भयो चंद
पुंडीर दल में अचेतं ॥ चौपाई ॥ कहैं आल्ह उद्दलि
सुनि भाई ॥ कनवज कुम के काम सब आई ॥ लाख-
न लाल्हन बचन निवाहे ॥ पृथी राज दल खर्ग न गाहे ॥
दोहा ॥ कही बात कनवज्ज में सो सांचो कर दीन ॥ ल-
डे मरे मारे बहुत छत्री धर्म सु कीन ॥ ब्रह्मा जीत बुला-
य कैं कहे आल्ह इमि बैन ॥ जाउ आपु परि माल पै क-
रो महोवे चैन ॥ छप्पै ॥ उचरि आल्ह इमि बच्चन सु-
नो ब्रह्मा जीत सु कान्हह ॥ आपु जुद्ध रण छंडि जाउ
जीवत घर मानह ॥ हम मरि हैं सब सुभट काम आसें
घर काजह ॥ तुम कालिंजर जाउ मिलो चंदेल समा
जह ॥ कीजियो बैन अच्चौन तजि दंड दर्वि सुखभक्खि
यो ॥ मिलियो सुराज चहुं आन सों नगर महोबो रक्खि
यो ॥१॥ सुनिब आल्ह की बात कही ब्रह्मा जीत कुमार
ह ॥ पृथी राज सों करैं जुद्ध कीजे नहि बारह ॥ लरैं धरैं
इह टेक करौं खर्गन कौ ख्यालह ॥ आपु जुद्ध मन नाहिं
कहो मो सों दर हालह ॥ खंडो सु फौज पृथी राज की ग-
म साखि ऐसें कहन ॥ देहुं सांगि चहुं आन के डारि दे-
हुं आसन सहित ॥ छंद पद्धरी ॥ उच्चरे ब्रह्मा नंद सुनो
आल्ह ॥ चलिये जु सूर सामंत चाल ॥ लीजिये बाग नि-
र मोह होय ॥ करिये न दूसरी बात कोय । किज्जिये
जुद्ध अब मोह छंडि ॥ चहुं आन रान के गर्व खंडि ॥ सुनि

आल्ह बैन ऊदलि बुलाय ॥ दीनौ सु बीरु भारत्थ भाय॥
सामंत पास बुल्लाय लीन ॥ सब सों सु नाय करि बैन
कीन ॥ सेना सु साठि हज्जार तोलि ॥ उच्चरे आल्ह जि-
य संक बोलि ॥ कनवज्ज नाथ दिय कुमक युद्ध ॥ आ-
ये सु काम सामंत जुद्ध ॥ कमधुज्ज लखन ताल्हन प-
ठान ॥ पहिलें जुटंत परि है जिठान ॥ परि माल सूर स-
ब हीस लाल ॥ चंदेल नौन कीजै हलाल ॥ लीजिये
लोह निर मोह होइ ॥ चाहो सु जीव घर जाइ सोइ ॥ चो-
पाई ॥ या विधि आल्ह बनाफल कही ॥ सब रजपूत एक
तन सही ॥ छत्री धर्म काज सिर दीजै ॥ जी चाहै सो रस्ता
लीजै ॥ दोहा ॥ आल्हनु मंत्र सुनाय यो सबनि चित्त दिय खे-
ल ॥ अवहिव रै सुर अप्छरा नौंतु उजारि चंदेल ॥ छंद
भुजंगी ॥ कही वात आल्हा सुनौं ब्रह्म जीतं ॥ करो मन्ति
चिंता लहो बात मीतं ॥ अतुलं जुद्ध सामंत देखे न भारी॥
करो जुद्ध परि माल नंदं विचारी ॥ तजो जुद्ध सामंत नृप
पास जालू ॥ करो जाय निर संक सेवा पितालू ॥ लरैं गे-
मरैंगे करैंगे न लाचौं ॥ करैंगे सु परि माल को लौन सां-
चौ ॥ टरे नाहि हांते करैं जुद्ध भारी ॥ सबै एक है केल-
ड़ें तेग धारी ॥ मरैं जांय हांते विजै पाय कै कैं ॥ सबै जा-
उ घर को यही बात लैकैं ॥ कहो जाय चंदेल सो वात
येही ॥ मरे कै विजय पाय बग दे सु वेही ॥ विजै पाय कै
आय तोते मिलेंगे ॥ मरै तो सुजस ए अम नि पै चलें-
गे ॥ तबै दीजियो दंड पृथी राज राजे ॥ मिलो आय आ-
गे रहैं राज लाजे ॥ महोबो सुनो रक्खियो दंड दैकै
सुता दीजि यो राज निर संक ह्वैकै ॥ सुनी सूर बानी ब्र-

स्र जीत सारी ॥ तबै आल्ह सों बैन बोल्यो हँकारी ॥ ध-
नी होय धरती न कों भोग भोगै ॥ मरै नाहिं जो ते हँसै
सर्व लोगै ॥ नहीं बीज रजपूत को जाहि जानो ॥ लियो
नारि फिर ताहि सकारैं बखानों ॥ सुनी व्यास बानी ब-
ड़े मुक्ख गाई ॥ सबै लोग मन में पुरानं जताई ॥ दो-
हा ॥ जा धरती कों ख्याय कें मरैं न ता पर कोढ़ ॥ अंत का-
ल नर कढ़ि परै जग में अपजस होइ ॥ राजा धर जीतैं सु
मरैं करैं स्वर्ग को भोग ॥ चहूं चक्क जस विस्तरैं हँसैं न
दुर्जन लोग ॥ चौपाई ॥ जा धरती को भोगै भोग ॥ जातु
सु नाहि मरतहै लोग ॥ सो रानी ने फिर तौ लीनो ॥ ब-
ड़ो व्यास यह निर्नय कीनो ॥ जो रजपूत नगति कों
पावै ॥ जम को दंड सीस पर लावै ॥ चौरासी जोनन में
भट कै ॥ फिर कलीर नरक में पट कै ॥ धरती जीति
न राजा मरई ॥ नाम जार जात सब धरई ॥ सुरगुरु
बेद पुरान बखाखी ॥ ताकी साखि ब्यास मुनि भाखी ॥
ताही मारग हम कों चलनौं ॥ जुद्ध जुरैं दुर्जन दल द-
लनौ ॥ तातें आल्ह बात यह करौ ॥ चहुं आमन कें गर्व
हि हरौ ॥ छप्पै ॥ आकुटि महोबें जाउं आप शिक्षा हिय
धारैं ॥ देहिं दंड पृथी राज सुना अध राज बिचारैं ॥ जग
में अपजस होय होय बैरिन को हासह ॥ नाम धरैं सब
कोढ़ नरक कों पावै बासह ॥ पृथी राज फौज ठाढ़ी
लरन तुम अब दूनि बात निकरत ॥ सजि चलहु कर-
हु रन आल्ह अब सुजस होत जीत न मरत ॥ १ ॥ फिर
सुकहत ब्रह्मा जीत आल्ह बानी सुनि लीजै ॥ करौ पै-
ज परि माल मारु सामंत नि कीजै ॥ बरहु स्वर्ग अप्सरा

हरहु चहुं आन गर्व सब ॥ भरहु जुगिनी पत्र रुधिर
सों सु कर मुंड भव ॥ परि माल नंद करि उच्चरत टूक
टूक है कै लरहु ॥ कांटो सु दंत हस्तीन कै मल्हन देव
जल करहु ॥ छंद मोती दाम ॥ कहै ब्रह्मा जीत सु वै-
न हुलास ॥ सुनो सब फौज चंदेल निवास ॥ सुनो
उच बानिय ऊदलि आल्ह ॥ सबै चलो सूर छत्री ध-
म चाल ॥ बुलाइ य केशव दास चंदेल ॥ करौ अरि
सों अब फौज अमेलं ॥ लियौ राय सिंह सु गौर बु-
लाय ॥ सज्यौ संगलो धिय ईश्वर राय ॥ बुलाय ब-
भूपति मल्हन पूर ॥ बुलाय बबैसनर व्वद सूर ॥
मिल्यौ चहुं आन सु रूप गहीर ॥ छिसै दिस बाड्य-
भारिय भीर ॥ बुलाय बखान पठान चंदेल ॥ मिल्यौ
शत्रु साल सु मल्हन मेल ॥ सकत्रिय सिंह सु सौमम
रह ॥ लिये अगने सहु श्याम सरह ॥ सज्यौ पर मानं
द पूरण राय ॥ दई दिस दक्षिन ओर बताय ॥ भये
हरि वल्ल सु ऊदलि आप ॥ लिये संग जाल्हन भाट
प्रताप ॥ लियौ चक्र पान बघेल सु सूर ॥ दलंग छलो
त भुजा भरि पूर ॥ जग निक दाहिमा डाहर दीन ॥
कुतैं सर दार हरौल सु कीन ॥ विचै ब्रह्मा जीत कुमार
सु सूर ॥ दलं सिर मौल सु अल्हन पूर ॥ अमान सु रा-
य पमार परम्म ॥ चले सिर धारि सो क्षत्री धर्म्म ॥ सबै
दल जोरि हजार पचास ॥ धरे सिर धर्म करे छिय-
हास ॥ चौपाई ॥ दश हजार बाई दिस दीनी ॥ आठह-
जार रौल सो कीनी ॥ द्वादश सहस दाहिनी तोलह ॥
बीस हजार बीच में गोलह ॥ दोहा ॥ सहस बीस के-

गोख में बसा जीत अरु आल्ह॥ आठ सहस सेनात
वैहं कारि तत काल॥ छंद पद्धरी॥ हल्ल कारि आल्ह
सेना सु पूर॥ सब भये सूर आगे हुजूर॥ हल्ल कार
शब्द किल्ल कार कीन॥ अपु अप्प जुद्ध रण भार लीन॥
कंगल सु अंग सिर टोप लोह॥ सामंत उह आंग सु
होह॥ हज्जार आठ असवार संग॥ दौरे सु गोल का-
रि के उतंग॥ बारह हजार दक्षिण दिसान॥ दौरे सु
हाय लै वीर वान॥ है गई एक सेना मिलाय॥ हज्जा-
र बीस हरि बल सुभाय॥ उत पांच सहस सेना ह-
रोल॥ सिर दार आठ सुंदर सु डौल॥ नर नाह कन्ह
पुंडीर चंद॥ गोइंद राय गह लौंत दंद॥ पज्जून जैतभौ
हां चंदेल॥ कनकेस वीर पम्मार पेल॥ तोंवर पमार
हाडा हमीर॥ संकिमा राय हाहुली हीर॥ इतनें हरौ
लसिर दार कीन॥ लै तेग सुभट हय छांडि दीन॥
ऊदलि सु संग सिर दार इत्त॥ सकनेस सोम बंसी-
सु मित्त॥ दाहिमा सूर भोपत्ति पास॥ जाल्हन राय
जंग हुलास॥ अम्मान राय परिहार सोह॥ वीर ब-
लिष्ट नर सिंह लोह॥ ओहित्त परम नंद सुचाल॥ भू-
नग भदौरिया छत्र साल॥ तोंवर पहार भुज धरा रुद्ध॥
अचलेस अजय उमगे सु जुद्ध॥ नव लेस आल्ह
मन रन उमंग॥ कूदे सो एक ही वार जंग॥ इतने सु-
कूदि धरि युद्ध लाज॥ हज्जार वीर ठाकुर समाज॥ उ-
तरे सु सूर दस हू दिसान॥ अप आप इष्ट वर कर त
पान॥ दोहा॥ चालु आन कन्हर प्रबल ऊदलि सुभट प्र-
ताप॥ जुद्ध करन को सासु हे भये वीर कर जाप॥ छंद-

गहि कै किर
त्रोटक ॥ तजि कै हय ऊदलि कन्ह लरं ॥ गहि कै किर
वान सु ढाल करं ॥ उमगे चहुं आन चंदेल दलं ॥ च-
प चपा सु सेन कराय हलं ॥ गज ऊदल सौक हरौल
कियं ॥ गज सौक छूटै उत पेलि दियं ॥ अति सुंदरपी-
ल नि पंति लगी ॥ भर भादव जानि घटा उमगी ॥ उ-
त उज्जल दंत लसंत सधैं ॥ वगुला घन में जनु पंति
वधैं ॥ अति लाल विशाल ध्वजा रम की ॥ नहि दाम-
नी बद्दल में चमकी ॥ हसती सत दोइ हरौल दियं ॥
तिन ऊपर कन्ह सकोप कियं ॥ गहि दंत उपारत मं-
त वली ॥ मनु मालिनि तोरति फूल कली ॥ हसती
स्रत दोइ जमाति भली ॥ तहां श्रोनित की सरिता
ओ चली ॥ पट के गहि सुंड गगाद करं ॥ वलु वंत गि-
रावत पानि गिरं ॥ विरच्यो वर कान्ह अमान वली ॥
हय देखि चंदेल की फौज दली ॥ पिलि यो उत ऊद-
लि तेज कियं ॥ सब सेनि समाज सु एक जियं ॥ पु-
नि वाग लई दल ऊपर यं ॥ चहुं आन बनाफल भूप-
रयं ॥ दोहा ॥ लरत सूर सनमुख जहां धरत धर्म सि-
र भार ॥ परत टूटि धरनी तऊ करत मारई मार ॥ छं-
द मोती दाम ॥ गहै किर वान सु ज्वान न हथ्थ ॥ परै
धर ऊपर सीस समथ्थ ॥ कर किव कमान कर क-
र छुट्टि ॥ खर छत वान सना हनि फुट्टि ॥ गनं गन
जुथ्थ पल प्पल धाय ॥ घन: घन घायल होन प-
राय ॥ नरं नर लोह सु लोहुन पूर ॥ चरं चर उड्डय
सीस य चूर ॥ छल ब्बल खेलत मेलत मार ॥ चरं-
त सु वान छिलैं दल भार ॥ कलकत तेज कला कल

फैल ॥ करैं दल सूर दुहूं दिसि पैल ॥ डरडुर कायर
कांपत देखि ॥ रुणं कय रुंड खनं कय पेखि ॥ ढर-
क्कत सुंड निरक्खत नैंन ॥ करक्कत तीर बरक्खत बैंन ॥
थिर क्कति सैंनि सुर क्कति नाहि ॥ दरब्बर दौरि पैरैं दल
माहि ॥ परैं पर फुट्टन पापर पूर ॥ फरप्फर फैलत-
फैं फट मूर ॥ खरक्कर खात रुपे दल दोइ ॥ हरीहर
नाम उचारत सोइ ॥ पिले इत संजि मराय सहाय ॥
जतै गहलौत दल प्पति राय ॥ पिल्यौ सुख आयम
रहन मेल ॥ सजी करवान लिये कर सेल ॥ लगाय
बसं किम कैं हिय सार ॥ रह्यौ सधि सूर भयौ लगि पार ॥
दई हल पत्ति के सीस में तेग ॥ सदा सिव गौर लियौ सि-
र बेग ॥ लख्यौ सब भोपति की निह रीस ॥ दई उनि दौ-
रि कैं संकि मसीस ॥ भ्रम्यौ सत बार सु मूरछ मानि ॥
चल्यौ नर सिंह सहा इक तानि ॥ दई नर सिंह गुरज्ज
सु सीस ॥ पर्यौ गिरि भोपत्ति को धर नीस ॥ चले चक्र
पानि चले नर सिंह ॥ मिले दोऊ बीच परी मन बिंह ॥
खलब्बल होइ लरे मलसार ॥ गिरे दोउ संग भई भर मा-
र नि कासि जमद्धर चक्रय पानि ॥ दई नर सिंह के ही-
कसैं आनि ॥ दियौ नर सिंह सुखं जर आंत ॥ मरे चक्र
पानि उबेर दांत ॥ दोहा ॥ चक्र पानि मरि जुद्ध तजि अ-
कुरि फौज परि माल ॥ तबै आल्ह बानी कही ब्रह्मा जी-
त सौं हाल ॥ छपै ॥ मरन धार मंगा लिय बीर ब्रह्मा जीत
सु आद्दव ॥ भजे नृपति परि माल देखि दल धर्म्म ल-
जाद्दव ॥ कुट्ठि कुटम पंग कौ काम धल कवन जुरि जं-
गह ॥ तिल तिल तन कटि गयौ मरन छांड्यौ नहिं ।

अंगह ॥ताल्हन पठान बिन सीस रुपि अतुल पराक्रम
कम धकिय ॥भाजत सैनि जीवत महि उह माहि
दुःख सालंत हिय ॥ छंद पद्धरी ॥ परिमाल नंद हलका
रि आय ॥ विरचि यौ कुंवर मंगल मनाय ॥हलकारि
सेनि सब एक कीन ॥ आल्हन्न सीस पर भार दीन ॥
ऊदल्लि साथ दिय संग सूर ॥ फिरि चले जुध कों हैह-
जूर ॥सकते ससोम बंसी जुवान ॥बकसी सुदेव क्रान
सजि समान ॥ बर महर बारसन्न माल सूर ॥ डौंगर
सु दल नदेवा हजूर ॥ तोमर अमान रान्यो रराय ॥सि
क्रवार सूर के सब सुधाइ ॥ बड बंत गोड़ जेहब सु
सील ॥सुरखी बसंत सुंदर सुसील ॥आल्हन्न भार अति ते-
ज तानि ॥कायस्थ कर्म चंद बखानि ॥ बनियौं सुभार मल्ह
सरह ॥ ऊदल्लि संग एते मरद ॥ हज्जार पोड़स असवा-
र दीन ॥ गज राज दोय सैमद मलीन ॥ पंचास तोप
धरि हेम अंच ॥गोला सुखाति मन पंचपंच ॥ हज्जार
पंच दिय बान भूर ॥ ऊदल्लि संग सजि चले सूर ॥इत
कन्ह चंद पुंडीर जैत ॥ कन केस सूर उत्तम सुचेत ॥भौं
हा चंदेल परिहार पीय ॥ अततार्इ गोपि सो अरि समीप ॥
संमि माराय धरि धीर जुद्ध ॥गूजर अनेक मन किये
सुद्ध ॥ लक्खन पमार हाडा हमीर ॥ सजि चले सूर सा-
मंत धीर ॥ चक्कुं आन टांक चाटा सु सज्जि ॥ लक्खनप-
मार नौ बत्ति बज्जि ॥तोवर पमार भुज धरा रुद्ध ॥ अच-
लेस अजय उमंगे सुजुद्ध ॥ पज्जून मलय सीपि ना पुत
को पंत जानु रघु नाथ दूत ॥ लै हाथ शस्त्र अस्त्र कराल ॥
फंकंत ज्वान रानं बिसाल ॥ दोहा ॥ पांच सहस्र पथी

राज के हरि बल कन्ह सुभार ॥ बनै बना फल सैनि जु-
रि ऊदलि बीस हजार ॥ दोऊ बीर रिसाय कैं अस्व ।
लिये कर माहि ॥ बाग उठाइ सुगा गहे चले मझ तन नाहि
छंद हनूफाल ॥ बजरंग बीर उसंग ॥ चले साजि के बहु
जंग ॥ उत कन्ह हैं बरडारि ॥ आये सुबीर हंकारि ॥ दस
सहस हैं वर लोह ॥ उतरे सु हैं वर सोह ॥ दस सहस है
वर पुट्टि ॥ जिन तोप बानन छुट्टि ॥ हय छंडि तीनि लना-
र ॥ चहुं आन कन्हर लार ॥ अस वार दो यस हंस ॥
रहे पुट्टि राखय हंस ॥ दिसि पिले पेले ताहि ॥ केल सु
कन्ह सुभाय ॥ कढि दंत मंत नि पानि ॥ पल पील ।
कंदल तानि ॥ गहि सुंडि फेर तगाहि ॥ हनु वंत गिर
वर वाहि ॥ भुज तुंड पट कट तानि ॥ हनु वंत दुति जिहि
जानि ॥ हय पदारि वाहत फेरि ॥ अस वार जुध न हेरि
अग हंत पील न कोपि ॥ भानियो कन्हर ओपि ॥ पर ।
दल सुदल सुख सूय ॥ जिमि लंक बंधन जूय ॥ सुर
की जु फौज चंदेल ॥ बल देखि कन्हर मेल ॥ मारे सु
पील मतंग ॥ धर परे पर वत अंग ॥ छप्पै ॥ कन्ह कौ-
पि चहुं आन हने हाथी मत वारे ॥ काढि दंत बढि वाहु
डोलि हूकर से डोरे ॥ हैं वर हत्य समूह ढाहि दल दयो
सु सैन ह ॥ भजी फौज चंदेल देखि सामंत सुनै नह ॥
सुर कियो फौज ऊदलि लखी भयो बना फल कोरि र-
न ॥ सय सोट करिय दुर्जन चमूं मैं भेटत सामंत धन ॥
छंद मोती दाम ॥ मिलि लाखन फौज बना फल वीर ॥
चल्यौ सन सुख्ख मरन्न सु धीर ॥ करी पर दक्षिन आ-
ल्हन काज ॥ लिये सब सामत संग समाज ॥ चल्यौ ।

सोम वंस सुखत्रिय धीर ॥ पिल्यौ वर देव करन्न गहीर ॥
पिल्यौ दल डौंगर देव दुवार ॥ पिल्यौ सु अभान ई
तोमर तार ॥ पिल्यौ राय रल्ल रह्यौ रन रह ॥ पिल्यौ सत्र
साल सु वांधि जरह ॥ पिल्यौ सिकवार सु रज्जन सिंह ॥ पि-
ल्यौ दल के सब गौंड सुधिंह ॥ पिल्यौ दल दुरजन जह-
वजोर ॥ सुर क्षिय वीर वसंत अमोर ॥ पिल्यौ दल जा-
ल्हन भाट हुलास ॥ पिल्यौ काम चंद सु कायथ पास ॥
पिल्यौ भर मल्हन वैस वरिष्ट ॥ छूते पिलि जुदल्लि संग
सरिष्ट ॥ छुते हय छंडिय जुदल्लि सत्थ ॥ जुते हय छंडि
य कन्ह समत्थ ॥ भुजब्बल आयुध सायधु नाहि ॥ ड-
गमग कायर त्रासहि पाहि ॥ करविल कमान लई क-
र सैंनि ॥ भर क्षिय कुंडली की जिय मैंनि ॥ चला वत
सेलहि हाय पगैंन ॥ मनों अहि आविय होत मगैंन ॥
चला वत हैं वढ़ि दंत दुवाह ॥ करैं वर माला सुबब्बट
राह ॥ वहैं गड कर्ण सु लाग तहीक ॥ मनो अहिमत्तिय
जीय सु लीक ॥ वहैं वहुतैं सरना वक नेह ॥ वर क्खयवूं-
द सु अंतर मेह ॥ दई कर डारिक मान जुनैन ॥ गहैं क-
र सेल लड़ैं दोउ सैंन ॥ करैं दुहुं ओर अन्यो अन मार ॥
दुहूं घट होत हैं पंजर पार ॥ लगावत तोवर जौ भर जोर ॥
वहैं रुधि छीछि दुहूं दल ओर ॥ लगें वर घाय सकत्ति-
य सूर ॥ मनो विष या सिय लागि करूर ॥ अन्यो अनि
सेल निघ पार मार ॥ तवै दुहुं ओर गही तर वार ॥ लगें
वर कंध सवंध वुलाय ॥ मनो जम राज जनेऊ वताय ॥
लगें सिर ऊपर कट्टय टोप ॥ मनो किय गंग सर खति
लोप ॥ वहै फिर वान सु कंधनि फांक ॥ रुपैरण रुंड

करैं सिर हांक ॥ वहैं शिव सूर निके सिर नेत ॥ इं कार लराइ कध बिय केत ॥ तजी कर मान लई जम डाढ़ ॥ लगावत हक्क करी वल गाढ़ ॥ वरखत्तर पार करै भुजजोर ॥ मनो घन वेधि उठी रुज कोर ॥ लगा दत खंजर फंजर पार ॥ किधौं किय कालिका दंत निवार ॥ चला वत संकर फेरि जुमान ॥ छुवावत अंग निहंग कृपान ॥ चलाय गुरज्ज सु पील नि सीस ॥ मनो गिरि फोरि पुरंदर रीस ॥ लगायभ सुंड निसा सनि ताम ॥ मनौं दधि फोरि यस्वालि नि स्याम ॥ लगा यव केहरि के न खपेट ॥ वखत्तर पार भये चर चेट ॥ लगा द्रुव रंजक वंद निदाम ॥ किधौं कढ़ि पुच्छ सुना गिनि नाम ॥ लूहिं विधि उद्दलि कान्ह लरंत ॥ महा डर क्षत्रिय धर्म धरंत ॥ वडो करि जुद्ध बनाफल राय ॥ गये झुकि सूर अनेक लराय ॥ ठठक्किय सेनि उतैं चक्कुआन ॥ मिले दोउ वीर परः घर आन ॥ दोहा ॥ दोरयो संमिम राय रण ऊदलि ऊपर आय ॥ सकति सोम वंसी मरद फेल्यो वीच रिसाय ॥ छंद भुजंगी ॥ पिल्यौ संमि राय ऊदल्लि कानी ॥ धरैं खर्ग हत्थं समत्थं गुमानी ॥ लरयो सक्कते राय संमिमु राजं ॥ लियो वीचही आय जुद्धं समाजं ॥ दुहूं वीर गज्जे वजा मंत वारं ॥ दुहूं सूर मरणं सुमं डोजमारं ॥ करं काटि खंगा उमंगा चलावै ॥ करयो धर्म सीसं निकट्टं मिलावैं ॥ गटं गट्ट जुगिन्नि लोहू गटक्के ॥ धरक्कें विहू सो धरा में पटक्के ॥ नटं जैं मिना चंत वारं दुधारं ॥ चटक्कें तुरी छांडि है जाति पारं ॥ छल व्वल सूरं सभारं सजोरं ॥ जरी जंजरैं ज्वान आम्मान तोरं ॥ रुट

कें किने कं किते रुक ज्वानं ॥ नटं कं कितं वीर खें-
चें कमानं ॥ टटं आय केते क मूरं हकारें ॥ ठठं कें जंडा
जंग कायरं लारें ॥ डडं कन वाजंत डौरू दमामें ॥ ढढं कं-
त डाढं धरें लंग मामें ॥ नरं आय केते लरें चूर चूरं ॥
तना थेई नाचंत साचंग मूरं ॥ थढ रथ हर कापंत का-
तरं केते ॥ दलं में लरें धाय कें सूर जेते ॥ धरें मल्ल जु-
त्थं करें जुद्ध भारं ॥ नरं नेह छंडे भरं नेह न्यारे ॥ परं
सूर वीरं धरा देह कहें ॥ फिरें नाहि दोऊ फने स्वामि-
हें ॥ वली वीर के तेग हें सुंडि पीलं ॥ फिरा में पकरि-
खेंचि भारं लडीलं ॥ भभ छल रवः पर करं मार लीगे ।
मरें सूर जुगिनि मुखं श्रोण पीये ॥ जुरे आय दोऊ द-
लं दारि वीचं ॥ ररें राम रामं करें रुधिर कीचं ॥ लरें रज्ज
रज्जं धरें सीस धर्मं ॥ वरें अप्छरा जंग छांडे अधर्मं ॥
इते सूर चहुं आन संकिं मरायं ॥ उतें गद्द वीरं वना
फल सुभायं ॥ वरं सीम वंसा आगारी अमानौ ॥ ल-
रखौ संकि मानंद के मौरि मानौ ॥ इते सूर चहुं आन
संकिम रायं ॥ उतै गद्द वीरं वनाफल सुभायं ॥ लियौ
सेल हथ्थं दियौ जाय ज्वानं ॥ इतै वीर सकते सदी
नी कृपानं ॥ लग्यौ संकिमा सेलही कंस तापं ॥ रह्यौ
जाय धरणी पर्यौ देह कापं ॥ लगी तेग संकिम
के अंग भारी ॥ गई अंग संगा पर्यौ भूमि धारी ॥ प-
र्यौ अंत सेजं मकनी लखायौ ॥ तहां गहर धार कृता
कापि आयौ ॥ हंत चंद पुंडीर नेनं लखायौ ॥ नैव का-
पि कार वीर चंदं सुधायौ ॥ इते चंद पुंडीर है नी भजाई
तजें संकरं अंग खिल कारि आई ॥ लखी भव माल

विशालं वरिटं ॥ चल्यो पीय परिहारभीर गरिटं ॥
पिस्यो देव करनं करे जोर छत्ता ॥ जंपे भंत सुःखंभ
भी चोय मत्ता ॥ इतै देव करणं छमा गहर वारं ॥ उतै
चंद पुंडीर पीपा पहारं ॥ इतै दोय परिमाल के सूर
ढाये ॥ तिनी ऊपरं चंद पुंडीर आये ॥ हयं पीठि परि
हार पाछे सहायं ॥ लिये आय दोऊ किय चाय चा-
यं ॥ लई कोपि करि भत्र सालं कमानं ॥ धरयौ बानस्थ-
यं दई खैंचि तानं ॥ लग्यौ पीय परिहार कें तीर आई।
भयौ वार पारं परे भूम छाई ॥ परयो पीय परिहार खेत
अचेतं ॥ उठ्यौ संकिमा राय धायौ सुचेतं ॥ उठ्यौ संकि-
मा राय कै करता धायो ॥ सु संकिमें आय खर गांव
न्यांया ॥ लगी सीस तेरो सिर पार होई ॥ दुहूं हाथ फां-
कें गई वीर सोई ॥ कमानं छता खैंचि सीसं विधायौ।
दुहू फार भेदा सनं सुकत धायो ॥ दोहा ॥ देव करन
दई दोरि कें संकिम सीस कृपान ॥ लटकि फांक है
हू गई धायो चंद कमान ॥ दुहुं हाथ फांकें गहीदि-
यो तीर करि कूल ॥ जम्यो सीस धायो लरन भयो करिस-
कूल ॥ छपै ॥ देव करन दोरि कें सीस संकिम के
दीनी ॥ लटकि फांक दो भई चंद ने गहि कर लीनी।
दियौ तीर करि कूल जुर्यौ भय कूल रूल गन ॥ भयो
फेरि साबूत भयो फिरि वीर जायरन ॥ सब कहत
धन्य भनि सुभट नर जस्वालि मसान कीरति रहिय ॥
फटि सीस तक रत्त आरि कें फिरि हु तग हाथं गहि-
य ॥ छंद पद्धरी ॥ सबिरं आगाय धनि सोम वंस ॥ सो-
कि या धालि उतंग तेस ॥ सबंल सद्दई किर मान धा-

य ॥ परि यो सु धरनि संकिम राय ॥ धायो सु चंद पुंडी
र पीप ॥ आयो सु साजि चंदेल दीप ॥ जहँ सत्र माल
आय सु संग ॥ सब सूर कोपि करि करि उमंग ॥ कमा
न पकरि सत्र माल सूर ॥ दीनो सु पीप कैं दी करूर ॥
लाग्यो सु तीर धर फूटि लोहु ॥ परि यो सु धरनि परि
हार सोहु ॥ ता समैं जग्यो संकिम नरेस ॥ सिर गई
मूरछा सर्व तेस ॥ दौरयो सु देव कान गहे रीस ॥ दी-
नी सु तेग संकिम सीस ॥ करि गयो सीस है फार होय
गहि लीन चंद वृद्ध हत्थ साय ॥ ले तीर वधि फार
जुवान ॥ भयो सीस फेरि साबूत ज्वान ॥ फिरि पर्यो
सूर दल में रिसाय ॥ ले तेग हाथ दई करन धाय ॥
कटि टोप मुंड धर कमर मार ॥ पारवर सुजीन है वग
तार ॥ गिरि परे धरा है भाग होहु ॥ लखि सत्र माल आ
ड्यो जु साहु ॥ कम्मान खैंचि सत्र साल तीर ॥ दीनो सु
कन्ह कैं जाय तीर ॥ उत चंद आय मुक्क भेल कीन ॥
सत्र साल सीस में गुरज दीन ॥ परि यो सु टूटि रनग
हर वार ॥ फिरि भयो आगि आड़ो अवार ॥ राठोर रा
य ले सांगि संग ॥ दीनी सु चंद पुंडीर अंग ॥ होक अ
पार नीकं लगाय ॥ गिरि परे चंद धरनी भगाय ॥ तब
लख्यो कन्ह ने चंद हाल ॥ दीनो सु जाय मुंद गज विसा
ल ॥ लगि सीस खील खील कराय ॥ इत परे रवत रा
ठौर राय ॥ चौपाई ॥ परि संक तेम सीस वसी रन ॥
गहर वार राठौर परे तन ॥ डोंगर सींद दोरन कढ़िय
सामंत सूर सामु हें ढढ़िय ॥ चंद पुंडीर गिर भग काढ
य ॥ अरु परिहार पीप गिरि ठाड्य ॥ संकिम राय फत सि

र बुल्लिव ॥ वीर वीर तन में रस फुल्लिव ॥ दोहा ॥ इते
कन्ह मन्नि आदू यो उत ऊदलि सजि आय ॥ आसु
आपु नृप जे छई मंगल मरन सुभाय ॥ छंद त्रोटक ॥
इत कन्हर निंडर जैत दले ॥ कन कंवड गुज्जर संग
चले ॥ लखि भौंह चंदेल पजून वली ॥ इतने संग साम
तरंग रली ॥ लखि ऊदलि जोध सनं सुबयं ॥ संग
तोमर वान वली रुपयं ॥ कमधुज्ज सुराय सला पि-
लियं ॥ सिक्क वार सु सज्जन मो मिलियं ॥ वड़ वंड सु
के सब गौड़ पिले ॥ जहं जद्दव राय उमंगि चले ॥ सु-
रके वर वीर वसंत वनें ॥ संग आल्हन भाट समातर
नें ॥ वकसी जहां कायथ कर्म चंदं ॥ उमग्यौ वनि-
यां भर मल्ह दंदं ॥ पिलियौ तहं ऊदलि पायनि सों ॥
भर रूलि वनाफल चायन सों ॥ मुख अंग पचास
क तोप करी ॥ ठहराय जँजीर नि सोर भरी ॥ अरु पां-
च हजार सु वान सजे ॥ अपनें अपने कर लेत गजे ॥
हल कारिय गोल सु सैनि दलं ॥ जि किरे सुज जीर-
न सार मलं ॥ अब वान सु ज्वान दई चिनगी ॥ दल
सामंत ऊपर दौंसि लगी ॥ तब तोप नजामिगी दै जुदई ॥
चहं आन दलं वह्न भे जु भई ॥ अर राहट भौ अति सो-
र सह्यौ ॥ वल कादिस अंवर छाय रह्यौ ॥ लगि वान अ-
नेक नि ज्वान परे ॥ तहं तोप निगोल अनेक मरे ॥ धु
कि कैं धर संकिम राय गिरे ॥ रन पांच हजार तहां जि-
किंर ॥ हसती परे तीस सवै रन में ॥ कितने डर काय-
र हीं गन में ॥ फिरि कै सोइ उद्दलि वाग लई ॥ संगवी-
स हजार सु भार तई ॥ बल वंड कर किवय खंड तनें ॥

खंड खंड प्रचंड गयंद करं ॥ विचरे दल पिथ्थ लिने
जतरा ॥ सब भार सु ऊदलि केलि लग ॥ चहुं आन
हरोल अनी सुरकी ॥ लखि संक्रिम राय गिरे धर की ॥
जहां चंद पुंडीर रुपी पपेर ॥ सुरकाय सु लक्ख धरंनि
धंर ॥ तब कन्हर कोप कियो रनमें ॥ सुरकाय सु सेन
दई गनमें ॥ कर मान लई हय छांडि दिये ॥ सनमुक्ख
सु कन्हर कोप किये ॥ इत वीर वसंत रु कर्म चदं ॥ उम
गेया वनियां भर मल्ह ददं ॥ मिलि डोंगर देव नरे सब
ली ॥ संग जाल्हन भार प्रताप रुली ॥ परि माल सुनै
नृपगासि वलं ॥ चहुं आन सबै दल नासि हलं ॥ सुर
भोग लहो इह जुद्ध कही ॥ मृत लोक के भोग तजो स
वही ॥ छपै ॥ डिगी फौज पृथ्वी राज तोप वानन की-
मारी ॥ परयो जु संक्रिम राय चंद पुंडीर सुधारी ॥ परयो
पीप परिहार पंर गुज्जर रन सोई ॥ परियो तीस गयंद
सहस है वर कटि लोई ॥ रजपूत सहस डेढ़ ह परे फौ-
ज विचरि पाछे हइय ॥ चहुं आन हथ्थ हाल्यो हुमकि
संकि वीर दारुण दइय ॥ चौपाई ॥ विचरी फौज ल-
खी चहुं आनह ॥ पेलिव हाथी आगे कान्हह ॥ कन्ह-
रजे तहां झुलियो वीरह ॥ नर सिंघ राम मलय सी धीर
ह ॥ छंद त्रोटक ॥ नृप हाथिय पिथ्थ लिये लिवरं ॥
सब सेनि सकेलिय एक करं ॥ कय मास रु कन्ह पजू
न मिले ॥ जुरि कें सब राय हमीर चले ॥ जहां खिच्चि
य देव प्रसंग नरं ॥ विरु राज सुधा मर धीर वरं ॥ जहां
रेवत सु पूरन मल्ल चले ॥ भर मल्हन ऊपर भार मिले
नृप ऊदलि ऊपर कोप किये ॥ इतने उम राय जु संग

हगं ॥ इत देखि बनाफल सूर मथं ॥ नाग डोंगर देव
मक्खग मथं ॥ कस बीर बसंत रु जाल्हनयं ॥ सिक्क वा-
र भू रज्जन मालनयं ॥ जहां ओन बनाफल भार मनं ॥
धग्गता आज वा नर कांपि दलं ॥ मडु दंभ मिले नरमा-
ल तये ॥ इतने मिलि ऊदलि संग भये ॥ उत कन्ह नं-
चल हुय कोप कियं ॥ इत ऊदलि बीर अपार दियं ॥
विफुर चढ़ आन बनाफलयं ॥ धरि हत्थ नि लोह वली
वलयं ॥ चढ़ं आनि दवाय हरौ ललियं ॥ नन ऊदलि वा-
र समाज कियं ॥ पिलियां कक्क वाह पजून बली ॥ डु-
रु मानि चंदेल की फौज चली ॥ पर कै गहि है वर भू-
परयं ॥ मस कंत गयंद न कंवलयं ॥ कहु हक्क हि ध-
कहि सूर सुखं ॥ कहुं मारत मारक लाय रुखं ॥ क-
हुं सेल चलावत बाकुं वरं ॥ धरटूटि वरब्बर फूटि कु-
रं ॥ सिक्क वार सु रज्जन आय इते ॥ विफुर कक्क वाहप-
जून जिते ॥ सिक्क वार चलाइय तग वरं ॥ उर लागि प-
जून के फाटि धरं ॥ वधि राय पजून ने कोप कियं ॥ कर
नान सु रज्जन कंध दियं ॥ गिरिग सिर टूटि धर न्निप-
रे ॥ तन काल वर गनि आय वरे ॥ भ्रम पाय पजून
गिरि धरनी ॥ फिरि आइय गौंडर सी मरनी ॥ तिहिऊ-
पर आयक नाम असौ ॥ करि मे तर कसमनि लाय र-
गौ ॥ लई खैचि कमान सु ज्वान नरं ॥ दिय बान र
सु कान्हर लागि धरं ॥ फिरि तेग लई कर कोप कियं ॥
रपटाय सु जैत के सीस दियं ॥ लगि टाप कस्यौ सिर
आय लगी ॥ संभर्‍यौ फिरि जैत अमान मगी ॥ किय क-
पर डोंगर ने जवही ॥ साजि जाम पै कोप कियौ तवही ॥

धकि कै दई डांगर सी पग मे॥ धर घूमि कै जाम गिर
मग में॥ फिरि चेति कै तेग दई सिर में॥ पुनि डांगरदं
व बलं विर में॥ सिर डांगर टूटि क बंधन च्यौ॥ सिवमा
ल में सीसमुहाल सच्यौ॥ वक सी कम चंद सु आय
गयौ॥ खग धारन बीच दुधार लयौ॥ नर सिंह इतेम
क मेल कियौ॥ कम चंद दुधार सु जाय दियौ॥ लखि
कन्ह धम्यौ नर सिंह हय॥ रिस कै कम चंद सु खैंचि
लयं॥ गहि पाय सु धीर पटक्कि धरं॥ धर चून भयौ सि
र टूटि परं॥ लखि साहि सु धीर पटक्कि वलं॥ पिलियौ
सु तहां पृथी राज दलं॥ नर सिंह सु साह कों देखि चखं॥
हय दाबि सु आय प्रहार लखं॥ नर सिंह लई गुर जै
कर मे॥ इत साह सु मांगि लई बर मे॥ कर सांगि ले साह
चलाय दई॥ नर सिंह लगी उर आय सही॥ धकि सूर
छ खाय सु सिंह पर्‌यौ॥ तिहि ऊपर पूरन मल्ल अर्‌यौ॥
लइ तेग दई सिर साह लवे॥ धर जाय पर्‌यौ सिर टूटि ज
वे॥ तब दौरि सु रज्जन आय अर्‌यौ॥ तब पूरन मल्ल
तैं जाय लर्‌यौ॥ दई तेग सु रज्जन सीस हयं॥ भई पार
धरा सिर टूटि मयं॥ लखि कन्ह र आय गुरज्ज दई॥
लगि सीस सु रज्जन माहि मही॥ भय टूक अनेक प-
रौ धरनी॥ लरही लसि फौज भवे करनी॥ फिरि ऊ
दलि कान्ह कौ जुद्ध भयौ॥ सु सुनौ कवि चंद बनाय
कह्यौ॥ दोहा॥ आल्हन मार निराद लखि मरन सुनि
यरौ आय॥ सुनियौ भूप जम राज के स्वर्ग भोग रन
लाय॥ उत कन्ह साजि आइयो इत ऊदलि सजि आ-
य॥ चहूं आन चंदेल कौ लडे सूर मन धाय॥ छंद भ

संगी ॥ मिले कुदलं कन्ह दोउ अभंगं ॥ निरष्षे सुजो-
धा दहूं स्वामि संगं ॥ जंपे कृष्ष सुकवं उचारंत सोई ॥ भ-
वानी धरें ध्यान धारंत होई ॥ उचारंत मंत्र सुचारंत
धाये ॥ विचारंत होक सनं मुकव आये ॥ मिली दृ-
ष्टि सो दृष्टि वानी उचारी ॥ अहो कन्ह धीरं भयौ
जुद्ध भारी ॥ दलं पात माही सवे आप जीते ॥ अवे जु-
द्ध कीजे सरस उद्द हीते ॥ घने घाम पट्टी सु आंरैं व-
धाई ॥ अवे उद्दल सों परौ काम आई ॥ लरे सूरके
तनतें आप अंगं ॥ हने तापुरे जाय लै सूर संगं ॥ प-
रौ जुद्ध मोसों अवै त्यार हूजे ॥ भरो सेन औरे लरों जं-
ग जूरे ॥ तवै कन्ह वोल्यो महा रोस होई ॥ सुनो नंद
जमराज के वात सोई ॥ इहां गोंड नाहीं गढ़ा मारि
जानौं ॥ अवे कन्ह चहुआन सों जुद्ध ठानो ॥ हने लो-
ग घायल विचारे सठाढे़ों ॥ परौ सूर सवी नतें काम
नाहीं ॥ सुनी सूर वानी तवे उद्द धायो ॥ उते कन्ह वी-
रं रनं रोष पायो ॥ दुहूं ओर तें वीर निरषे अमानैं ॥ कि-
ये अंग रागं लसैं भीति वानैं ॥ चला वंत वीरं सका-
ती कटारी ॥ लगें वीर छाती गरे फूटि न्यारी ॥ चला
वंन वीर दुहू ओर वांके ॥ परे फूटि धरनी दुहूं सेनि
यांके ॥ चला वंन मेल दुहूं हाथ जोरे ॥ सना हं सु-
फूटंत फूटंत घोरे ॥ चलें नेग वेगं सु सूरं हंकारैं ॥ म-
नों पात्र चक्रं कुलाल उतारै ॥ चला वंत फरसा सिरं
फार होई ॥ मनों वांटिये फारि तरबूज सोई ॥ लगें सी-
स गुरजं परै खील ह्वैकै ॥ मनों हस्समटु की दही डा-
रिकैं ॥ लगें मुगदरं भी रुभारी मु सीसं ॥ लटकै अ

नेकं पट कैं सु दीसं ॥ लगें जाम डाढं स नाहं स फूरें ॥
वयं अंत लैकाल जै पाल खूटें ॥ लगा मैं तहां के हरी
न छव सारे ॥ वरं कं गलं अंग जंगं सफारें ॥ ऐसी भां-
ति कन्हं लड़ैं उद्द दोऊ ॥ कटं कैं अट कैं दुहूं कोप हो
ऊ ॥ हुते कन्ह की भीर काय मास आयो ॥ वरं टोक
चाटा सिरं सूर ठायो ॥ लख्यो जाल्हनं चाट कैं मा-
स छेर्द ॥ भयो आय आड़ो महा राय सोई ॥ हुते टोक
चाटा सुकं मेल कीनो ॥ वली जाल्हनं तानि कैं बीच
लीनो ॥ दई तेग दोऊ दुहूं बार कीनो ॥ लगी संग दो-
ऊन के अंग कीनो ॥ लगी जाल्हनं हाथ की तेग चा-
ही ॥ पर्यो सीस धरनी सु चाटा न हाही ॥ वरं टोक चा-
टा सिरं रुंड वाही ॥ लगी जाल्हनं कें गिर्यो भूमि मा-
ही ॥ तहीं जाय काय मास सेलं चलायो ॥ वली जा-
ल्हनं खेत धरनी मिलायो ॥ पर्यो आल्हनं खेत उद्द-
ल्लि धायो ॥ तुरंगं करैं ल्यार लल कारि आयो ॥ उभै सु-
भ हय नें धरे सुंड पीलं ॥ कमर तें लई तेग उद्द असी
लं ॥ दई कन्ह कें कंध वंधं खुलायो ॥ अचेतं गये ते-
भयो सूर छायो ॥ करा म्यान तेगं लई वीर बांकें ॥ त-
वे कन्ह चेत्यो लख्यो उद्द घाकें ॥ नहीं तेग लीनी गुर
ज्जं न हत्यं ॥ पकरि उद्द कों हाथ हील छु यत्यं ॥ लड़े
मल्ल जैसें दुहूं पीठि पीलं ॥ हठें नाहि दोऊ दुहूं ओर डी-
लं ॥ लखै फौज दोऊ सकै जाय कोहै ॥ कहै चंद ऐसें
महा जुद्ध होहै ॥ भये लख्ख पत्यं गिरे पील पेते ॥ भये
लोट पोटं दुहूं वीर हेते ॥ तरें उद्द ऊपर सु कन्हं वलिष्टं
तवे जुद्ध भारी भयो खेत रिष्टं ॥ तहां चंद वोल्यो चकं आ

नडीलं ॥ लगा ओ सु तेगं करौं कह्र ढीलं ॥ तवै का-
न्ह चेत्यो सुनी भाट वानी ॥ गयो पक्ष कय मास आ-
सं भमानी ॥ वली दूसरो वीर कय मास आयौ ॥ उरं
उद्द कै आय सेलं लगायौ ॥ गही तेग कन्हं सिरं वार (
कीनौ ॥ पर्‍यौ उद्दलं टूटि धरनी नवीनौ ॥ रुप्यौ रुंड धर-
नी सिरं हा कमारे ॥ भयो सेर ऊदल्लि वैठ्यो इकारे ॥ तवै
ऊद्दलं रुंड धायौ हंकारी ॥ वलीं तेग कय मास कैं कं
धमारी ॥ पर्‍यौ मूरछा दाहिमा भूमि आयौ ॥ कट्यौ टो-
प मुंडं धरा मूरछायो ॥ पर्‍यौ कन्ह दल में वना फल हं-
कारी ॥ किते सूर मारे परे सो अगारी ॥ किते रुंड कीयं
लियं कारि मुंडं ॥ हने पील केते किये सुंड डंडं ॥ कि-
ते डारि दीनं धरनि ये तरंगं ॥ वडी मारु मारी करी जु-
द्द जंगं ॥ भयो कन्ह दल में हहं कार भारी ॥ परैं सूर
जितमें भजैं फौज सारी ॥ नचै रुंड तेगं लिये हाथ
न्यारी ॥ ऐसी भाँति जुद्दं करी जंग रारी ॥ करी म्यान (
तेगं अवेगं समाई ॥ गिर्‍यौ सूर धरनी भयो मूरछा-
ई ॥ गई अप्छरा लै तहां सूर लोकं ॥ भयो प्राद्ध जैंजैं
दुहूं फौज सोकं ॥ दोहा ॥ उद्दलि को नाच्यो कमध प-
र्‍यो सीस धर सूर ॥ हनी फौज पृथी राज की एक ह-
जार हुजूर ॥ चौपाई ॥ पहले ऊदलि कन्ह धुकायो ॥
पाछे कन्ह उठ्यो रिस लायो ॥ लरा सूर दोऊ मलसा
रह ॥ भए मूरछा दोऊ मारह ॥ फिरि चहुं आन चेत
कियचंदह ॥ तव कय मास आय ढिग वंधह ॥ सेल
सांधि ऊदलि कैं मारिव ॥ ऊदलि खैंचि दई तर वारि
व ॥ भयो रुंड खेल्यो धरनी मह ॥ दई तेग कन्ह र के

सी सह ॥ फेरि दई कय मास सु कंधह ॥ भरा मूरछा दे-
ऊ दंदह ॥ फिरि ऊदलि दल माहि ह कारिय ॥ आगें
परे सवै सो मारेव ॥ पहर द्वैक कीनो वडु जुद्ध ॥ पा-
छैं भयो मूरछा उद्दह ॥ दोहा ॥ तीनि तु मिल कै मारि-
यो नृप जस राज कुमार ॥ मारे भट पृथ्वी राज के सिर-
विन एक हजार ॥ छपै ॥ सुनि ब्रह्मा जीत सु बात का
म उद्दलि रन आइव ॥ द्दह बली सव टूटि सार सामंत
निषाइव ॥ सत्र साल सकते स परे दर करन अमान
ह सुरजन डोंगर परे परे जाल्हन रन पानह ॥ धरपरे
पील सै दोय सन दस हजार द्वै वर वहर ॥ सुख वाह
वाह अल्हन कही कन्ह कटक कीनों कहर ॥ चौपाई ॥
ऊदलि कटे वीर रन माहीं ॥ छत्री धर्म धरौ सिर माहीं ॥
ब्रह्मा जीत बोले इह वानी ॥ स्वर्ग भोग भोगै सुख दानी
छंद रघुन राज ॥ कियो कुमार हल्लयं ॥ सवै सु सूर म-
ल्लयं ॥ हरौ लपील की नियं ॥ अरि व्व पुद्दि दीनियं ॥
स्वामी ति धर्म चीनियं ॥ तमं कि वाग ली नियं ॥ व-
नाय वेस फौजयं ॥ विचारि आल्ह चौजयं ॥ मिले
मरद्द मारि कें ॥ अनेक दाव धारि कें ॥ वंध्यौ गरद्द गो
लयं ॥ विचौ कुमार सोमयं ॥ चढौ सु अल्ह हाथियं ॥
लिये सु भाट साथियं ॥ इतै चौहान चल्लियं ॥ मरद्द में
ल मिल्लियं ॥ सामंत सूर साथयं ॥ हथ्यार हाथ हाथ-
यं ॥ कै मास कन्ह जैतयं ॥ हमीर युक्त ने तयं ॥ उतै सु
आल्ह साजियं ॥ लखै सु काम लाजियं ॥ चल्यो परि
माल नंदयं ॥ मनो द्वितीय चंदयं ॥ सुर गय भोग आ-
इयं ॥ खिलंत स्वर्ग ताइयं ॥ चल्यो सु आल्ह वांचयं

सुनो चहुं आन सोंचयं॥ धरम जुद्ध कीजिये॥ वच
न व्यास लीजिये॥ बुलाय जोध जोधयं॥ करैं ह-
थ्यार सोधयं॥ सु धर्म जुद्ध मंडिये॥ अधर्म जुद्ध
छंडिये॥ सु जंत्र मंत्र कीजिये॥ प्रलोक जीति ली-
जिये॥ दोहा॥ ऊदलि काम सु आइयो दई खबरि
मति हार॥ अब सु धीर परि माल के सब तेरे सिर भा-
र॥ छंद भुजंगी॥ परो ऊदलं खेत सो आल्ह जान्यो॥
करो क्रोध अंगं रनं मरन्न ठान्यो॥ लिये वान हत्यं बु-
ल्यो वीर वानी॥ करी पैज मन में महा सुक्ख दानी॥
धरैं ईस सुंडं गरैं आज मेरो॥ उधारों अबै नौन चंदे-
ल तेरो॥ ऐसें वोलि आल्हं न सब कों सुनायो॥ धरें
स्वामि धर्म्म कूदि बीच आयो॥ चलाये दुहूं वीर वांधे
गरिष्टं॥ चले साथ सूरं जपे सुक्ख इष्टं॥ करैं खंड खं-
डं भुसंडं पछारैं॥ परैं वीर जोधा करी कुंभ फारैं॥ भभ-
क्कैं भुसुंडं नि सुंडे वरछी॥ किधों नागिनी सिंह लागैं
तिरछी॥ सुदंडं घरा जानि गाजं त वाजं॥ वली वाहु
जोरं त तोरं समाजं॥ घटा सेनि वंधी दुहूं वीर धाये॥
मनों मेघ दोउ दिसाते घुमाये॥ रुमं कैं धवा आगि
लागें घेसारैं॥ उरं फूटि संना ह फूटंत घोरैं॥ मिले सू-
र सूरं अपूरं अखारे॥ किते एक जोधान के सीस फारे
गहें सुंडि दंती सुमंती चिकारैं॥ कढे तेग वेगं मनौं रेवि
कारें॥ इते कन्ह चहुं आन के भास धाये॥ अखारे केर
तेप चारे मिलाये॥ कहूं कै भुजा जोरि तोरंत पाटें॥ कि-
ते एक जोधान के सीस काटें॥ किते डील गहि पील
कों लै फिरामें॥ किते फूटि सुंडं परैं सो सभामें॥ कहूं है

वरं पुच्छ गहि तानि वाहैं ॥ कहूं पाय प्यादे गहैं धर
निमाहैं ॥ कहूं सांगि वाहैं कहूं कीन रौरैं ॥ कहूं वान
छाड़ैं कहूं सूर दौरैं ॥ कहूं वीर गुरजं सिरं खैंचि मारैं॥
कहूं सूर वीरं सिरं तेग झारैं ॥ कहूं पर गला वीर वाहंत जो
रैं॥ कहूं काटते सीस सूरं सजोरैं ॥ कहूं संकरं सार वाहैं
अमानैं ॥ कहूं पेल खेलें नवें लें कमानें ॥ कहूं कंध वंधं
सुवंधं खुलावें ॥ कहूं किंनरा विंदरी लै वजावैं ॥ कहूं
तेग संभारि कैं खैंचि लेते ॥ कहूं खंजरं लै हियं मांहि
देते ॥ कहूं वीर वाहैं भुसुंडैं निहारी ॥ कहूं डंकिनी सं
किनी कूक भारी ॥ कहूं भीलिनी भेष भ्यानक्क गाजैं॥
कहूं जोगिनी हाथ खप्पर विराजैं॥ कटारी कियं अंग
उर जात नामी ॥ खुले द्वार मानों अटारी सुवामी॥ क-
हूं खंजरं पिंजरं मारि फारैं ॥ कहूं रंजकं मारि हीकं सु
धारैं ॥ कहूं वीर कम्मान वानं चलामें ॥ परैं मुंड धरनी
सु रुंडन्न चामें ॥ कहूं सूर धरनी परैं काम आमें॥
वरैं अप्छरा सूर लोकं सिधामें ॥ भयं काम भारी भयो
फौज फौजं ॥ किते सूर धरनी परे टूटि चौजं ॥ ऐसी भां-
ति कय मास कंन्हं चलाई ॥ धनी सेन चंदेल धरनी मि
लाई ॥ भगी सेन देखी चखं अल्ह सोई ॥ भए आय आ-
गें महा राय सोई ॥ तवै कन्ह सों वैन वोल्यो पतीजै ॥ सवै
सेंन कों दुक्ख क्यों वादि दीजै ॥ चौपाई ॥ आल्ह भये से-
ना संग रूरे ॥ वचन कन्ह सों वोलि गरूरे ॥ सुनि चहुंआ-
न आपु रण कीजे ॥ सवै सैंनि कों दुःख न दीजै ॥ आल्ह
सकति को मंत्र उपायव ॥ सोइ अर्जुन कोई ग्रान तान
वनिद्रा अस्त्र प्रयोग सु कीनो ॥ ओघत सामत सूर नवी-

नौ॥ छंद पद्धरी ॥ उच्चरे मल्ह वानी निराट॥ सुनियें सु-
कन्ह कय मास पाट॥ सव सेंनि काज दुख देह काय॥
कीजिये जुद्ध मो संग चाय॥ जंपियो मंत्र तारा सुभाय॥
कीनें सु ध्यान उर मध्य आय॥ हंकार कियो देवी न-
लिष्ट॥ किल कारि कीन हल कारि दृष्ट॥ निद्रा प्रयोग-
कीनो सु वीर॥ औघंत सर्व सामंत धीर॥ कय मास क-
न्ह पुंडीर चंद॥ औघंत सर्व सामंत दंद॥ तोंवर पहार
सु संलख सोइ॥ भौंहां चंदेल नर सिंह लोइ॥ परिहार
पीय हाडा हमीर॥ खींची सु हौंड धामर सु धीर॥ खे-
ता खगार अनेक फौज॥ छांडी सु जंग सामंत चौज॥
औघंत इते सामंत सोइ॥ छांडी सु जंग उन मत्त होइ॥
दौर सु जोध चंदेल सेन॥ वल वंत वीर निर मोह तेन॥
केतेक सीस टूटंत सार॥ केतेक अंग लागि होत फार॥
केतेक चरन टूटंत जंग॥ केतेक सीस विन लरत अं-
ग॥ केतेक सूर रण कटिह लास॥ केतेक गये चहुं-
आन पास॥ नर नाह कन्ह पुंडीर सोइ॥ वीरं वलीनर
सिंह लोइ॥ मारंत आल्ह मजि सैन सूर॥ चलियेन
रेश ऊपर जरूर॥ अचरज्ज पाय पृथ्वी राज देखि॥
वर दाय चंद वोल्यौ विसेषि॥ सुनि चंद वैन आयौ सु-
वीर॥ उच्चरौ तवे पृथ्वी राज वीर॥ कीनौ सु मंत्र आ-
ल्हन अभंग॥ औघंत सूर सव छांडि जंग॥ उच्चरौ
चंद सुनिये नरेश॥ कीनौ प्रयोग आल्हन सुवेस॥
तारा सुदुस्त कीनौ सुपाय॥ दीनौं सु मंत्र शंकर सहाय
यहन्त सु कीन कौरोन निद्द॥ सो कियो आल्ह तुम प-
रम सिद्ध॥ अव तार उहीं अवभयौ आय॥ दीनौ सु-

मंत्र गोरिख बताय ॥ यह सुनी बात पृथी राज भूप ॥
बोले सु चंद सौं दंद गूप ॥ दोहा ॥ पृथी राज पूंछत न
गदि कवसु मिले रिखि आय ॥ किहि प्रकार विद्या
दई किहि विधि मंत्र बताय ॥ छपै ॥ कहहु चंद वर
दाय आल अवतार सलभ्भय ॥ गये सिकार इक बा
र राति उद्यान भूलि गय ॥ गिरि ऊपर जहां गयो तहां
गोरिख रिषि बैठव ॥ कियो दरस तब आल्ह आल
गोरिख चरव देठिव ॥ लग्गयो पाय जस राय सु हा-
थ जोरि बिनती करिय ॥ मोहि संग लेहु उपदेश क-
रि ती भवन संपति भरिय ॥ १ ॥ तब गोरिख मुख
उच्चरि बरष सेवा करि मारह ॥ तब नारी सम मुले
देंहु जो मांगे बारह ॥ करैं वना फल सेवैं नदिन एक
चित्त करि ॥ हाथ पाय धावंत मात उठि धार नीर भरि ॥
या विधि सु सेव कीनी प्रगट एक चित्त करि आल्ह ये ॥
बीतो सु बरष नारी पुली बहुत खुसी गोरिख भये ॥ बोधा
ई ॥ तब गोरिख मुख बोलि व बानी ॥ आल्हा मांगि क-
हू मन मानी ॥ बरष एक लग धाय व मो को ॥ जो मां-
ग सो देंगो तोकों ॥ दोहा ॥ अस्त्र शास्त्र सिखये भये कीनी
अमर सु देह ॥ जहल लगि गृह में रहो पाछे जोग स
लेहु ॥ सो ऊदलि जूंझो अभै गोरिख आवतु होय ॥
आल्हा संग सिधारि हैं बच्चन कहि गये सोय ॥ अब या-
तें यह मंत्र है धारन करो उपाउ ॥ गोरिख आवत हो
यगो भलो बन्यो है दाउ ॥ चामड को कीन्हे विदा कह
करन चंदेल ॥ ताता ताय को अग्र करि करो लर नि
को खेल ॥ चंद बदन पृथी राज सुनि लोचन भरो वि-

माल ॥ बिदा करी चामंड की पकरन को परिमाल ॥ चलौ सहस रजपूत ले चामंडराय सहाय ॥ अताताय कों अग्र करि कियो जुद्ध मन भाय ॥ छंद त्रोटक ॥ करि कोपन ये पृथी राज मने ॥ अताताय सु अग्र किये सजनं ॥ मुख मंत्र उचारत आपु नृपं ॥ करिकैं जपजूथ निदेह रूपं ॥ गिरिजा हर शंकर ध्यान हियं ॥ अत ताय नरेश सु लोह लियं ॥ मह कालिय ध्यान धरु पैज वहीं ॥ अाताताइ यसिद्धि करी तवहीं ॥ वर वीर अराधन चंद कियं ॥ रवि को करि ध्यान समान हियं ॥ बिफरे वर वीर पिले वल में ॥ हाथ ले तिर शूल चले दल में ॥ मुख मंत्र उचारत सो हल में ॥ मंत्र सिद्धि किये कल सों पल में ॥ किल कारि य कालि का आगन की ॥ सुधि भूल गई उठि जागन की ॥ बिन सुंड बिहंड गयंद करें ॥ खंड खंड प्रचंड नरेश हरें ॥ लगि लोह सपूरन हूर वरं ॥ उमगे सब सूर चंदेल धरं ॥ अगवानिय के सब आय गयो ॥ रण मध्य के मास उठाय लयो ॥ तवही अत ताइ य मेल कियं ॥ वर के सब के तिर शूल दियं ॥ लट कौ तन के सव भूमि पर्यो ॥ तत काल वरंगनि आय वर्यो ॥ तवही जगनिक प्रताप वली ॥ कर तेग लई अगरे जतली ॥ जगनिक पै लाय र कन्ह रखं ॥ किरमान सुदी यर कन्ह मुखं ॥ भर भ्यौ नर नाह धरन्नि पर्यो ॥ तहि ऊपर दाहिमा आनि अर्यो ॥ कै मास लगाइय तेग तनं ॥ लदि सीस सही कविराज भनं ॥ जगनिक्क लयो कर सेल गन्यो ॥ कय मास प्रकास ही जाय हन्यो ॥ कय मास दई फिर तेग सिरं ॥ भई पार धरा सिर टूटि गिरं ॥ धरनी

धर दौरन सीस विना ॥ किर मान लये कर धार मना ॥ बिन मांस जगा न्नि क पील हन्यो ॥ भट सूर महा चढुं- आन गन्यो ॥ दोहा ॥ जग निक पर्यो सु सीस बिन उठ्यो रुंड करि रोस ॥ पील हन्यो देख्यो नृपति करी कीर जनु जोस ॥ छप्पै ॥ रुपि जगनि करन महि हत्थ बाहे वर हत्थिय ॥ हनी सैन हज्जार रुंड धायो सम रत्थिय ॥ ह- ली फौज चढु आन रुंड खेल्यौ बिन सीसह ॥ मानि जो- र पृथी राज पील मार्यो करि रीसह ॥ कीनो कहा वरन माहि वढ़ि लोह लहरि वाड़मसुहर ॥ जंपियो चंदवा- नी बरनि भद्द ठट्ट कीनो कहर ॥ दोहा ॥ आता ताय आल्ह ऊपर हांकि चल्यो बल वान ॥ उतै वना फल आय कै वोल्यौ बीच विहान ॥ छंद पद्धरी ॥ विरच्यौ सु अना तायं वलिष्ट ॥ उत आल्ह वीर मन धारि दुष्ट ॥ दौरे जो सूर चंदेल फौज ॥ इत में सु दौरि चढुं आन चौज ॥ छूटंत वान सननं सनात ॥ तोपं वलिष्ट भवनं भनात ॥ विफरं त वीर धीरं हंकारि ॥ उचरंत दुहुं दल मार मारि ॥ वा- हंत सेल्ल हेलं समारि ॥ लागंत अंगाही कं सुफारि ॥ खेंचत कमान मारंत तीर ॥ लागंत पार फूटंत पीर ॥ वाजंत तेग वेगं अनेग ॥ टूटंत मुंड रुंडं वनेग ॥ मारंत ज्वान मुगदर फिराय ॥ लागंत सीस चूरं कराय ॥ वाहंत गु- रज गहि सभरि सूर ॥ कापंत देखि कातर सु कूर ॥ खंज- र सुखैं चिाही कं लगाय ॥ पारं प्रवेस मारं समाय ॥ फें- कंत चक्र अर्क्क फिराय ॥ लेजात सूर सीसं उड़ाय ॥ मारंत बीर वानैत वांक ॥ लागंति अंग फोरंति कांक ॥ वाहंत अंग जम धर जुवान ॥ फाटंति हीक लींकं प्रमा-

न॥ केते न हाथ नहिं मार भाय॥ फैकंत एक को एक
धाय॥ याभांति अता तायं लरात॥ आल्हंन तीर मा-
रं मरात॥ ले अता ताय वीरं त्रिसूल॥ दीनो सु आल्ह-
हीकं मसूल॥ आल्हन सु खेंचि तेगं लगाय॥ धुकि प-
रौ धरनि मूरं समाय॥ आल्हा अचेत उनभयौ जुद्ध॥
भयौ विषम खेत भारी विरुद्ध॥ दोहा॥ भयौ मूरछा आ-
ल्ह नृप अता ताय के दंड॥ ता समये पृथी राज सों वानी
बोल्यौ चंड॥ चौपाई॥ आल्हा गिरौ मूरछा खाइय॥
दोऊ वीर गिरे मुरझाइय॥ ब्रह्माजीत कों वेग ही मारौ।
नातर उठ आल्हरन हारौ॥ दोहा॥ ब्रह्मा जीत सों जु-
द्ध करि संभरि राय संभारि॥ जो जगि है आल्हा नृपति
तौ हारौ गेरारि॥ छप्पै॥ पेल पील पृथी राज चल्यौ चं-
देल सनं मुख॥ ईश्रा मंत्र उच्चारि वीर धर धारि मंत्र रु-
ख॥ नृपति आपु हंकारि वान कंमान पान किय॥ खैंचि
राज करि रोस तीर चंदेल हीक दिय॥ भेदंत तीर खेदं-
त हुय फूटि अंग सन ना तगाय॥ पाखर सु फूटि हय व-
रस हित औ तुरंग असवार भय॥ १॥ लग्यौ तीर चंदे-
ल धरौ पृथी राज सनं मुख॥ लये वीर कर सांगि आ-
गि चख भरे वान दुख॥ आन आन पृथी राज चाय ख-
गेन सों खेलह॥ करैं जुद्ध पर सुद्ध वीर सामंतन ठेलह॥
सुनि चाह आन पील उतरि हय मगाय असवार भय॥
आये सु वीर दुहुं ओर तें रास जोरि घम साय हय॥ छंद
भु॰॥ चले सो चंदेलं मुखं चाह आनं॥ प्रिया मान जंगं उमं-
गं उठानं॥ लई सांगि हथ्यं हनी राज हीकं॥ भई पार अं-
गं भ्रम्यौ सूर सीकं॥ भ्रम्यौ कंगलं अंग जंगं धुकायौ॥

अचेतं हयं तें धरा मूरछायो ॥ लख्यो चंद वरदाय राजा
धिराजं ॥ गुरू मंत्र कीनो विरुद्धं समाजं ॥ जगी मूर्छा
चाहु आनं जहां हीं ॥ गयो रोस है ब्रह्म जीतं तहांहीं ॥ ल-
ये वान कंमान हत्थं समत्थं ॥ दयो खैंचि तीरं चंदेलं सु
मत्थं ॥ लई खैंचि तेगं सिरं वार कीनो ॥ पस्यौ ऊदलं खे-
त धरनी नवीनो ॥ भजी फौज चंदेल की सर्वसत्थं ॥ उ-
ठ्यो तास में आल्ह वीरं समत्थं ॥ भयो चेत आल्हा इते
अन्न ताई ॥ लिये खर्ग हत्थं मिले वीच आई ॥ हनी आ-
ल्ह तेगं इते अन्न तायं ॥ गिस्यो वीर धुकि कें सु धरनी ध-
रायं ॥ करी पैज आल्हा चलो राज सुक्कं ॥ धरो स्वामि धर्मे
लियं सूर सुक्कं ॥ पृथी राज धरनी अचेतं परायं ॥ अगा-
री कयं मास ठाढ्यो रिसायं ॥ इते आल्ह धाये किये रो-
स रुक्कं ॥ उतै दाहिमा तेग दीनी स सुक्कं ॥ दई आल्ह के
धाय कंधं खुलायो ॥ दई आल्ह तेगं सु धरनी परायो ॥
कियो ध्यान गोरिख सु विद्या पसारी ॥ प्रयोगे रहे सूरसा
मंत भारी ॥ गुरू चंद वर दाय आल्हं धरायो ॥ तुलायं स-
रा और हस्ती फिरायो ॥ चली आल विद्या अनेकं उपाई ॥
गुरू चंद आगे सुजानं न पाई ॥ भई स्वर्ग वानी अनंदं
उपाई ॥ अहो भट्ट गुर राय जीते न जाई ॥ इते मैं गुरू गो-
रिखं आप आये ॥ अगारी करारं किये जानि पाये ॥ भई स्व-
र्ग वानी अनंदं उपाई ॥ अहो भट्ट गुरू राय जीते न जाई ॥
तवै गोरिखं आल्ह सों बैन भाखे ॥ रहो धर्म पै कर्म विद्या भि-
लाखे ॥ चौपाई ॥ भये मूरछा सव वर दाई ॥ गोरख कीव सुधा
फैलाई ॥ वोले गोरख सुनें रे भाई ॥ ब्राह्मन भाटन जीते जा-
ई ॥ संभरि छांड़ि जोग पथ लीजे ॥ काया कीजे अमर सु की

कै॥ फिरि यौं आल संभर तजि सूरे॥ गोरिख नेम नदी
ये पूरे॥ दल अमर कर वन को धायि॥ छांड़ भोग योग
मन लाये॥ जंग सो छोड़ि योग रंग माहीं॥ सकल काम
नाम नते नाहीं॥ दो॰॥ आल्ह चले तजि संभरि कों छांड़ि भो-
ग को बास॥ गोरख संगी हुय चले किये निरंजन ध्यास
॥ छप्पै॥ लोह लागि चहुं आन पेर धरनी सुर छादय॥
गिद्धिनि वैठी आय चोंचि चाहत दृग लाइय॥ देख्यो संझि-
म राय नृपति पंखनि दृग गच्छन॥ अपने तन को मा-
स काटि दीयो भष पच्छन॥ उड़ि गई मास लै गगन कों
चाहुं आन दृग छंडतव॥ धनि धन्य संझिमा राय को
संत सबै भ्रम सिज्जियव॥ दोहा॥ गिद्धिनि कों फल मा-
स दियो नृप कै नैन बचाय॥ देह सहित वैकुंठ को पहुं-
चे संझिम राय॥ छप्पै॥ चामंड राय चलाय जाय कालिं-
जर बैठिव॥ दरवाजे करि वंद राज गढ़ भीतर पैठिव॥ पा-
छे लखि दाहिमा गयो धाय लरन सूरह॥ पकरि लिये
परिमाल लूटि लै चले हजूरह॥ परिहार संग साथी स-
हित कर बिशाष रण रिल्लियव॥ तिसरे दिवस मध्यान
धरि चहुं आन तं मिल्लियव॥ छंद पद्धरी॥ चामंड सी-
ति पग माल लाय परिहार साथ सब ही सिपाह॥ भंयेघ-
कियतिलक पग पटक भूमि॥ लीनं सुनं जेकं डासुभू-
मि॥ लीनं म लूटि अनेक दाम॥ अनेक वाजि अनेक
गाम॥ अनेक पील दीनं दिषान॥ अनेक शस्त्र अ-
नेक कमान॥ भूषण अनेक नग दिन लोल॥ अनेक
वसन लीनं अमोल॥ अनेक थान अनेक तोप॥ अने-
क रथ जांन लिये गोप॥ पंचास कोर रोकंत दाम॥ पंचा-

सक्कोर पाषान थाम ॥ मुक्का सु वासभूषन सजोर ॥ पं-
चास क्कोर को श्रोर जोर ॥ हाथी पचास गाजंत मत्त ॥
घोड़ा हजार इक्कीस हस्त ॥ कर दासु तीनि हज्जार
लीन ॥ पाल की तीस सुंदर नवीन ॥ रथ साठ सात घुरवह
लसंग ॥ खाटक अनेक वाटक प्रसंग ॥ सत कोटि दर्वि क-
हुं नहिं संभार ॥ चामंड जीति दाहिमा सार ॥ परि माल
माल सब संग सूर ॥ पृथी राज जाय पहुंचे हजूर ॥ की-
नी प्रणाम चहुं आन काज ॥ लीनो सु पकरि चंदेल राज ।
सब लूट माल कागद बताय ॥ चंदेल राय कोलि मिला-
य ॥ चहुं आन राय के पारि पाय ॥ उन पकरि वांहउर-
सों लगाय ॥ बुल्लाय दाहिमा हुकम कीन ॥ घायल न ढ्ढ-
ढि लावो सजीन ॥ कैमास राउ आयसु प्रमानि ॥ देख-
त खेत आरंत मानि ॥ सब देख सूर सामंत वीर ॥ जेस-
जी सिम्भाये घाव धीर ॥ जिन के सुदेह छुटि गये मान ॥
तिन की सु काज किरया समान ॥ सब सूर मेघ डंवर
निहार ॥ घुर वहल रयनि में चढ़ि विचार ॥ जखमी अ-
नेक घायल जितेक ॥ जिन की जु करत सेवा अनेक ॥ कैमा-
स कहं पज्जून जेत ॥ भौंहा चंदेल चामंड चेत ॥ लखव-
न बे घल सारंग सूर ॥ अचले सचंद पुंडीर पूर ॥ गोइंद
राय गह लोत साज ॥ नवलेस श्रोर बिंकरा राज ॥ हंवीर
वीरगं भीर पाय ॥ विल हना सूर हाहुली राय ॥ धामर सुध-
रि नर सिंह सार ॥ पाल्हन पमार खेता खगार ॥ सामंत सूर
जे नाम लीन ॥ जेरहे सूर सारन सजीन ॥ जितं मेक सूर आ-
ये सु काम ॥ सुनिये वराज तिनके सु नाम ॥ संकिमा राय-
परि हार पीप ॥ निंडुर हराय मार बल समीप ॥ अता ताय-

रोक चारा नरेस॥ वीर सिंह वीर चामंड सुदेस॥ हरियं
द मलय सी रूप राज॥ खीची सुरेख तारेख साज॥ पूरण
सु मल्ल सुरखी वसंत॥ केतक और जिनमें अनंत॥ स-
त्रह हजार धरपरी फौज॥ हज्जार तीन घायल सचौज-
जेरहे सूर तिन कोइ नास॥ धन धाम तुरी रथ करी गा
म॥ जेपरे सूर रन करि हुलास॥ तिन के सुतादि तिय रा-
ख पास॥ अनेक लूट कों माल सांठि॥ सव दियो राज ति-
न कौ सु वांठि॥ सव गास परगंन वांटि दीन॥ तरहे सूर सा
रनिस जीन॥ परमाल राज को छांडि दीन॥ तुम रहो जा
य कनवज कुलीन॥ दिल्ली जो चले रण विजय पाय॥
सब सूर वीर देश निवताय॥ दोहा॥ काछु वांह पूज्जून को
राखि महोवे थान॥ दंड छांडि परिमाल को कीनो नृपति
पयान॥ चाहुं आन दिल्ली नगर कीनो नृपति प्रवेस॥ घ-
र घर मंगल गावहीं आयो जीति नरेस॥ संभरि राय कु
मार को वोलि हजूर नरेस॥ हय गय मनि मानिक वक-
स अर्ध आसन अर्ध देस॥ और सूर सामंत सब घरहु
नाम पहुंचाय॥ हय प्रसन्न वैठो तखत सो वह संभरिरा
य॥ याको सुनि कछु कीजियं यथा शक्ति सनमान॥ कव-
हुं हारन आवही पांच पचास प्रमान॥ जीन देय कछु
सुनि विथा होय न कवहूं जीत॥ वहु कलेश पीड़ा वढ़े
रेंन चंद सुगीत॥ आल्ह खंड पूरण भयो कह्यो चंद-
कविराय॥ पढ़े सुने सीखे रहै ताकों सुभट सहाय॥

इति श्री कवि चंद विरचित आल्ह खंडः
संपूर्णः संवत १९३१